अक्लान्त कौरव

महाश्वेता देवी की राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित अन्य कृतियाँ

चोट्टि मुंडा और उसका तीर

घहराती घटाएँ

1084वें की माँ

जंगल के दावेदार

अग्निगर्भ

भटकाव

अक्लान्त कौरव

महाश्वेता देवी

अनुवादक
कंचन कुमार



राधाकृष्ण

अक्लान्त कौरव

1980 का सूखा ज़ोरों से हावी होता कि जागुला में बारिश शुरू हो गयी। जागुला अभी शांत है, एकदम शांत। यह शांति अग्निगर्भी है या वाकई वास्तविक, पता नहीं चलता।

जागुला आने से पहले द्वैपायन सरकार ने सब-कुछ पता लगा लिया था। हालांकि वह एक प्रौढ़ रिसर्चस्कॉलर है और वाम राजनीति के दक्षिणी छोर का स्थायी निवासी है, फिर भी जाने कौन लुटेरे उसके मस्तिष्क-कोष को खोदकर सब-कुछ उठा ले गये और उसके अनदेखे में एक नियंत्रक मशीन उसके चिन्तन-कोष में बैठा गये हैं। फलस्वरूप बाहर से चेहरा पहले जैसा ही है, मगर दिमाग़ में अजीब-अजीब-से ख़याल मँडराते रहते हैं। लुटेरे लोग इस मुल्क के बहुतेरे मस्तिष्कों को आजकल नियंत्रित कर रहे हैं। फलस्वरूप नियंत्रित इन्सान मुल्क और मुल्क के इन्सान के लिए नुक़सानदेह बात सोचते हैं, काम करते हैं और उसके बाद भी अपने को ईमानदार तथा विवेकशील समझते हैं। सभी कुछ लुटेरों के मन-मुताबिक होता है। लुटेरों का एकमात्र मक़सद है शोषितों के खेमे से हिंसात्मक तथा सशस्त्र प्रतिवाद फिर कहीं न दिखायी दे, ताकि हिंसात्मक तथा सशस्त्र होने का एकमात्र अधिकार शासकों के पास ही रहे।

द्वैपायन सरकार की उम्र साठ साल है। चेहरा सुन्दर, बुद्धि तेज। अपने पीछे वह एक रक्ताक्त अतीत छोड़ आया है और उसे ही मिटाने के लिए उसने अब अहिंसा, साम्यवाद, समाजवाद जैसे पचरंगी प्रोग्रामों की दीक्षा ली है।

शोध के सिलसिले में ही उसका जागुला में आगमन हुआ है। अचानक। दरअसल अगर मातो डोम भूत के डर से न डरता तो धर्मपूजा के मेले के हुल्लड़ में द्वैपायन के अचानक आगमन पर किसी का ध्यान ही न जाता।

मातो रिक्शा तेज़ी से चलाता है और आदत के मुताविक़ कभी भी रिक्शा की वत्ती नहीं जलाता। लालमोहन कांस्टेवल ने थाने के सामने उसे रोका और वग़ैर वत्ती के रिक्शा चलाने के लिए 'साले को वहुत गर्मी चढ़ी है' कहकर उसने उसकी जेव पर झपट्टा मारने की कोशिश की। पैसे के वदले धर्मठाकुर के भार-जंतर पाकर लालमोहन चिढ़कर चिल्लाने लगा। झगड़े को रोकने के लिए देवकी मिसिर ने वाहर निकल कर दोनों को फटकारा तो मातो कहने लगा, "भूत देखकर भागा, इसीलिए वत्ती जलाने की वात याद नहीं रही।"

"भूत ?"

"हाँ, भूत।"

"कहाँ ?"

"काली वावू के दफ़्तर में।"

"आँ ! क्या कहता है ?"

"वाव्रू, कालीवावू तो कव के मर गये। उनके अख़वार का दफ़्तर भी वन्द रहता है। वहाँ जाकर देखा, वह वैठे हैं वत्ती जलाकर। देखकर डर गया।"

अव देवकी मिसिर वहुत ही चिढ़ गया। कहने लगा, "मर गया ? काली वाव्रू ?"

"हाँ, वावू !"

"साला, थाने की दीवार पर उसकी तसवीर क्यों टँगी रहती है ? लापता हैं, नहीं जानते ? मर गया !"

शराव्र के नशे और प्रेत के डर से वेवस मातो ने कहा, "वह ज़िन्दा नहीं हैं, मर गये हैं।" वह रो पड़ा, "भले आदमी को मार दिया, वावू ! उसके परिवार को पातकी वना डाला।"

"क्या कह रहा है तू ?"

"सभी को पता है। बसाई टुडु को खत्म करने के लिए पुलिस चरसा के जंगल में घुसी थी। बाप रे मिलेट्री ! काली बाबू भी वहाँ थे। बसाई को न पाकर उसे ही मारकर जंगल में डाल दिया। बेतुल काउरा वहाँ से हड्डियाँ को चद्दर में बाँधकर ला रहा था, उसे भी मार डाला। सारी कहानी हाट-बाजार में फैल गयी। तुमने और थाना बाबू ने उस समय कितनी दौड़धूप की थी। उसके बाद सामन्त बाबू ने जाने क्या सलाह दी कि काली बाबू की तसवीर खोलकर टाँग दी गयी कि काली बाबू अभी भी जिन्दा है, लापता हैं। उनकी पत्नी को भी यही बताया था। इसीलिए तो वह सिन्दूर नहीं पोंछती, लोहा नहीं उतारती। काली बाबू को तुम लोगों ने मार डाला है न ?"

"शराब पीकर तू पागल हो गया है ? ऐसी बात कहने पर तुझे भी हवालात में डाल दिया जायेगा।"

"किरिया-करम नहीं हुआ, इसीलिए मरा हुआ आदमी घर पर आकर बैठा है। मैंने देखा है।"

"गलती की, मेरे बाप !"

देवकी मिसिर ने बहुत ही परेशानी में मातो को बाप कह डाला।

1977 के बसाई टुडु-ऑपरेशन में चरसा के जंगल में पुलिस ने काली साँतरा को मारकर उसी जंगल में लाश फेंक दी थी। महीने-भर बाद बेतुल काउरा उसकी हड्डी, चश्मा तथा सड़ी-गली चप्पल निकाल, चद्दर में बाँधकर थाने में ले आया और थाने में उसे जमा करके काली की मौत को लेकर बहुत ही रोया-गाया। फलस्वरूप उसे भी मरना पड़ा। यह तमाम बातें सत्य हैं और कोई भी घटना सामन्त या एस० आई० या देवकी से छिपी नहीं है। इसीलिए काली साँतरा की तसवीर टाँगकर उसे 'लापता' घोषित किया गया है। काली की पत्नी गिनिमाला को सधवा के लिबास में रहने को कहा गया। देवकी अब इस बारे में बातचीत नहीं करना चाहता। इसीलिए उसने मातो से कहा, "घर जा, बाप ! यह तो कोई बाबू है। किसी काम से आया है। बैठकर काली बाबू का अखबार देख रहा है, इसी से तू डर गया। काली बाबू का समाचार अगर दे सका तो बख्शीस मिलेगी।"

मातो आँखें पोंछता है। फिर सिर हिलाकर कहने लगा, "नहीं बाबू, वह काम अब नहीं करता। बाबा अब मेरे साथ बातचीत करता है। बाबा ने मना किया है। थाने में खबर भी नहीं करेंगे, पैसा भी नहीं लेंगे।"

"रतन क्या कहता है?"

"कहता है, वह गुहखोरी का काम है। तुझे रुपया भी नहीं मिला और बस में तेरी नौकरी भी नहीं लगी...। और मत जाना।"

"तब तो अच्छी बात है। घर जा। रतन कहाँ है?"

"घर पर।"

"अब क्या करता है?"

"मैं क्या जानूं?"

मातो चला गया। देवकी मिसिर ने सिर हिलाया। छोटी जात का रुतबा बहुत बढ़ गया है। मातो खोचर[1] का काम नहीं करना चाहता। कभी करता था। रतन, उसका बाप जरूर उसे सलाह दे रहा है।

लालमोहन कांस्टेबल देवकी के साथ कमरे में आकर बैठ गया। उसके बाद कहने लगा, "मेले में बहुत बात बढ़ी, मिसिरजी। धरमराज के मेले में हम लोग उगाही तो करते ही हैं। इस बार इन्दर बाबू ने सबसे मना किया है, किसी ने कुछ नहीं दिया। इन्दर बाबू क्या पार्टी का काम नहीं करता?"

"कौन? इन्द्र प्रामाणिक? वह यहाँ?"

"हाँ, मिसिरजी!"

देवकी मिसिरजी ने कहा, "अब सब समझ गया। तू जा।" मन-ही-मन उसे खतरे का अन्देशा मिला। 'इन्द्र प्रामाणिक' नाम बहुत ही परेशानी में डालने वाला है। राजनीति के खेल में खरीद-फ़रोख्त, भाग-बँटवारा हो जाने के बाद भी इन्द्र प्रामाणिक जैसा युवक सभी को परेशानी में डालने वाला है। पार्टी को भी। पश्चिमी बंगाल में हर जगह जैसा चल रहा है, जागुला में भी वैसा ही है। जागुला में जो कुछ हुआ है, उसे अच्छी तरह समझने पर सारे पश्चिमी बंगाल के मानचित्र को मोटे तौर पर समझा जा

1. खुफ़ियागिरी।

सकेगा। इस भयंकर रूप में जटिल या निहायत ही सरल मानचित्र में पश्चिमी बंगाल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी के लिए इन्द्र प्रामाणिक जैसा ईमानदार और लड़ाकू कैडर एक जंजाल है। स्थानीय जन-प्रतिनिधि सामन्त के लिए भी। देवकी मिसिर के लिए तो है ही। सामन्त और सामन्तनुमा पार्टी के लोगों के लिए आज इन्द्र प्रामाणिक की अपेक्षा देवकी मिसिर अधिक जरूरी है, अधिक भरोसे के काबिल है। विश्वसनीयता के क्षेत्र में देवकी या एम० आई० निश्चय ही इन्द्र के पाँव के नाखून के लायक नहीं हैं। मगर पार्टी-नेतृत्व के लिए आज इन्द्र जैसे कैडरों की अपेक्षा थाना-पुलिस अधिक जरूरी है। पुलिस को खुश करने की बात को लेकर ही इन्द्र और सामन्त में बड़ा विनडावाद मचा। सामन्त ने उस दिन जल-भुन कर कहा, "काली सॉतरा गया—तुम आये। विवेक की भूमिका देख रहा हूँ, अब तुम्हारी बारी है।"

"काली-दा का नाम आप जुबान पर न लायें।"

"क्यों, उस योग्य नहीं हूँ?"

"नहीं। पार्टी की इमेज आप लोगों की दुआ से बहुत पहले से ही सड़ने लगी है। इसीलिए काली-दा को विवेक का बोझ ढोना पड़ता था। मुझे आप काली-दा के बराबर मत रखिये। मैं उनके पैर की धूल के बराबर भी नहीं हूँ।"

"ज्यादा उछल-कूद मत करो।"

"पार्टी के लड़के को पुलिस ने नहीं मारा? मिसिर ने सिर्फ नक्सलों को मारा था? धवहत्तर में कितने लड़के मरे थे? उसी पुलिस को मदद दे रहे हैं। उसे माई-बाप-भाई कह रहे हैं, मामला क्या है?"

"काली उस तरह का था। तुम, देख रहा हूँ...!"

"काली 'था' कह रहे हैं, पहले कहा था 'काली गया'। काली-दा का आप लोगों ने क्या किया, सामन्त-दा? ऐसा क्या किया आपने कि उसे लेकर सभी बातें कर रहे हैं? क्या वह सच है? किसके निर्णय से सामन्त-दा, किसके निर्णय से?"

सामन्त उठकर चला गया था। परेशानी बहुत बढ़ रही है। काली सॉतरा लापता है, उसे ढूँढा जा रहा है, इस पर किसी को भी विश्वास

नहीं। इन्द्र को भी विश्वास नहीं है। -बहुत ही गुस्से में आकर सामन्त ने काली के लड़के अनिर्वाण को बुला भेजा था और अपने विख्यात गंभीर स्वर में कहा था, "मामला क्या है?"

"क्यों, सामन्त चाचा?"

"बाप लापता हो गया है, इस आशय का बीच-बीच में अखबार में विज्ञापन तो दे सकते हो। यह काम क्या मेरा है?"

काली साँतरा के प्रति उसके लड़के को कोई श्रद्धा नहीं थी। फिर भी काली के मामले में तमाम बाज़ारू समाचार उसे भी पता हैं। उसने कहा, "माँ ने मना किया है। मुझे भी नहीं लगता कि इससे कोई फ़ायदा होगा।"

"तुम्हारी पत्नी ने कलकत्ते में नौकरी कर ली है?"

"हाँ।"

अनिर्वाण ने कुछ हिचकिचाते हुए आगे कहा, "माँ ने यहाँ का मकान, ज़मीन सब-कुछ बेच देने के लिए कहा है।"

"क्यों?"

"कलकत्ता जाना है।"

सामन्त तुरन्त ताड़ गया कि काली किस तरह मारा गया है, काली की पत्नी और लड़के को भलीभाँति पता है। वे लोग चले जा रहे हैं, यानी डर गये हैं।

"जो तबीयत में आये करो। इन्द्र...इन्द्र ने कुछ कहा है?"

अनिर्वाण अचानक सामन्त को हक्काबक्का करते हुए रो पड़ा। फिर आँख से आँसू पोंछता हुआ बोला, "पिताजी की उपेक्षा करता रहा। उनकी क़ीमत नहीं जानी, ऐसा कहकर लोग मेरी छी-छी करते हैं। माँ ने माँग में सिन्दूर भरना नहीं छोड़ा, इसीलिए भी लोग कितनी बातें करते हैं। सामाजिक निमंत्रण पर भी नहीं बुलाते। अगर किसी तरह इस बारे में उस समय सरकारी रिपोर्ट दर्ज करा देते! सभी लोग कहते हैं कि पिताजी को मार डाला है। आप लोग कहते हैं कि वे लापता हो गये हैं। हम लोग क्या करें? बेतुल को भी...बेतुल को उनका चश्मा मिला था, वह तो प्रमाण था। वह अगर आप हमें दे देते तो हम उस समय रिपोर्ट दर्ज करा

देते। तब हम लोगों की इस तरह की बेइज्जती तो नहीं होती।"

"तुम समझ नहीं रहे हो...।"

"माँ कलकत्ता जाकर गेरुआ धारण करेगी। बारह साल बाद सफेद वस्त्र पहनेगी। हम लोग जा रहे हैं, सामन्त चाचा।"

"काली नहीं है, प्रमाण पाये बगैर ही मान लोगे कि वह नहीं है? ऐसा भला कैसे होगा?"

"लापता कहा न? इसी पर सभी ने अविश्वास किया। बाबूजी जागुला छोड़कर कहीं नहीं जाते थे, घर और 'जिला वार्ता' के दफ्तर के अलावा। किसी का कभी कोई नुकसान नहीं किया...।"

अनिर्वाण चला जाता है। सामन्त ने चिल्लाकर कहा, "अभी तो बहुत 'बाबूजी बाबूजी' कह रहे हो। घर में उसकी कितनी बेकद्री करते थे, सभी को पता है।"

अनिर्वाण ने और कुछ भी नहीं कहा।

काली का मामला बहुत उलझ गया है, यह सामन्त भी समझता है। अब काली सांतरा की हत्या के इतने दिनों बाद सरकारी तौर पर 'काली मर गया है'—यह कैसे कहा जाये? पहले यह तमाम बातें मन में क्यों नहीं खटकीं? अनिर्वाण के परिवार वाले कलकत्ता जायेंगे, जाने दो। अनिर्वाण को अच्छी तरह रगड़ा देना पड़ेगा ताकि बाप की मौत को लेकर ऐसी-वैसी बात न करे। कलकत्ता जागुला तो नहीं। शासक-दल के वरिष्ठ निर्वाचित नेता के तौर पर सामन्त जागुला में सभी को दबाकर रख सकते हैं। कलकत्ता में वह संभव नहीं है। जागुला के राजनीतिक विरोधियों से सामन्त नहीं डरता। गुप्त समझौते में उन्होंने जागुला का बँटवारा उसके नाम कर दिया है। वास्तव में, शहर अभी उनके गुंडे-मस्तान-ठेकेदार-व्यापारियों के कब्जे में है। इस शासन में सभी खुश हैं। मनमाना मुनाफा लूटा जा रहा है, मनमानी गुंडागर्दी चल रही है, मनमानी कीमतें बढ़ायी जा रही हैं, कालाबाजारी जोरों पर है। इसके बाद भी इस शासन का पतन कौन चाहेगा, क्यों चाहेगा—सामन्त सोच भी नहीं पाता।

प्रतिपक्ष भरोसे का है।

इन्द्र भरोसे का नहीं है।

अनिर्वाण भागेगा। अनिर्वाण चुप रहेगा। काली का समाचार सही नहीं है, इन्द्र ऐसा शक क्यों कर रहा है?

यहाँ बार-बार न आये तो अभागा बदमाश इन्द्र ऐसा झमेला खड़ा कर देता है कि सामन्त को कलकत्ता छोड़ जागुला आना पड़ता है। वोट लेने के लिए तो सामन्त सभी जगह जायेगा ही। सूखे के समय, बाढ़ के समय भी इन्द्र ने उन्हें यहाँ आने को मजबूर किया।

कम्बख़्त को 'काली साँतरा' बना देना भी संभव नहीं है। जनता में उसकी गहरी पैठ है।

सामन्त इसी समस्या से पीड़ित था कि तभी ऊपर से फ़रमान आया कि द्वैपायन सरकार शोध के सिलसिले में आ रहे हैं। किसी विश्वसनीय पार्टी-कैडर के साथ उन्हें गाँव-गाँव भेजना होगा। कैडर विश्वसनीय होना चाहिए।

सामन्त उसी समय इन्द्र प्रामाणिक का वारा-न्यारा हुआ समझकर ख़ुश हुआ।

इन्द्र बहुत ही गड़बड़ी मचा रहा है।

द्वैपायन सरकार कौन है?

द्वैपायन सरकार की उम्र अभी साठ की है। चाहे ऊपर से देखने पर ऐसा न लगे। छरहरा, सख़्त बदन। चेहरा आमफ़हम। रंग साफ़। आँखें चमकदार। ज़माने से कम्युनिस्ट पार्टी कर रहा है। पार्टी बँटने के बाद वह दाहिनी ओर रह गया। पार्टी की हाल की टूट-फूट में द्वैपायन ने इस दक्षिणपंथी वामपार्टी के दक्षिणतम छोर पर मोर्चा जमाने का निर्णय लिया है। ऐसा होगा, यह उसे पता था—क्योंकि दिल्ली के खूँटे की ताक़त पर ही वह उछलता है।

जो विदेशी ताक़त लम्बे अरसे से भारत सरकार के साग्रह सहयोग से इस मुल्क में उपनिवेश स्थापित कर रही है, वह ताक़त समझौते की आड़ में कम क़ीमत में सिर्फ़ भारतीय श्रम और कच्चे माल से बनी चीज़ ही नहीं ख़रीदती, बल्कि भारतीय दिमाग़ों में भी उपनिवेश स्थापित करती है। उससे सहायता-प्राप्त शोध-संस्थानों में देश के तरुण बुद्धिजीवियों के दल शामिल होते हैं। अनगिनत रुपये। काफ़ी समय। शोध के विषय भी अच्छे-

अच्छे। जैसे—आदिवासी, गरीब किसान, खेत मजदूर, कलाप्रेमी, ग्रामीण काश्तकार, लोक-कलाकारों का जीवन और कार्य। द्विपा की राजनीति में इनकी गहरी दिलचस्पी है। मगर चूँकि मगज में उपनिवेश की खूँटी गड़ी है, इसीलिए रिसर्च की थीसिस तथा निबन्धों में संग्रामी भारत, शोषित भारत, मेहनतकश भारत के प्रति हमदर्दी के घड़ियाली आँसुओं के पीछे मकसद दूसरा रहता है। भारी-भरकम बात, आँकड़ों की सारणी आदि का जोड़-घटा खतरनाक है। इस जोड़-घटा का बाणीरूप ऐसा है, 'हे भारतीय इंसान, कभी भी अपना अधिकार माँगने के लिए हथियार मत उठाना। कभी भी वर्णाश्रम पर आधारित प्राचीन समाज-व्यवस्था को उलटने की चाह न करना। जोतदार के हाथ में बेनामी जमीन रहने दो। कृषि में तुम पिछड़े हुए हो। उन्नत तरीके से खेती नहीं कर रहे हो, इसीलिए पिछड़े हो। उद्योगपति मुनाफा लूटते जायें। मजदूरों के लिए उन्नत उत्पादन यंत्र चाहिए।' ऐसी तमाम थीसिसों में भारत के कृषि तथा उद्योग क्षेत्रों में, जहाँ अभी लाखों-करोड़ों इंसान दोनों हाथों से मेहनत करके किसी तरह जीवित रहते हैं, उन तमाम क्षेत्रों में यंत्र पर निर्भरता लाने की बात कही जाती है। इसके फलस्वरूप लाखों-करोड़ों भूखे लोग बेकार हो जायेंगे, यह नहीं कहा जाता। इस भारत में, भारतीय दिमाग को खरीदकर उसमें इस तरह के चिन्तन का बीज दूसरी विदेशी ताकत भी बोती है। पहले दल की ताकत बहुत ज्यादा है। वे लोग काफी चालाकी से काम करते हैं—चुपचाप। बहुत सालों की कोशिश से शिक्षा तथा संस्कृति की दुनिया में उनके खरीदे शेयर ही अधिक हैं। देश-भर में योजनाओं, शिक्षा और संस्कृति की दुनिया में, सभी जगह उन्हीं के लोग हैं। इन तमाम लोगों के पौ बारह है। प्रतिद्वन्द्वी खेमे के पीले रुपये भी वे लेते हैं। वे अमरीका की तरफ भी दौड़ते हैं। एक ही व्यक्ति, एक ही संस्था या एक ही प्रकाशन या एक ही पत्र लाल-पीले रुपये एक साथ पीटता है, ऐसे उदाहरण भी आज बहुत हैं।

द्वैपायन इन तमाम बुद्धिजीवियों में भी कुलीन है। हमेशा से कम्युनिस्ट है। बीच-बीच में आदिवासियों के बारे में भी निबंध फेंकता है। पता चला है कि निबंध लिखने के लिए यूरोप के विभिन्न देश उसे रुपये

देते हैं। ऐसी वहुत-सी वातें सुविज्ञ जनता को पता नहीं हैं, इसीलिए किसी ने पूछा नहीं। यह तमाम रुपये वाक़ई कौन दे रहा है, किसी ने सवाल नहीं उठाया। इटली, वेल्जियम या हॉलैंड या पश्चिमी जर्मनी या नार्वे या स्वीडन भारत के उराँव, मिकिर, हो, नागेशिया, कोलता के वारे में निवंध लिखाने के लिए इतने उत्साहित क्यों हैं?

द्वैपायन संथालों से, एक ख़ास ढँग के संथालों से, साक्षात्कार करने के लिए जागुला आया है। उद्देश्य दूर तक फैला हुआ है। 1968 और 1969 में वह जब पश्चिमी वंगाल आया था, उस समय कलकत्ता के वाहर एक विश्वविद्यालय में वैठकर अगाध विदेशी रुपयों से संथाल ग्रामीण समाज में व्याह तथा विवाहित जीवन के वारे में, व्यक्ति तथा समाज के दृष्टिकोण के वारे में एक गूढ़ समीक्षा चला रहा था। उसका प्रतिपाद्य विषय था, संथाल समाज में व्याह की अव वह पवित्रता नहीं रही। मगर समय ख़राव था। संथालों के गाँव-गाँव में उस समय दूसरा ही स्पन्दन चल रहा था, मादलों की ध्वनि में दूसरी ही धुन थी। द्वैपायन संथालों का एक व्याह देखने गये। उत्सव में नाच-गाना और लड़ाकू मिजाज देखकर उसे अचंभा हुआ। उसे अचंभे में डालते हुए एक वूढ़े संथाल ने कहा, "फ़लाने जोतदार का सिर हमने उड़ा दिया है, इसीलिए हम ख़ुशियाँ मना रहे हैं।"

द्वैपायन जल्दी से भाग आया। लौटते ही उसे एक गुमनाम चिट्ठी मिली। संथाल समाज के वारे में जो कुत्सित प्रचार वह चला रहा है, उसे वन्द करके तुरंत यहाँ से चला जाये वरना उसका वंटाधार कर दिया जायेगा।

विश्वविद्यालय अधिकारियों ने भरोसा दिलाया, मगर द्वैपायन को भरोसा नहीं हुआ। वह यहाँ से कन्नी काट कर अपने राजनीतिक दल के पत्र को मदद देने के लिए दिल्ली [illegible] गया। वीरभूम के नक्सलों का दोस्त वनने का स्वाँग रचकर [illegible] दमन के ख़िलाफ़ काफ़ी हल्ला मचाया। संथाल समाज [illegible] स्त-व्यस्त है, उनका समाज मूल्यवोधहीन [illegible]

इतने [illegible] के वाद [illegible]

है। ख़ास उद्देश्य से। इस बार उसका थीसिस है—वह प्रमाणित करेगा कि आदिवासियों में संथाल लोग सबसे कायर हैं, कम लड़ाकू हैं, व्यवस्था उन्हें बहुत आसानी से तथा सस्ते में खरीद सकती है। इनकी तुलना में मुंडा या नागा या दूसरी आदिवासी उपजातियाँ बहुत ज्यादा लड़ाकू हैं।

बाघ के ऊपर टाग रहता है, तिमि के ऊपर तिमिंगिल, घोड़े के ऊपर घोड़ाह। द्वैपायन के ऊपर रहता है, सानी वज्रपाणि। पुराने साम्यवादी हैं। सफ़ेद बाल, मजबूत काठी। लम्बे अर्से से दिल्ली में एक मँहगी संस्था के संचालक हैं। उनका घर, दफ़्तर तथा गाड़ी सभी वातानुकूलित हैं। चौदह साल हो गये कि मोटे शीशे की दीवार के इस पार आकर सानी ने अपने बदन पर धूप-बारिश नहीं झेली। सूरज का उगना और डूबना, चाँद का उदय-अस्त, आँधी-बारिश, सूखा, जंगल, पेड़-पौधे, बच्चों की हँसी, सुनहली गेहूँ की बालियाँ ढोते हुए उत्तर प्रदेश का किसान, पश्चिमी बंगाल की भरी बारिश में आऊश धान की शोभा, खानों में मजदूर, जली हुई झोंपड़ी के सामने वेदना से मूक सद्यविधवा हरिजन रमणी जैसे जरूरी दृश्य सानी वज्रपाणि फ़िल्मों में ही देख लेते हैं। अखबार पढ़ने की उन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती। टेलिविजन का समाचार ही उनका भरोसा है। रंगीन टेलिविजन भारत की जनता की मौजूदा आर्थिक हालत में उनके लिए सबसे जरूरी चीज है। क्योंकि, इस विषय पर उन्होंने एक समीक्षा की है।

सानी वज्रपाणि द्वैपायन का मस्तिष्क नियन्त्रित करता है। सानी द्वारा संचालित संस्था के मातहत और भी अनेक संस्थाएँ हैं। हर संस्था के बारे में सानी का खुला आदेश है, 'संस्था चलाने के काम में हमेशा उग्र वामपंथ के समर्थक बुद्धिजीवी लटकों को लेना है। खुली मदद देकर राजधानी में निष्क्रिय बिठाकर, आलतू-फ़ालतू काम में पाँच साल तक फँसाये रखो, उनकी उग्रप्लाक मानसिकता छँट जायेगी।' द्वैपायन जैसे विश्वसनीय व्यक्ति कभी भी सीधे-सीधे इन तमाम संस्थाओं में नहीं रहते। वे सब इधर-उधर देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में, कॉलेजों में, लिखने-पढ़ने की दुनिया में फैले रहते हैं और अजीबो-गरीब फ़ाउंडेशनों की मदद से विचित्र किस्म के विषयों पर रिसर्च करते हैं।

सानी ने द्वैपायन से कहा था, "देखा ?"

"क्या देखूं ?"

"पश्चिमी बंगाल सरकार धूमधाम से संथाल विद्रोह की एक सौ पच्चीसवीं वर्षगाँठ मना रही है, तरह-तरह से संथालों को मदद दे रही है।"

"देखा है।"

"यही तो मौक़ा है।"

"किस बात का ?"

"यह सब कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं। संथाल लाखों-लाख हैं। सरकारी मदद से चन्द लोगों को फ़ायदा पहुँचेगा। बाक़ी सभी जिस अँधेरे में पड़े हैं, उसी अँधेरे में पड़े रहेंगे। मगर यही मौक़ा है।"

"किस बात का, सानी ?"

"एक बात मुझे लग रही है। संथालों को ऊपर उठाने में पश्चिमी बंगाल की दूसरी आदिवासी जातियों की उपेक्षा हो रही है। उन्हें इसके बारे में सचेत करना ज़रूरी है ताकि आदिवासियों में विरोध उठ खड़ा हो। आदिवासी समाजों में एकता है, उसे तोड़ना चाहिए। दूसरे आदिवासियों को समझाना चाहिए, 'देखो, सरकार तुम लोगों के लिए कुछ कर नहीं रही है। जितनी सुविधाएँ हैं, सब संथालों को दे रही है।' यह काम करने के लिए विभिन्न आदिवासी इलाक़ों में क़िस्म-क़िस्म के आदमियों की ज़रूरत है।"

"मैंने पहले इतना नहीं समझा था।"

"कुछ भी हो, पश्चिमी बंगाल राजनीतिक रूप से बहुत ही जागरूक है। वहाँ संथाल लोग वास्तव में एक ताक़त हैं। आज अगर वे स्वाधिकार के बारे में सजग हों, दूसरे आदिवासी समाज उन्हें देख आगे आ सकते हैं। नहीं, नहीं। दुनिया के मजदूर एक हो सकते हैं। भारत के आदिवासियों का एक होना बहुत ही खतरनाक बात होगी।"

"सच।"

"एक बहुत ही अच्छी बात हो रही है। संथालों को नौकरी-चाकरी दी जा रही है। जिन्हें नौकरी दी जा रही है, हम उम्मीद कर सकते हैं कि उनका वर्ग बदलेगा। शिक्षा और नौकरी का मौक़ा पाकर वे लोग वर्ग-

आधार पर दूसरे समाज में चले जायेंगे। अपने समाज की उन्नति की बात नहीं सोचेंगे।"

"अगर सोचें तो?"

"इसका इन्तजाम भी करना पड़ेगा। अरे, कुछ आदिवासी अफसर बनें, मंत्री बनें तो उससे क्या उनके समाज का भला होगा?"

"आपने ठीक कहा है।"

"संथालों में दूसरे आदिवासियों का सम्पर्क बिगाड़ना जरूरी है। यह काम दूसरे लोग करें। तुम दूसरा काम करो।"

"क्या?"

"तुम प्रमाणित करो कि संथाल लोग कतई लड़ाकू नहीं हैं। दूसरे आदिवासी लोग उनसे ज्यादा लड़ाकू हैं। संथाल समाज क्या तमाम आदिवासी समाज में ईमानदारी, निश्छलता तथा लड़ाकू स्वभाव के लिए विशिष्ट है? तुम प्रमाणित करोगे कि ये लोग कमजोर हैं, उनकी रीढ़ की हड्डी नहीं है। उच्चशिक्षा या नौकरी का लोभ दिखाकर उन्हें खरीदा जा सकता है।"

"उससे क्या होगा?"

"फूट डाली जायेगी। भारतीय आदिवासी समाज चूंकि सबसे अधिक पीड़ित और शोषित है, इसीलिए उनमें एका नहीं, फूट चाहिए। खेतिहर जनता का एका भयंकर है। सत्तर के दशक की नसीहत भूल जाने से कैसे चलेगा?"

द्वैपायन के लिए सारी व्यवस्था कर दी गयी। वह चुपचाप अपना काम चलाने लगा। लड़ाकू संथालों के साथ उसका साक्षात्कार इसीलिए जरूरी है। जिस विश्वविद्यालय में वह है, वहाँ के देहाती संथालों में वह जाना नहीं चाहता।

इसी प्रसंग में कलकत्ते में बैठ, एक पत्रकार-मित्र से उसने एक विचित्र कहानी सुनी। जागुला शहर के बगल-बगल के गाँवों में बसाई टुडु नाम का एक संथाल लम्बे अर्से तक प्रशासन के साथ लड़ा है। पाँच बार आमने-सामने की मुठभेड़ में 'बसाई टुडु मृत' घोषित किया गया है।

"पाँच बार?"

"यह तो क़िस्सा-कहानी का मामला हो गया। असल में बाद में पता चला कि पहली बार कोई और संथाल मारा गया था। उसे 'बसाई' कहकर शिनाख़्त किया गया।"

"क्यों ?"

"मुंह लगभग नहीं था। चेहरा तथा काठी में समानता तो थी ही। इसी से ग़लती की शुरुआत हुई। असल में बसाई उस समय भाग गया था। उसके बाद रामेश्वर नाम के एक प्रबल शक्तिमान जोतदार के साथ लड़ते हुए असली बसाई मारा गया। तब तक 'बसाई' उनके योद्धाओं के लिए निहायत जरूरी हो गया था। उसके बाद बाकुली गाँव में एक और संथाल ने 'बसाई टुडु' नाम से नेतृत्व दिया तथा मारा गया। समझे कुछ ? 'बसाई टुडु' नाम इतना महत्वपूर्ण है कि उस नाम को बचाकर चलना पड़ेगा। चौथी बार कदमखुआँ गाँव में एक युवा संथाल ने 'बसाई टुडु' नाम से नेतृत्व दिया और मारा गया। पाँचवी बार पियासोल गाँव के कुख्यात जोतदार को मारते वक़्त एक बीस साल का लड़का 'बसाई टुडु' नाम से नेतृत्व कर रहा था। वह घायल हुआ और जंगल में आकर मरा।"

"उसके बाद ?"

"उसके बाद काफ़ी दिनों से बसाई का नाम सुनायी नहीं पड़ा, हालाँकि अभी हालत भी दूसरी है। काली साँतरा नहीं है। वह रहता तो तुम्हें सब-कुछ बता सकता था।"

"काली साँतरा कौन था ?"

"जागुला का सी०पी०एम० कार्यकर्ता। 'जिलावार्ता' नाम से अख़बार निकालता था। बसाई को जानता था।"

" 'ऑपरेशन बसाई टुडु' के पाँचवे चरण में काली साँतरा छिपकर ख़ुद बसाई को देखने गया था। उसके बाद से उसका कोई अता-पता नहीं है। जहाँ तक लगता है, उसे मार डाला गया। मगर उस बात को सरकारी स्वीकृति नहीं मिली। क्यों नहीं मिली, यह नहीं कह सकता।"

"ताज्जुब की बात है।"

"तुम अचानक लड़ाकू संथाल किसानों को लेकर इतिहास क्यों लिख रहे हो ? या कि कोई दूसरा धन्धा कर रहे हो ! मुझे चकमा दे रहे हो ?

तुम तो भैया, गहरे पानी की मछली हो। क्या करते हो और क्या नहीं करते हो, कुछ पता नहीं। हमेशा विदेश जाते रहते हो। मारकी जाने पर समझते, पर तुम तो हर जगह जाते हो। तुमने राजनीति से खासा कॅरियर बना लिया है। यह पता होता तो राजनीति करता।"

"क्या कहते हो? राजनीति के साथ कॅरियर का भला क्या संबंध? पत्रकार बनकर तुम लोग क्या बुरे हो?"

"राजनीति, यानी तुम लोगों की राजनीति आज कॅरियर है, भैया। वर्कर लोग खटकर मरते हैं और तुम लोग मजे लूटते हो। और पत्रकार के तौर पर? हर अखबार में आँख की पुतली बने दो-एक हीरो-कट पत्रकार रहते हैं। हम सभी ऐरू-गैरू हैं। रुपये-पैसे सबको नहीं मिलते।"

"तो कह रहे हो, जागुला जाऊँ?"

"जाओ न।"

"एम०एल०ए० कौन है?"

"दफ्तर में आओ, बता दूँगा।"

"बसाई टुडु के इस मामले के बारे में कैसे पता चला?'

"यह मत पूछो। मगर पता चल जाता है।"

इसके बाद ही द्वैपायन सरकार जागुला आया। सामन्त के कहने पर रामेश्वर भुईयाँ ने जागुला का 'भुईयाँ भवन' खोल दिया। 'भुईयाँ भवन' के बारे में रामेश्वर ने कहा, "मकान आपका है। जितने दिन जी चाहे, रहिए। मगर फ़ोटुओं को मत हिलाइयेगा।"

गांधी, राजेन्द्रप्रसाद, जवाहरलाल, इन्दिरा गांधी—सबों की तसवीरों की बगल में खल्वाट तथा बलिष्ठ चेहरे के एक हँसमुख इंसान की तसवीर। रामेश्वर ने कहा, "हाँ! हम लोगों के अनुरोध से लेनिन का फ़ोटो बनाया है। ले लिया एक ठो। इन लोगों के गद्दी छूटने पर उतार दूँगा। कुछ समझ रहे हैं? रहेंगे या जायेंगे?"

"जायेंगे क्यों?"

"कहिये, वही कहिये। सामन्त हम लोगों का लीडर है। कैसा भाषण देता है! आपने कभी सुना? हम लोग भी मजे में हैं। हाँ, यह नहीं तो भला लीडर कैसा! यह कोई खाली माँगना है कि फटी चप्पल और मोटी धोती

पहने किसानों के घर का चक्कर लगायेगा ? मेरा आदमी आपका खाना-वाना पका देगा। चावल-दाल-चीनी-तेल-चाय सब है। रामेश्वर को रखना पड़ता है। कच्चा सौदा आप ले आइयेगा।"

"आप कहाँ रहते हैं ?"

"काँकड़ासोल। भुईयाँ राजाओं के वंश के हैं हम। देहात में ही रहते हैं। जागुला में मन नहीं रमता। बस-सर्विस, जीप-गैरेज का काम कर्मचारी लोग ही देखते हैं। आइये किसी दिन।"

रामेश्वर चला जाता है। तभी से द्वैपायन यहाँ है। 'जिला वार्ता' अखबार की पुरानी फ़ाइल से संथालों को अतीत की कहानी का उद्धार करते समय मातो डोम ने ही उसे देखा था।

सामन्त ने उससे कहा, "इन्द्र प्रामाणिक आपको चरसा ले जायेगा।"

"हाँ, चरसा को लेकर उस समय काफ़ी हंगामा हुआ था।"

"क्यों ?"

"क्यों का मतलब ?"

द्वैपायन के होंठों पर हलकी विद्रूप-भरी हँसी खिल उठी। उसकी राय में चुने हुए प्रतिनिधि निहायत ही जाहिल हैं। अशिक्षित। उसके बाद बात को जमाते हुए कहने लगा, "एक ही तरह की अर्थव्यवस्था तथा जन-विन्यास वाले पाँच गाँवों में से चार गाँवों में कुछ नहीं पनपा, एक गाँव में पनपा। ऐसा क्यों हुआ ? क्यों होता है ऐसा ?"

"अँ !" सामन्त ने गहरी वितृष्णा से विरोधी कम्युनिस्ट दल के इस बुद्धिजीवी की ओर देखा और मन-ही-मन सोचने लगा कि साले जितने बुद्धिजीवी हैं, वे उनके खेमे में हैं और जितने कार्यकर्ता हैं, वे हमारे खेमे में हैं। इसीलिए इन तमाम बकरों को बरदाश्त करना पड़ रहा है। उसके बाद सूखी आवाज़ में बोला, "गाँव में क्यों गड़बड़ी होती है, नहीं जानते ? गाँव के बारे में लिख रहे हैं। ज़मीन को लेकर, ज़मीन पर कब्ज़े को लेकर गड़बड़ी होती है। नहीं जानते क्या ?"

"वह तो सभी को पता है।"

"फिर क्या जानना चाहते हैं ?"

"लड़ाकू गाँव जब लड़ाई नहीं करता वह अवश्य ही चोरी, सीनाज़ोरी,

खिलाई करता है?"

"नहीं जनाब। इन तमाम बातों में हम गरीब लोग भी तय नहीं हैं। यह तो जरदाश्त है। जमीन के लिए लड़ाई भी क्या यही है?"

"फिर, यहाँ भी क्या हाल है?"

मालिक ने उसे एक मैप दिखाया। मोटी उँगली से बताते हुए कहा, "ये तमाम उस समय के मकान और हैं।"

"इसमें?"

"हाँ। इस चार-पाँच साल के अन्दर हम लोग इलाके को नोच-नोचकर कई बातों के मातहत ले आये हैं। इन्हें बन रहा है। इन्हें इस इलाके के बीच से जायेगा तो बहुत सारे जंगल कट जायेंगे। यहाँ बाँध बनेगा। यहाँ से गाँव निकाले जायेंगे। चरना नदी का उद्गम बन्द हो जायेगा।"

"इससे इलाके की तरक्की होगी?"

"होगी। और यह इलाका बातों से पता तो नहीं रहेगा। इलाके का पता होना ही सब आन्दोलन में सहायक होता है।"

"यह एक वजह हो सकती है।"

"मेरी राय में यही मुख्य कारण है।"

"जमीन का सवाल ज्यों-का-त्यों बनाये रखकर, अलग से एक जगह की पहाड़ी इलाके में छोड़ देने पर समस्या का समाधान नहीं होता। कोई भी अच्छी किताब पढ़िये, सभी यही बताती हैं।"

"सभी समस्याओं का समाधान कभी होता है भला?"

"इन तमाम जगहों पर क्यों जा रहे हैं?"

"आप इन तमाम जगहों पर जा रहे हैं, इन तमाम लोगों के साथ मिल रहे हैं। ये लोग सवाल हैं। नहीं, बरना—चन्द्रपुर—नक्सलबाड़ी—सिलीगान—बागुरी नहीं जा रहे हैं। ठीक इन लोगों से जा रहे हैं, इन लोगों के साथ मिल रहे हैं। इतना भी मैं सब बता रहा हूँ।"

"ऐसा आप कहें।"

"इतना स्टेटस मोल का है। जनाब।" कहकर मालिक की तरफ, इस तरह नहीं कहीं गयी। इसीलिए सरकार के तौर पर पहले एक,

"उसके दाहिनी बाजू की मछली देखियेगा। देखने की चीज है। ऐसी चीज नहीं देखी होगी।"

"क्यों? मछली क्यों देखूं?"

"कहीं विरोधी मजदूर संगठन के साथ लड़ाई में उसे छर्रा लगा था। इन्द्र ने सिर्फ़ अपने हाथ से बाजू की मछली से छर्रा निकाला था। अभी तक दाग़ है।"

"अरे बाप रे!"

"डरने की क्या बात है? उसका चेहरा देख, मत घबराइयेगा। इन्द्र का चेहरा खासा भारी-भरकम है।"

"देहाती कार्यकर्ता?"

सामन्त की आँखों में बेचैनी के बादल तैर आते हैं। गला सूख जाता है, "हाँ।"

"मजदूर संगठन का कार्यकर्ता था?"

"गाँव चला आया है।"

"कब आयेगा?"

"समाचार भेज दिया है। आयेगा।"

मन-ही-मन सामन्त ने इन्द्र को गाली दी। कई दिन पहले उसने इन्द्र को ख़बर भिजवायी थी। "आ रहा हूँ" का संदेशा भिजवाकर चार दिन से इन्द्र लापता है। सामन्त ने तय किया, इस बार वह कलकत्ते लौटेगा, मगर बीच-बीच में इन्द्र कहाँ लापता हो जाता है, यह पता करना होगा। ऐसा चार बार हो चुका है। संथाल-विद्रोह की एक सौ पच्चीसवीं वर्षगाँठ के अवसर पर सरकारी उत्सव के इन्तज़ाम में इन्द्र ने ज़रा भी सिर नहीं खपाया।

सोचने की बात है। काली साँतरा के मामले में पुलिस की हठधर्मिता की वजह से सामन्त के जागुला साम्राज्य में इतना बिखराव आया है। 'ऑपरेशन वलाई टुडु' में काली को क्यों मारा गया? काली के बारे में सारे शहर और गाँवों में सरकारी चुप्पी क्यों? काली के लापता होने के समाचार पर किसी ने विश्वास क्यों नहीं किया? गहरी, बहुत गहरी बेचैनी।

इन्द्र प्रामाणिक की उम्र अभी तीस है। देखने पर अधिक लग सकता है या कम भी। निहायत ही लम्बा-चौड़ा गठीला बदन, मजबूत चेहरा, रंग बहुत ही काला। काफ़ी कम-उम्र में ही रिक्शा यूनियन से पार्टी में आया था। राजनीतिक पाठ का श्रीगणेश काली माँझरा ने किया था। हिम्मती तथा ईमानदार लड़के के रूप में सभी उससे परिचित थे। नासन्न उसे शिवराम पेपरमिल में रज्जाक के सहयोगी के तौर पर मजदूर यूनियन में काम करने के लिए हावड़ा ले गया। काम आसान नहीं था। मालिक की मदद से चलनेवाली विरोधी यूनियन ने मजदूरों की ठेकेदारी प्रथा चालू करके पुरानी यूनियन को तोड़ देने की कोशिश की थी।

इन्द्र के अनथक प्रयास तथा मेहनत से अनेक संघर्ष हुए। मजदूरों के बीच उसकी यूनियन विजयी हुई। अन्त में, पचहत्तर में इन्द्र का सफ़ाया कर देने का निर्णय लिया गया। किराये के गुंडों के साथ पादपगम युद्ध में इन्द्र वाकई अपनी बाजू की मछली दबाकर छुरी निकालते हुए बेधड़क आगे बढ़ा था। दृश्य डरावना था। प्रतिपक्ष को इन्द्र अरण्यदेव जैसा लगा और उन्होंने रण छोड़ दिया। उन्हें जख्मी बनाने की वजह से इन्द्र उसके बाद गिरफ्तार हुआ।

सतहत्तर में जेल से निकलने के बाद वह हावड़ा और कलकत्ता शहर में ही था। मगर यूनियन में उस समय के कार्यकर्ताओं का मालिकों के साथ बढ़ता हुआ मेलजोल देख इन्द्र घबरा गया। कुछ दिनों तक घूम-फिरकर उसने वातावरण का जायज़ा लेने की कोशिश की। उसके बाद देखा कि अगर वह चाहे तो अच्छे मकान में, अच्छी तरह रह सकता है। लेबर यूनियन के अधिकारियों की हालत अब खासी अच्छी है। रज्जाक को उसने कहा, "उस सूरत में मजदूरों के साथ एक वर्ग में नहीं रह रहा हूँ?"

इसके जवाब में रज्जाक ने उसे तरह-तरह से समझाया। इन्द्र ने जब देखा कि *ठेकेदारी प्रथा आंशिक रूप से मान ली गयी है,* उस दिन जिन लोगों ने उसे मारने के लिए गुंडे लगाये थे, वे लोग भी दादागिरी कर रहे हैं, तो वह और भी चिढ़ गया।

लेबर यूनियन के हामिद ने दुखी होकर कहा, "सिलम पलट गया है,

गुरु। सबों ने भाग-बँटवारा कर लिया। सभी फरंट में यही बन्दोबस्त आ गया है। यह क्या हुआ ?"

इन्द्र ने पार्टी स्तर पर यह सवाल उठाया। कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। विभिन्न स्तरों पर सच्चे कैडरों में नेताओं की समझौतापरस्त कार्यनीति के खिलाफ़ असंतोष देखा गया। उसे गहरा धक्का लगा। उसे लगा कि कलकत्ता ही सब-कुछ का केन्द्र है। यहाँ प्रलोभन ज्यादा हैं। इसी से क्या सब-कुछ ऐसा लग रहा है ?

पार्टी के प्रति उसकी पूर्ण आस्था थी। फिर भी उसे यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि प्रशासनिक ढाँचे में कुछ भी नहीं बदला है। बेरोकटोक घूस चल रही है। क़ीमतों में बढ़ोत्तरी रोकने, बिजली संकट का समाधान करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। सिर्फ़ बातें, बातें और बातें। इन्द्र ने निर्णय लिया और सामन्त से कहा, "मैं गाँव में काम करूँगा।"

सामन्त ने कहा, "अच्छा, बहुत अच्छा।"

जागुला के बारे में जानकारी लेते समय इन्द्र ने सामन्त की जुबानी बसाई और काली की बातें सुनीं। 'काली लापता है'—इस बात ने उस समय उसके दिमाग़ पर कोई गहरा निशान नहीं छोड़ा। लम्बे अरसे से वह जागुला से कटा हुआ है। सिर्फ़ बीच-बीच में जाता था।

सामन्त ने कहा, "चरसा गाँव को केन्द्र बनाओ। बहुत-सी अप्रिय घटनाओं की जगह है वह। अब एक स्वस्थ राजनीति-बोध पैदा करना चाहिए।"

"जाऊँगा।"

"कठिन काम है, इन्द्र।"

"शहर के बाद गाँव ?"

"हाँ।"

"देख रहा हूँ कि शहर में तो एक स्तर पर सब-कुछ लेन-देन चल रहा है।"

"वह तमाम प्रचार है, ग़लत प्रचार।"

"नहीं। सारा ग़लत प्रचार नहीं है। ज़रा देखकर ही इसे समझ लिया है।"

"सारा समझ लिया है ?"

"मैं पार्टी का काम करने आया हूँ, सामन्त-दा, काम करूँगा। हावड़ा में मजदूर इलाके में काम करने का अनुभव नहीं था, हुआ। मैं कभी गाँव का लड़का था। कोंकडामोल गाँव में हम लोगों का मकान था।"

"तुम्हारा बाप ललित प्रामाणिक जागुला आया था। जमाना हो गया। दुकान खोलने की बात भी मुझे याद है।"

"मुझे याद नहीं है। गाँव की जमीन-जायदाद शिवेश्वर भुईयाँ ने ले ली। मैंने सिर्फ मकान देखा था। जागुला आकर पिताजी की दुकान खोलने की बात मुझे याद नहीं। पिताजी के मरने के बाद हम लोग कोंकडामोल वापस गये थे। घर पर चाचा थे। हम लोग भी वहीं रहे। उसके बाद फिर जागुला।"

"शिवेश्वर भुईयाँ वैसा ही था।"

"रामेश्वर तो बाप से भी ज्यादा बदमाश है।"

"पहले था।"

"अब नहीं है ?"

सामन्त थोड़ी देर चुप रहा। फिर हँसकर बोला, "नहीं, नहीं। उसने भी समझ लिया है कि हम लोगों की खुशामद करते हुए चलना पड़ेगा।"

"ऐसा है ? या बहुत बड़े जोतदार रामेश्वर की खुशामद हम लोग कर रहे हैं ? आप नाराज मत होइये। आने से पहले कुछ बातें साफ-साफ जानना चाहता हूँ।"

"तुम ऑपरेशन-बर्गा के बारे में नहीं जानते ?"

"किसने कहा ? पढ़कर जितना पता चल सकता है, जाना है। रामेश्वर के पास तो बेतहाशा जमीन है। वह जमीन सरकार का खास हुआ है ? बर्गा रेकार्ड हुआ है ? ऑपरेशन-बर्गा में ?"

"होगा, अवश्य होगा।"

इन्द्र को लगा था कि नहीं होगा। उसने समझा था कि गाँव के स्तर पर सरकार की एक ही नीति है। उसके मन में खटका आने लगा है।

"मैं चरसा जाऊँगा। चरसा कितना बड़ा गाँव है ? किस-किसने बेनामी में अधिक जमीन दबा रखी है ? किसके पास जमीन नहीं है ? जमीन-

जायदाद वाकुली के सूर्य साऊओं के पास भी वहुत है। सूर्य साऊ मारा गया है न? उसके भाई रोतोनि साऊ मालिक हैं? ग़रीब गांव! चार प्रतिशत वर्गा करते हैं, वाक़ी सारे खेत-मज़दूर वहाँ क्यों जा रहे हैं?"

"खेत-मज़दूरों का फ्रंट खड़ा करने और दिलीप सोरेन का प्रभाव मिटाने के लिए। दिलीप का प्रभाव अच्छा नहीं है।"

"क्या कर रहा है?"

"कुछ नहीं कर रहा है, यही तो समस्या है। शिक्षित लड़का है, माध्यमिक पास है। पुलिस में उसकी नौकरी हो जाती। चरसा में एक ज़माने में बहुत हंगामा हुआ है। वह वेतुल के लड़के उद्धव के साथ जा मिला है। अच्छे वर्ताव का तो यही नतीजा है।

"उद्धव एक ज़माने में वसाई के दल में रहा है। वह भूमिगत रहा। वेतुल के मर जाने के इतने दिनों वाद वह लौटा है। ताराचाँद भुईयाँ ने उन्हें सदर ग़ाँव से उजाड़ दिया। उद्धव ने सवको चरसा में टिकाया है। उसे तो नहीं पकड़वाया, किसी केस में नहीं फँसाया।"

"वेतुल कौन है? उद्धव कौन है?"

"सभी विरोधी पक्ष के हैं।"

"उसके वाद?"

"दिलीप और उद्धव मिलकर झमेला खड़ा कर सकते हैं। धान-कटाई, खेत-मज़दूरी—हज़ारों झमेले हैं।"

"चरसा में रह जाऊँ, खेत-मज़दूर दल वनाऊँ। अच्छी वात है। मज़दूरी देते समय किसका पक्ष लूँ?"

"निश्चय ही खेत-मज़दूरों का।"

"जानकारी ले रहा हूँ। मेरी जानी हुई पार्टी-लाइन अव दूसरी तरह की वनती जा रही है न?"

"पर हंगामा मत करना। मालिक अगर कम देने के लिए वहुत ज़िद करे...।"

"तो उसे ठीक करूँ...?"

"नहीं, नहीं, हंगामा नहीं। उस समय कह-सुनकर आपसी समझौता ठीक रहेगा। नक्सलियों की तरह उग्रता मत अपनाना।"

"उचित मजदूरी का आन्दोलन करके हासिल करा दूँगा, कहने पर नक्सल हो गया ?"

"अरे, गुस्सा क्यों करते हो ?"

"मैं चला जाऊँ।"

"तुम्हारे घर पर कौन-कौन है ?"

"कैडरों के बारे में इतनी जल्दी क्यों भूल जाते हो ? माँ नहीं है। एक भाई है। चित्तरंजन में काम करता है।"

"राजनीति करता है ?"

"नहीं। परिवार पालता है।"

"परिवार को राजनीतिक बनाना पड़ता है।"

"क्या बात कह रहे हैं ! आपके कैडरे में बातचीत कर रहा हूँ। भीतर साईं बाबा का गाना चल रहा है। सुन रहा हूँ। ख़राब ज़ुबान क्यों सुनवाते हैं ? यह क्या राजनीतिक परिवार है ?"

"सब अपनी-अपनी राह पर चलते हैं, इन्द्र...तुम चलो।"

इसके बाद जैसे कोई जरूरी काम भूल गया हो, इन्द्र को बुलाया और कुछ देर रुककर सामन्त ने पूछा, "कलकत्ते में नक्सली हंगामे के वक्त तुम वहीं थे न ?"

"हाँ।"

"तुम्हारे यहाँ कोई गड़बड़ी नहीं हुई ?"

"नहीं।"

"क्या कुछ सुना था ? हाँ, मनिरुल कौन है ?"

इन्द्र का चेहरा बहुत ही भावहीन हो जाता है, छोटी-छोटी रोएँदार भौंहें सिकुड़ जाती हैं। "क्यों, बताइये तो ?"

"वह तो नक्सल है, तुमने उसे...।"

"वह हमारे हॉकर का भाई है। इलेक्ट्रिक सप्लाई यूनियन में था। नक्सल। खदेड़े जाने पर उसने मजदूर बस्ती में पनाह ली थी। मैंने अकेले नहीं, हम सभी लोगों ने उस वक्त उनकी यूनियन के कुछ लड़कों को पनाह दी थी, बचाया था।"

"क्यों ? यानी, तुम लोगों के ऐसा करने की वजह क्या थी ? वे लोग

हम लोगों को हज़ारों की तादाद में मार रहे थे।"

"वाक़ई ?"

"यानी ?" सामन्त मन-ही-मन ज़रा सजग हुआ।

"उन लोगों ने मारा, हम लोगों ने मारा। पुलिस ने मारा। किसी का हाथ उस समय साफ़ नहीं रहा। रहा क्या ? हम लोगों का वैसा करने की वजह—वे लोग मजदूर थे, पुलिस द्वारा खदेड़े जा रहे थे। मजदूर होकर मजदूर को मारने पर या पुलिस को सुपुर्द करते तो, हमें कौन मानता ? हमारे यहाँ पार्टी-पार्टी में, मजदूरों के बीच कोई तनाव नहीं था। मामला पुलिस बनाम मज़दूर बन गया था।"

"इस क्षेत्र में नक्सल मज़दूर हैं ?"

"वेशक। इस तरह सात-आठ लोगों को पनाह दी थी। इलाक़े के गैर-मजदूर पार्टियों के लड़कों के हमला करने पर भी उन्हें मारने नहीं दिया। खयाल है कि इसका नतीजा भी अच्छा निकला है। नौ साल में हमें आठ सच्चे कामरेड मिल गये हैं। वे लोग अव हमारे साथ हैं।"

"अच्छा, वहुत अच्छा।"

"आपकी कसौटी पर क्या मैं नक्सल उतरता हूँ ?"

"नहीं। तुम ही कर पाओगे...।"

"क्या ?"

"गाँव में स्वस्थ राजनीतिक वातावरण लाने का काम।"

इस आस्था के साथ इन्द्र चरसा आया। दिलीप सोरेन और उद्धव काउरा के वारे में उसे नवीन वावू और मोती वावू नाम के प्रवीण कार्य-कर्त्ताओं ने वार-वार आगाह किया। चरसा के वारे में इन्द्र ने विस्तार से जानकारी पानी चाही।

"क्यों ? जानकर क्या होगा ?"

वहुत ही संशय से इन्द्र ने दोनों सिद्ध कामरेडों की ओर देखा। चमकते हुए चेहरे, क़लाई पर बँधी क़ीमती घड़ी और वहुत साफ़ अच्छे वस्त्र। हर जगह क्या वाढ़ का पानी फैला है ? "कहा न, सभी कुछ जानना जरूरी है।"

"क्या जरूरत है ? तुम वाहर के लड़के हो। इलाक़े के मामले नहीं

समझोगे। जान भी लोगे तो क्या होगा ?"

इन्द्र को अचानक बेइन्तहा गुस्सा आया। कहने लगा, "मैं बाहर का लड़का नहीं हूँ। ललित नाऊ मेरे पिता थे। जागुला में टीन के शेड में उनकी दुकान भी थी, सैलून। पिताजी के मर जाने के बाद कुछ दिनों तक माँ यहाँ की दुकानों पर लाही लेकर बेचती फिरती थी। 'जान भी लोगे तो क्या होगा' का क्या मतलब है ?"

"तुम्हारी बातचीत बहुत रूखी है।"

"छोड़िये। हम लोगों ने साल-दर-साल रोटी-प्याज खाकर लेबर यूनियन खड़ी की है। अब बाप-नाऊ की तरह श्रद्धा-सम्मान माँग रहे हैं। पार्टी के पुराने आदमी होकर खोचर-दलाल की तरह मजा मारकर कीमती सिगरेट फूंक रहे हैं, शर्म नहीं आती ? पार्टी की खूब भुनाई चल रही है ?"

"अरे, अरे ..!"

"हरेक बात का जवाब देना पड़ेगा। आप लोगों के पास आया हूँ तो इलाका छोड़कर नहीं जाऊँगा। बरमा में बने पार्टी के इमेज को आप जैसे लोग यह सालों में मिट्टी में मिलाये दे रहे हैं। किसान फ्रंट के सिद्ध कार्यकर्त्ता ! जिला समिति के मंत्री ! जिस गाँव में सबसे आन्दोलन हुआ था और जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ का एक साफ चित्र मुझे चाहिए। और वह आप मुझे नहीं दे सकते। आप लोगों के पास जो जानकारी है, उसमें तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

नवीन बाबू और मोती बाबू ने एक-दूसरे की ओर देख साँस छोड़ी। कहा, "दीनू सब-कुछ बता देगा।"

"दीनू कौन ?"

"दीनू काउरा, हम लोगों का कैडर।"

"बरमा में रहता है ?"

"नहीं। बरमा में हम लोगों की पैठ इतनी नहीं हो पायी है। इसी से ही उद्धव और सोरेन खूँटे जमाकर बैठे हैं।"

"दीनू काउरा !"

हम लोगों को हजारों की तादाद में मार रहे थे।"

"मारते ?"

"मारी ?" इन्द्र मन-ही-मन जरा सजग हुआ।

"उन लोगों ने मारा, हम लोगों ने मारा। पुलिस ने मारा। किसी का नाम उस समय याद नहीं रहा। रहा क्या ? हम लोगों का वैसा करने की [illegible] लोग मजदूर थे, पुलिस द्वारा खदेड़े जा रहे थे। मजदूर होकर मजदूर को मारने पर या पुलिस को सुपुर्द करते तो, हमें कौन मानता ? हमारे यहाँ पार्टी-पार्टी में, मजदूरों के बीच कोई तनाव नहीं था। मामला पुलिस बनाम मजदूर बन गया था।"

"इस क्षेत्र में नगण्य मजदूर हैं ?"

"बेशक। इस तरह सात-आठ लोगों को पनाह दी थी। इलाके के गैर-मजदूर पार्टियों के लड़कों के हमला करने पर भी उन्हें मारने नहीं दिया। खयाल है कि इसका नतीजा भी अच्छा निकला है। नौ साल में हमें आठ सच्चे कामरेड मिल गये हैं। वे लोग अब हमारे साथ हैं।"

"अच्छा, बहुत अच्छा।"

"आपकी कसौटी पर क्या मैं नक्सल उतरता हूँ ?"

"नहीं। तुम ही कर पाओगे...।"

"क्या ?"

"गाँव में स्वस्थ राजनीतिक वातावरण लाने का काम।"

इस आस्था के साथ इन्द्र चरमा आया। दिलीप सोरेन और उद्धव काउरा के बारे में उसे नवीन बाबू और मोती बाबू नाम के प्रवीण कार्यकर्ताओं ने बार-बार आगाह किया। चरमा के बारे में इन्द्र ने विस्तार से जानकारी पानी चाही।

"क्यों ? जानकर क्या होगा ?"

बहुत ही संशय से इन्द्र ने दोनों सिद्ध कामरेडों की ओर देखा। चमकते हुए चेहरे, कलाई पर बँधी क़ीमती घड़ी और बहुत साफ़ अच्छे वस्त्र। हर जगह क्या बाढ़ का पानी फैला है ? "कहा न, सभी कुछ जानना जरूरी है।"

"क्या जरूरत है ? तुम बाहर के लड़के हो। इलाक़े के मामले नहीं

मौसी मर के गयी हैं। दीनू यहाँ बहुत ही सहज और स्वच्छन्द है। इन्द्र को नवीन और दूसरे बाबुओं ने जो कुछ भी कहा, उन्होंने सब मन लगाकर सुना।

उसके बाद प्रश्न-भरी आँखों से पूछा, "एक बात समझ में नहीं आयी। आप समझायेंगे क्या?"

"क्या?"

दीनू का मौसा बरामदे के एक कोने में इन लोगों के लिए खाना बना रहा था। उसने दाल में तड़का दिया। मिर्च की धाँस। आलू की चच्चड़ी चढ़ायी। इन्द्र को खाना बनाना आता था। माँ बनाती थी। आलू, प्याज, नमक, हल्दी को जरा-से तेल में मिर्च के साथ डालकर भूनना होता है। दीनू का मौसा रसोई चढ़ाकर दबे स्वर में बेसुरा काली-कीर्तन गा रहा था। दीनू के प्रति उसका बर्ताव सम्मान-भरा है। पढ़ा-लिखा लड़का है, पार्टी का लड़का है दीनू।

इन्द्र के मुँह से 'क्या' सुनकर दीनू के मौसा ने पुकार कर कहा, "वह काली बाबू की बात है न, बेतुल की बात? इतने समझदार हो, फिर भी यह क्यों नहीं समझ पा रहे हो, बेटे, कि दोनों को मार दिया गया है! चोर-बाजार में सभी जानते हैं।"

दीनू ने ऊँचे स्वर में कहा, "ऐसा नहीं कह रहा हूँ।"

इन्द्र ने कहा, "क्या मामला है, बताओ तो?"

मौसा भीतर आ जाता है। कहने लगा, "वह नहीं कह सकेगा, बाबू, मैं बताता हूँ। काली बाबू को पुलिस ने मारा है। उसका तो किरिया-करम तक नहीं हुआ है। जंगल में से उसकी हड्डियों को चादर में बाँधकर दीनू का ताऊ बेतुल ला रहा था, उसे भी मार दिया। सुना कि बेतुल ने थाने पर हमला किया था। यह सब झूठी बातें हैं। सभी जानते हैं। फिर भी काली बाबू नहीं है, इसे स्वीकार नहीं कर रहे हैं। थाने में फोटो लटका रखा है। बेतुल की लाश हमें दी थी, झूठ नहीं कहूँगा। हम लोगों ने चन्दा उगाहकर काफी यत्न से उसे जलाया। हाँ, बड़े लड़के से श्राद्ध भी कराया। उद्धव बहुत दिनों के बाद आया था। आश्चर्य! उद्धव नक्सली है। उसे मार भी दो तो वह कुछ नहीं कहेगा। उसने कुछ भी नहीं कहा।

"हाँ, उद्धव का गोतिया है। मगर उद्धव जैसा नहीं है। क्लास नाइन पढ़ा है।"

दीनू को देखकर इन्द्र को लगा कि यह लड़का सच्चा है, शान्त है, र बातचीत करता है। इन्द्र से उसने कहा, "काली बाबू के 'ज़िला वार्ता' । फ़ाइल समिति के दफ़्तर में बैठकर पढ़ लीजिये। काली बाबू घूम-मकर सारा समाचार लाते थे। वहाँ सब-कुछ मिल जायेगा। वे गाँव-हात की गूँज पकड़ते थे, सारी बातें लिखते थे। यह लोग वही पढ़ते हैं और वही कहते हैं।"

"काली साँतरा?"

"हाँ, बहुत माने हुए आदमी थे। कोई दंद-फ़रेब नहीं जानते थे। वह जागुला को जानते थे, समझते थे। गाँव-देहात को अच्छी तरह से जानते थे। वे कलकत्ता ही नहीं, किसी भी शहर में नहीं जाते थे। सादा आदमी थे। चलिये, ले चलूँ।"

"काली बाबू का क्या हुआ?"

दीनू चौंक पड़ा। डर से कहा, "पता नहीं। थाने में फ़ोटो लगी है। कहते हैं, उनका पता नहीं चल रहा है।"

'जिला वार्ता' अखबार की छपाई धुँधली है, हरफ़ टूटे हुए। फिर भी बहुत सारे समाचार उसमें होते थे। प्रवीण पार्टी-कार्यकर्त्ता अपने प्रयास और परिश्रम से अखबार को लगन से चलाते थे। समाचारपत्र को देखकर इन्द्र अचंभे में रह गया। अखबार सोलह साल नियमित रूप से निकला है। नवीन बाबू ने भी कहा, "काली असाधारण व्यक्ति था। एक दिन के लिए भी वह आदर्श से च्युत नहीं हुआ।"

इन्द्र ने दीनू के प्रति नवीन बाबू का बर्ताव देखा, जैसे चपरासी के प्रति मजिस्ट्रेट का बर्ताव। इस बात पर भी उसका ध्यान गया कि दीनू और नवीन बाबू ने काली साँतरा के प्रसंग में 'था' शब्द का इस्तेमाल किया है। ऐसा तभी होता है, जब मन-ही-मन निश्चित रूप से पता हो कि जिसके बारे में बात हो रही है, वह मृत है।

दीनू के साथ उसके रिक्शाचालक मौसा के घर मेलातले में इन्द्र द दिन रहा। कमरा उन लोगों के लिए छोड़ मौसा बरामदे में ही सो गये

मौसी मैके गयी है। दीनू यहाँ बहुत ही सहज और स्वच्छन्द है। इन्द्र को नवीन और दूसरे बाबुओं ने जो कुछ भी कहा, उन्होंने सब मन लगाकर सुना।

उसके बाद प्रश्न-भरी आँखों से पूछा, "एक बात समझ में नहीं आयी। आप समझायेंगे क्या ?"

"क्या ?"

दीनू का मौसा बरामदे के एक कोने में उन लोगों के लिए खाना बना रहा था। उसने दाल में तड़का दिया। मिर्च की धाँस। आलू की चच्चड़ी चढ़ायी। इन्द्र को खाना बनाना आता था। माँ बनाती थी। आलू, प्याज़, नमक, हल्दी को ज़रा-से तेल में मिर्च के साथ डालकर भूनना होता है। दीनू का मौसा रसोई चढ़ाकर दबे स्वर में बेसुरा काली-कीर्तन गा रहा था। दीनू के प्रति उसका बर्ताव सम्मान-भरा है। पढ़ा-लिखा लड़का है, पार्टी का लड़का है दीनू।

इन्द्र के मुँह से 'क्या' सुनकर दीनू के मौसा ने पुकार कर कहा, "वह काली बाबू की बात है न, बेतुल की बात ? इतने समझदार हो, फिर भी यह क्यों नहीं समझ पा रहे हो, बेटे, कि दोनों को मार दिया गया है ! चौक-बाज़ार में सभी जानते हैं।"

दीनू ने ऊँचे स्वर में कहा, "ऐसा नहीं कह रहा हूँ।"

इन्द्र ने कहा, "क्या मामला है, बताओ तो ?"

मौसा भीतर आ जाता है। कहने लगा, "वह नहीं कह सकेगा, बाबू, मैं बताता हूँ। काली बाबू को पुलिस ने मारा है। उसका तो किरिया-करम तक नहीं हुआ है। जंगल में से उसकी हड्डियों को चादर में बाँधकर दीनू का ताऊ बेतुल ला रहा था, उसे भी मार दिया। सुना कि बेतुल ने थाने पर हमला किया था। यह सब झूठी बातें है। सभी जानते हैं। फिर भी काली बाबू नहीं है, इसे स्वीकार नहीं कर रहे हैं। थाने में फोटो लटका रखा है। बेतुल की लाश हमें दी थी, झूठ नहीं कहूँगा। हम लोगों ने चन्दा उगाहकर काफी यत्न से उसे जलाया। हाँ, बड़े लड़के से श्राद्ध भी कराया। उद्धव बहुत दिनों के बाद आया था। आश्चर्य ! उद्धव नक्सली है। उसे मार भी दो तो वह कुछ नहीं कहेगा। उसने कुछ भी नहीं कहा।

वह गुमसुम बैठा रहा। एक दिन सबों को लेकर चरसा चला गया। अब नहीं आता।"

"कहाँ चला गया?"

"संथाल समाज में घर बसा लिया।"

"चरसा के बारे में दीनू से पूछ रहा था।"

"वह क्या जानता है? रतन डोम आये तो बतायेगा।"

"रतन डोम?"

दीनू ने जो कहा उसका मतलब है कि रतन डोम चरसा के निवासी हैं। निहायत ही फ़ौजी मिज़ाज के आदमी। साल में कई महीने खेत-मजदूर बने रहते हैं, शेष समय बाँस की डलिया-टोकरी बुनकर गुज़ारा करते हैं। इसके अलावा पेट भरने के लिए चरसा के जंगल में मूल-कन्द इकट्ठा करते हैं, साही-खरगोश-गीदड़ पकड़ते हैं और उनका मांस खाते हैं। रतन का लड़का मातो इस शहर में रिक्शा चलाता है। नक़द रुपये, रंगीन गंजी, सस्ते छोटे ट्रांजिस्टर के बदले में पुलिस की खोचरगिरी करता था मातो। न करने पर बेधड़क पिटाई पाने का भिसिर शहर के रिक्शा-चालकों, दुकानदारों, गाँव से सौदा लाने वाले औरत-मर्दों—सबसे खोचरगिरी कराता था। रतन ने मातो को बेइन्तहा पीटा और गाँव से निकाल दिया। मातो ने खोचर का काम करना बहुत दिनों से छोड़ दिया है। अब रतन बीच-बीच में लड़के से बातें करता है। जागुला में आने पर सभी यहीं उठते-बैठते हैं। दीनू का मौसा, रतन, बेतुल—सभी एक समय में काली-कीर्तन गाते थे। मधु डोम ने वह दल बनाया था।

"रतन चरसा में ही रहता है?"

"हाँ। और कहाँ?"

"तुम समझ नहीं पा रहे हो क्या?"

"चरसा में किसी समय में नक्सली बहुत सक्रिय थे। उसके अलावा बसाई टुडु का नाम आपने सुना होगा। उन्होंने जब पार्टी छोड़, बहुत-से गाँवों-देहातों के संथाल, खेत-मजदूरों को लेकर लड़ाई चलायी थी तो उस वक़्त चरसा में सभी ने मदद की थी। उसकी वजह से पुलिस और मिलेट्री ने चरसा में बहुत जुल्म ढाया और अभी भी चरसा का हाल वैसा ही है।

जुल्म का अन्त नहीं है, बाढ़-सूखे में कोई रिलीफ नहीं है, अच्छी खाद की व्यवस्था नहीं है। क्यों? हर तरफ से बेहद कष्ट के कारण ही वे लोग नक्सली बन गये थे। रतन डोम लीडर था। हम लोगों के कष्ट भी तो बहुत है, फिर भी हम लोग क्यों नहीं उठ खड़े होते, अक्सर यही बात मन में उठती है।"

"नवीन बाबू-लोग क्या कहते हैं?"

"बड़े लीडर लोग हम लोगों की बात नहीं सुनते। अधिक पूछने पर कहते हैं कि दीनू, तू नक्सली है क्या? मगर..।"

"क्या?"

"नक्सली क्यों हो रहा था? वहाँ लोग शौकिया नक्सल नहीं थे। बीरू पाठक भी मुहल्ले का ही लड़का था। कब का मर-खप गया। बसाई ने जो आन्दोलन चलाया था, मौजूदा कारणों को लेकर ही तो था। वही सारे कष्ट अभी भी बाकी हैं। नवीन बाबू-लोग यह बात नहीं मानते कि तमाम गाँवों के संथाल-डोम-काउरा ने पुलिस-मिलेट्री का कितना-कितना जुल्म सहा है। फिर भी कहते हैं.। यह नक्सली ही थे, जिन्होंने हमारा दुख समझा। बसाई ने हमारा दुख समझा। इन्द्र-दा, हम सच्चे कार्यकर्त्ता हैं। जान लगाकर काम करते हैं। फिर भी उनका मन नहीं भरता।"

"क्यों?"

दीनू ने हताशा से घिरे कंठ से कहा, "ऑपरेशन-बर्गा के मौके पर जान-ईमान कबूल कराकर पता लगाया गया कि किसकी कितनी बेनामी जमीन है। गौर, कदम और रजत ने इसकी लिस्ट बनायी। कानूनगो भी सच्चा था। नवीन बाबू ने रामेश्वर भुईयाँ और रोतोनि साऊ का नाम सूची से जाने क्यों निकाल दिया? बेशक उन्होंने पार्टी फंड में रुपया दिया है, मगर उनका ही आदमी पंचायत का प्रधान क्यों बनता है? जहाँ नक्सली स्थितियाँ हैं, सच्चा कैडर वहाँ जायेगा। उससे जब यह पूछा जायेगा कि हजार बीघा बेनामी जमीन के मालिक की जमीन भेस्ट क्यों नहीं होती सरकार की ओर से, जबकि सौ बीघे जमीन के मालिक की, पचास बीघे जमीन के मालिक की बेनामी जमीन खास क्यों की जाती है? मैं तो कैडर हूँ, पार्टी मेरी जान है, मैं क्या जवाब दूँगा?"

"और क्या ?"

"सोतोलि, रानेश्वर, तारापीठ जिनका जिले पर कब्जा है, वे मजूरी नहीं देंगे—उस समय कहना पड़ेगा, 'भाइयो, सरकारी खेत-मजूरी पर दर को लेकर लड़ाई क्यों छेड़ते हो ? जो दे रहे हैं, उसे स्वीकार कर लो।' आमुला में किराने की दुकान करता है हरि पाडुइ। उसकी दस बीघे जमीन खेत-मजदूरों पर निर्भर करती है। हरि से कहना पड़ेगा, 'यह ठीक ही मजदूरी है। मजदूरी नहीं तो धान रोपाई नहीं, निराई नहीं, कटाई नहीं।' क्यों कितना कहूँगा ? मोती बाबू के पास भी बेनामी जमीन बहुत है।"

"मोती बाबू की ? कहाँ ?"

"शहर में। उस जमीन को वेस्ट करने में पार्टी का सिर ऊँचा होता। वह क्या कर रहा है, कोई नहीं जानता। सुना है कि उसकी जमीन में बर्गा ही नहीं है। वेस्ट नहीं होगा, बर्गा दर्ज नहीं होगा। क्यों ?"

"और क्या दीनू, और क्या ?"

"यही वजह है कि कोई हम सच्चे कैडरों का विश्वास नहीं करता। किसी जोतदार, किसी महाजन पर दबाव डालना मना है। क्यों ? सिर्फ सुनता हूँ, ताकि कोई हंगामा न हो। गाँव चलो, अपनी आँखों से देखो। अपनी आँखों से मजा देखो। बाढ़ आयी हुई है, फुड फ़ॉर वर्क सुन रहे हो, वहाँ गेहूँ कौन ले जा रहा है ?"

"और भी बातें होंगी, दीनू ?"

"हाँ, काम करने का मौक़ा देते तो दिखा देता कि हम भी खेत-मजदूरों की लड़ाई लड़ सकते हैं और खेत-मजदूरों से मदद भी पाते हैं। बेनामी जमीन खत्म करके जोतदार दुरुस्त करता—दिखा देते, हाँ, हम लोग भी लड़ाई लड़ना जानते हैं। मगर कोई चारा नहीं है। सिर्फ झूठी बातें कहकर दुखी और भूखे लोगों को भुलावा दिया जा सकता है ?"

"क्यों, क्या वे काम करने नहीं देंगे ?"

"अगर तुम करने गये तो तुम नक्सल कहलाओगे।"

"यह भला कैसी बात हुई ?"

"यही बात है। इस दुख से जल-जलकर हम लोग मर रहे हैं। बस

गेतांनि साऊ को लेकर...।"

"क्या हुआ उसे ?"

ऑपरेशन-वर्गा कार्यक्रम की एक प्रतीक घटना का दीनू बयान करने लगा। मगर उससे पहले ही, "सदानन्द कहाँ है ? यह कोहड़ा पकड़ो न ! साला बहुत भारी है !" कहते हुए एक नाटा मुट्टा बूढ़ा हाजिर हुआ। कपाल, गर्दन तथा हाथ पर जख्मों के दाग थे जैसे किसी ने दाव से चोट की हो।

उसे पता है कि लोग उसके जख्म को पहले देखते हैं, बाद में उसका नाम जानना चाहते हैं। इसीलिए कहने लगा, "दाव से चोट की थी। मैं रतन डोम हूँ। तुम वही बाबू हो न, जो चरमा जाकर किसान-सभा करना चाहते हो ! वहाँ जाने से कोई लाभ नहीं है। कोहड़ा पकड़ो न, दीनू !"

"लाभ क्यों नहीं है ?"

"बड़े किसान वहाँ नाम को भी नहीं हैं। सब मजदूरों का गाँव है। ऐसे गाँव में किसान-सभा के कामरेड जायेंगे ?"

"मुझे नहीं पता कि तुम लोगों को किसने क्या बताया, क्या समझाया है। मगर ऐसे गाँव में ही तो किसान-सभा अच्छी तरह काम करती है।"

रतन डोम बैठ गया, गमछा घुमा-घुमाकर हवा काटने लगा। फिर कड़वी हँसी हँसते हुए बोला, "नहीं करती, कभी करती थी। हाँ, नक्सलों को मदद दी है। हाँ, कमाई को इज्जत दी है। मगर जीने के लिए। उस बार जब सामन्त बाबू ने काली बाबू को ले जाकर खड़ा किया और कहा तो रतन डोम ने वायदा किया है कि वोट दिलायेगा। दिला भी दिया। क्यों दिलाया ? रतन डोम ने सूर्य साऊ के गुमाश्ते का सिर उतार दिया था; सभी को पता है। साऊ के गुंडों के हाथ में दाव थे, उनसे चोट पर चोट की गयी। उसके बावजूद सिर नहीं छोड़ा। काट कर ला दिखाया था। वोट क्यों ला दिया ? मैंने विश्वास किया था कि पुलिस और जुल्म नहीं करेगी, जोतदारी-जुल्म से न्याय मिलेगा। हा हा ! किन लोगों पर विश्वास किया ?"

रतन जल्दी-जल्दी गमछा झलने और कहने लगा, "सामन्त ने गद्दी का हिस्सा लिया और काली बाबू को मार दिया। तुम लोगों की पार्टी के नाम पर गाँव-देहात के सामने उन्हीं काली बाबू का चेहरा होना था।

वही दौड़धूप करते हुए मरता-खपता था। उसे मार दिया, बेतुल को मार दिया। पुलिस अब दुगुना जुल्म ढाती है। और जोतदार? जोतदार तुम लोगों को चन्दा देकर पार्टी से मदद ले रहा है। ग़रीब किसान, खेत-मज़दूरों पर वे तिगुना जुल्म ढा रहे हैं।"

"इसके लिए क्या हम लोग उत्तरदायी नहीं हैं?"

"उत्तरदायित्व किसका है, रतन को पता है। चरसा की बाढ़ में मरे। वह साली बाढ़ बहाना भी जानती है। बाढ़ में मरा। छिटपुट रिलीफ़। तेलहा सिर तेल से तर हो गया, रूखा सिर कट गया। फ़ूड फ़ॉर वर्क सुनकर काम करना चाहा, लेकिन काम नहीं मिला, गेहूँ नहीं मिला। इंसान को सूखा-भूखा रखा गया। सुना है कि गेहूँ लौटा दिये हैं। कोई कहता है, बेच दिया है। भला, ऐसा कहीं होता है? उत्तरदायित्व किसका है, रतन डोम को पता है।"

भयंकर-से-भयंकर राज़ एक के बाद एक खुल रहे हैं। इन्द्र के भीतर जैसे कुछ जल जाता है। विश्वसनीय कैडर क्या कहेगा? नेताओं से रतन डोम की मुलाक़ात नहीं होती, इन्द्र की होगी, दीनू की होती है। यह जोतदारी शोषण क्यों चल रहा है, इस ढाँचे को ज्यों-का-त्यों बरक़रार रखकर चलाने की क्यों कोशिश की जा रही है? कहाँ डर है? क्यों डर है? जिन्होंने वोट देकर पार्टी को गद्दी पर बैठाया उन्होंने तो ईमानदार तथा विवेकी प्रशासन माँगा था। वे सभी लोग तो पार्टी के सदस्य नहीं हैं। जनता की राय पाने पर सबसे पहले उत्तरदायित्व स्वीकार करने की बात थी न?

इन्द्र ने धीरे से पूछा, "सामन्त-दा को यह सब पता है?"

"कांग्रेसी झंडा उड़ाने का मोटा डंडा है—रामेश्वर भुईयाँ। चन्दा देकर रामेश्वर अब पार्टी का खंभा बन गया है। उसकी ही जीप पर चढ़कर सामन्त बाबू जागुला में घूमे, माला पहनी। वोटों से जीतने पर अबीर उड़वाया। वही सामन्त बाबू क्या यह सब नहीं जानते? स—ब जानते हैं। अभी उन्हें रतन डोम की ज़रूरत नहीं है। उन्हें पता है कि डोम तो उजबक़ है, वोट के समय जाऊँगा तो हम लोगों के लिए ज़रूर खटेगा।"

"कहकर देखा है?"

"गया था। चार साले काउरा संथालो का धर्म रेकार्ड कराने के लिए। रोनोनि साऊ को मिले चार लाख रुपये। और हम लोगों ने लात खायी। मुकुन्द बाबू ने भी अपमानित होकर छोड़ दिया। बहुत हुज्जत हुई।"

दीनू ने कहा, "जो बात उस समय मैं कहने जा रहा था, वही बात वे कह रहे हैं।"

दीनू के मौसा ने कहा, "पहले खाना खा लो। खाना सामने रखकर दूसरे का किस्सा नहीं सुन सकता। यह भात है, भात। दीनू, दुकान में पत्तल क्यों नहीं ले आते?"

दीनू साल के पत्ते ले आया। माडो ने निकाला भात, दाल और आलू का सूखा। आलू का सूखा बहुत थोड़ा-सा ही है। उसी का पुट देकर भात खाया गया। भात खाने के बाद रतन ने परम तृप्ति के साथ पानी पीया और कहा, "कल मछली खाऊँगा। कोंहड़ा, मछली, मिर्च, प्याज से भात खाये अरसा हो गया है।"

"और दवा?" दीनू के मौसा ने कहा।

"नहीं।"

"नहीं लाये?"

"नहीं, और लाऊँगा भी नहीं।"

दीनू ने इन्द्र से कहा, "वे गठिया के दर्द की दवा जानते हैं। तेल पढ़ देंगे—गठिया के दर्द से आराम मिल जायेगा।"

पहले इन्द्र ऐसी बातों पर उछल पड़ता था। यह तमाम झूठे संस्कार हैं। तेल पढ़ना, जल पढ़ना, जादू-टोना, जंतर-मंतर—सब झूठ है।

अब इन्द्र नहीं उछलता। यह सब धोखाधड़ी है या अपने को भुलाना है। वैज्ञानिक चिकित्सा-व्यवस्था जिनकी पहुँच से परे है, वे लोग ही उसे पकड़ते हैं। धीरे-धीरे इन्द्र अगर उनसे घुल-मिल गया, तो इस तरह के विश्वासों को तर्क से काटकर उन्हें उनसे हटा सकता है। मगर अज्ञान का अंधकार दूर करने के बाद क्या इन्द्र 'स्वास्थ्य-केन्द्र में चलो' कहेगा? स्वास्थ्य-केन्द्र में गाँव के गरीबों को क्या मिलता है? स्वास्थ्य-केन्द्र में क्या रहता है? दवा नहीं है, औजार नहीं है, चिकित्सा की व्यवस्था नहीं है।

सिर्फ़ है पराजित, थका हुआ एक डॉक्टर और प्रचार-पत्रों से भरी एक दीवार। चौबीस परगने के देहाती इलाक़ों में घूमकर इन्द्र ने बहुत कुछ देखा है। और सरकारी ख़ैराती दवाओं के लिए भी ग़रीबों को पैसा देना पड़ता है।

उसे सब-कुछ पता है, इसलिए इन्द्र कुछ नहीं कहता। मगर रतन से यह सब सुन उसे ताज्जुब हुआ।

रतन ने कहा, "धत्तेरे की! मन में नफ़रत भर गयी है। अब और दवादारू नहीं करूँगा। हम लोगों के स्वास्थ्य-केन्द्र में दवादारू के लिए बीस-पच्चीस हज़ार रुपये हैं। जब से माँगने पर दवा नहीं मिलती तभी से नफ़रत हो गयी है। बाबू से कहता हूँ कि दवादारू के लिए कम दौड़-धूप नहीं की है। उसी से नवीन बाबू और मोटे हो रहे हैं। नवीन बाबू ने उसने कहा, 'धमकी देना, डराना—यह तमाम नक्सली हथकंडे भूल जाओ। शान्ति के मार्ग पर चलो।' एक वक़्त सभी मिलकर खूब नाचे थे, बहुत पहले। चीज़ों की क़ीमतें बढ़ीं, हमने लड़कर उसे घटवाया। रामेश्वर ने बस का किराया बढ़ाया, हमने लड़कर उसे कम करवाया। अब यह कहते हैं, 'हंगामा मत करो। वे नक्सली दिन लद गये हैं, शान्ति के मार्ग पर चलो।' "

इन्द्र हँस पड़ा।

रतन ने कहा, "हाँ, हाँ, हँसिये बाबूजी! यह हँसने की ही बात है। हँसिये। तो सुनो, सदानन्द। मेरी जोरू, मातो की अम्मा कहती है, मेरी बात कभी नहीं सुनते। उस दिन कह रही थी, 'हाँ, तुम्हारी ज़िन्दगी एक ढर्रे से बीती। मेरी तो कभी नहीं मानी तुमने। दस लोगों को दवा क्यों दे रहे हो? जिसकी दवा लगती है, किस्मत उसके हाथ में होती है। तो फिर हम-तुम फटे कपड़े क्यों पहनते हैं? ठंड में फटी कथरी क्यों ओढ़ते हैं? क्यों पेट में भात और सिर पर तेल नहीं जुटता?' बस। इसी से मेरी आँख खुल गयी। न समझता, मैं क्या कोई गधा हूँ? मातो की माँ ने यही बात समझदारी की की है।"

"दवा से कितने लोगों को आराम मिला है?"

"दवा के असर से या खुद-ब-खुद आराम हो रहा है।"

"दवा का असर तो होता है।"

"मन उचट गया है। असली दवा का पता लगने पर इस दवा की असलियत मैं जान गया हूँ। अब मैं वह दवा जान गया हूँ जिससे पेट में भात मिलता हो, बदन के लिए कपड़ा मिलता हो। दूसरी दवा के लिए अब मैं काम नहीं करूँगा।"

रतन चुप हो गया। फिर उसने थोड़ी सुलगायी। कहने लगा, "मन बुरी तरह से टूट गया है।"

दीनू ने कहा, "रोतोनि की बात बताओ न!"

रतन ने कड़वी हँसी हँसकर कहा, "हाँ! वह किस्सा सुनने लायक है। यह बात जो सुनेगा उसे पता चल जायेगा कि रतन डोम जैसा बेवकूफ कोई दूसरा नहीं है।"

रतन ने कहानी संक्षेप में सुनायी।

"बाढ़ आयी, बाढ़ गयी। फूड फॉर वर्क के मामले में लोग बहुत खुश हुए। अगर दीनू, गौर, कदम, रतन सच्चे हों तो, और रतन हजार बार कहेगा कि ये बहुत ही सच्चे हैं, बहुत ही विवेकी है। फिर अगर वह लोग सच्चे है तो सच बात कहें कि फूड फ़ॉर वर्क के अन्तर्गत जितना गेहूँ आया था, वह सभी को नहीं मिला।"

दीनू ने कहा, "सबों ने काम नहीं किया।"

क्षण-भर में रतन का व्यक्तित्व बदल गया। दबी हुई आवाज में, गरजते हुए उसने कहा, "काम सब लोगों को नहीं मिला। सभी माँग रहे थे।

"लोगों को चुन-चुनकर काम दिया गया। गेहूँ भी उन्हें ही मिली। मगर जितनी संख्या में लोगों ने काम किया, जिस परिमाण में गेहूँ बँटा, उससे कहीं अधिक लोगों को काम मिल सकता था। गेहूँ काफी अधिक था। बहुत-से भूखे लोगों को भूख से सुखाकर गेहूँ हवा हो गया। गौर और रतन ने इस पर काफी झगड़ा भी किया था।"

यह एक अध्याय भी खत्म हुआ।

"बाढ़ के दुख ने हम लोगों को जैसे बारहमासिया बना दिया है। बारहमासिया समझते हो, बाबू? दुखी भूखा आदमी जाकर जमीन के

मालिक के, व्यापारी के घर पर बारहमासिया बनता है। कोई कहता है, बारहमासिया, कोई माहिन्दार, कोई कहता है भतुआ। जितने देस उतने नाम। तो दुखी भूखा आदमी, जिसके घर पर कुछ नहीं है, वह बारह-मासिया बनता है। बाबू हो। हमें बारहमासिया बनाकर रखो, भात का दुख और सहा नहीं जाता। भात का दुख सबसे बड़ा दुख है। इतनी बड़ी दुनिया धान के खेतों से किसने भर रखी है? यह रामशालि, जटाशालि, कन-कचूड, झिंगासाल, तिलसागरी कितने तरह के धान, कितने तरह के चावल, कैसी-कैसी व्यवस्था है! सारा धान कौन बोता है, खेत कौन काटता है, कौन उससे चावल अलग करते हैं? कौन उसे अपने खलिहान में भर लेता है? खाता कौन है? किसका इन्तजाम है? हम लोगों को पेट भरने के लिए कुछ भी नहीं जुटता। यह सब किसका इन्तजाम है? तुम लोग कौन-से दुख की बात कहते हो, बाबू, मैं समझ नहीं सकता। भला किस दुख से आदमी घर छोड देता है या किस दुख से आदमी आत्मघाती बनता है? हम लोग भात के दुख से दुखी हैं, बाबू! हम लोग घर नहीं छोड़ते, हम लोग आत्मघाती नहीं होते। फटी कथरी बदन पर ओढ़कर भात का सपना देखते हैं। सपने में पके धान की खुशबू दौड़ आती है, मन भर जाता है।

"भात के दुख से बारहमासिया बने तो बस गुलाम हो गये। सालियानादार या दरमाहादार का उससे क्या आता-जाता है, बाबू? माहवारी मिलेगा, पेटभर खाओ, मगर बारहमासिया को दिन या रात कभी छुट्टी नहीं मिलेगी। और पैसे की जरूरत पड़ती है कि नहीं, बाबू? लड़का-लड़की की बीमारी, किसी की शादी-ब्याह, किसी का जातकरम, किसी का श्राद्ध—तरह-तरह के कामों के लिए पैसा चाहिए। हर काम में पैसा चाहिए। खुद भरपेट खाते हो, घर के लोग सूखकर मरते हैं। पेट भरने के लिए मालिक पैसा कर्ज देता है। उस कर्ज का सूद कूद-कूद कर बढ़ता है। बारहमासिया का कर्ज चुकता नहीं होता। मरते वक्त लड़के को बारहमासिया बनाकर छोड़ जाता है। यह अगर गुलामी—बन्दागिरी नहीं है तो किसे तुम गुलाम कहोगे? इसीलिए गाता हूँ:

वारहमासिया रे! तेरे दुख से जिया रोए।
पंछी-परिन्दे रोए

कीड़े-मकोड़े रोए
पेड़-पौधे रोए, बारहमासिया !
तेरी आँखों मे आँसू, मालिक मुसकाए
मालिक का कुत्ता हँसे, बिलार मुसकाए
ढेकी हँसता है, ओखल हँसता है
मालकिन हँसती है कितनी !
मालकिन के पाँव मे पीतल का झुमका
झुमका झन-झनाकर बजता है, मीठी-मीठी हँसी हँसता है ।"

बरसा की बाढ के बारे मे बताते हुए रतन डोम इतनी बातें कह गया। रतन डोम की बात कहने का ढँग विचित्र मनभावन है। मजदूर लोग जमीन खोदकर पेट की आग की वजह से शहर जाते है, इन्द्र को यह पता है। कारखाने के इलाके मे लड़ाकू मजदूर यूनियन की लड़ाई लड़ते हैं। झंडे की इज्जत रखते है। मगर उनके स्वप्न के बारे मे तुम नही जान पाते। सोचने पर तुम्हें बहुत ही अजीब लगता है। तुम तो उन लोगों के साथ के साथी हो, दोस्त ! सभी जानते है कि उनके दैनिक संग्राम का हिसाब-किताब तुम्हारे रक्तकणों मे लिखा जाता है। सब जानते हैं, मगर सपना क्या है, नही जान पाते। और इस पर तुम्हें हैरानी होती है। सपने के बारे मे जानने की तबीयत होती है। यह तमाम जाने-पहचाने, कालिख-पुते चेहरों की आँखों के किस कक्ष मे सपनो को बन्दी बना रखा है ?

उसके बाद अचानक एक दिन पता चलता है। होली की रात होली-मस्त मनोहर जब ढोलक बजाकर नाच-नाच कर गाना गाता है, सबके साथ बैठकर तुम करताल पीटते हो, उस समय चम्मन रैदास स्वप्निल आँखों से छपरा जिले के सिराही गाँव मे होली की शोभा देखते-देखते अस्फुट आवाज से कहता है, 'और एक साल मे उधार चुकता कर डालूँगा। उसके बाद ? जमीन खरीदूँगा, खरीदनी ही होगी। अधिक नही, तीन बीघा जमीन से भी चार महीने की खुराकी निकल आयेगी।'

उसके गले की आवाज मे गहरी प्यास। और अचानक तुम्हारे सामने क सचाई कौंध उठती है, जो तुम्हारे राजनीतिक पाठ्यक्रम मे नही है। ने सीखा है, मजदूर मजदूर ही रहता है, किसान किसान ही रहता है।

सिद्धान्त की बात है। अपनी आँखों से दूसरी एक सचाई देखते हो। छोटे और मझोले कारखानों में काम करने वाले मज़दूर जमीन से वंचित होकर औद्योगिक क्षेत्रों में आते हैं। जमीन के लिए हाहाकार रह जाता है उसकी आँखों में, दिल के पिंजड़े में, शाम को नशे के वक़्त, रात को पत्नी के साथ घुल जाने के विन्दु पर। यह रूपान्तरित होने का एक स्तर है। इस स्तर पर जो किसान है, वही मज़दूर है और मज़दूर-किसान है। हाँ, इस स्तर पर मज़दूर-किसान एक ही मानवदेह में रहते हैं। घुलमिल कर। कितनी घिसाई-पालिश के वाद भी अपने अन्तरतम में, अपने सपनों में वह मज़दूर रहेगा, यह तुम नहीं जान पाते।

यह नयी संज्ञा तुम्हारा आविष्कार है। यान्त्रिक सिद्धान्त पढ़ते समय तुम्हें पता भी नहीं लगता कि तुम एक ऐसे भारतवर्ष का आविष्कार करोगे, जो कृषि-प्रधान भारत है।

इस नयी रोशनी में तुम्हारी तोतारटन्त टल जाती है। और हमीद के घर पर ईद के मौक़े पर लम्वे अरसे से प्रोटीन खाकर तुम जब वेहद ख़ुश होते हो तो उस वक़्त हमीद कहता है, 'त्योहार में इस साल ज़्यादा ख़र्च नहीं कर रहा हूँ। इस वार जमीन छुड़ानी ही पड़ेगी। अहा! क्या ज़मीन है!'

औद्योगिक क्षेत्र में इन तमाम लोगों ने इन्द्र को वहुत पहले ही भूमि-जीवी लोगों का पक्षपाती वना दिया है। इसीलिए इन्द्र गहरी दिलचस्पी से रतन की वातचीत सुन रहा था।

कितना विचित्र मनभावन जादू है उसके वात करने के ढँग में! वाढ़ की वात के साथ वारहमासिया की वात। भात का दुख इस तरह वयान कर रहा था जैसे कोई रूपकथा सुना रहा हो। रूपकथा ही तो है यह। रूपकथा कभी भी पुरानी नहीं होती। कनकसाली, रामशाल, रूपनारायण धान का पहाड़ काटकर जो लोग दूसरों के खलिहान में ला खड़ा करते हैं, उन रतनों के भात का दुख भी तो रूपकथा की तरह ही है। वहुत पुरानी है यह वात, आज भी वह जीवन्त है। इन्द्र को आज अचानक वहुत दिनों वाद अपनी अभागिन माँ की वात याद हो आयी। माँ भूजा भूनते हुए वीच-वीच में मृत्युविलाप की तरह वेसुर में लगातार गाती थी :

किसी के अन्न से दूध-बतासा
मेरी तो अम्मा शाक नहीं जुटा पाती।

माँ यही एक रामप्रसादी भूलभाल जानती थी, इसी को गाती थी। जमाना हो गया, माँ मर गयी। कैंसर हुआ था पेट में। जिन्दगी-भर जिसे सिर्फ़ दुख मिला, मौत ने भी भीषण व्याधि के रूप में आकर उसके शरीर को बहुत ही तकलीफ़ दी थी। किसकी व्यवस्था है, बाबू? माँ बहुत ही डरपोक और देवी-देवताओं की भक्त थी। माँ का परिणाम देखकर ही इन्द्र ने भगवान को अपने भीतर से काटकर निकाल दिया था। निरीश्वर होने के लिए कम्युनिस्ट नहीं होना पड़ा। निरीश्वर होकर ही वह पार्टी में आया था। पार्टी में घुसकर ईश्वर को छोड़ देने पर वह माई बाबा के माध्यम से घरवालों का आँचल पकड़कर घर में घुसता है। सामन्त और उसका राजनीतिक रूप से सचेत परिवार!

रतन ने कहा, "क्या कहना था, क्या कह रहा हूँ! डोम-बाउरा का मामला है, माफ़ कर देना।"

"आगे सुनाओ, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।"

"क्यों?"

"बहुत सारी बातें नहीं जानता, इसीलिए।"

"परसाल की बाढ़ की बात! तो बाढ़ ने हमें बारहमासिया बना रखा है। बाढ़ के सामने हम बारहमासिया हैं, सूखा-अकाल के सामने भी बारह-मासिया। बाढ़ आयी, गयी। लेकिन प्रलय-भरी बाढ़ कभी नहीं देखी। उसके बाद जो हुआ वह कहूँ। न रिलीफ़, न काम के बदले में गेहूँ—मन बहुत टूट गया। सब मिलकर सामन्त बाबू के पास गये, डिलीर गोरेन ने अर्जी लिखी। अँगूठे की छाप लगायी। अरे बाप! बाप रे बाप!"

"क्या हुआ वहाँ?"

"वही चेहरा, वही आदमी, मगर यह कौन-सा सामन्त है? कहने लगा, 'सब मिलेगा तुम लोगों को। नकली गरमी दिखाने के लिए अर्जी ले आये हो।' हमने कोई गरमी नहीं दिखायी थी। हमें मिला भी कुछ नहीं था। फिर भी यह बातें सुनकर हैरत में आ गये। कहा, 'हाँ बाबू! वोट लेते समय तो इतना गरम नहीं हुए? यहीं मिली तो सब भूल गये?' "

"क्या जवाब मिला ?"

"कहने लगे, 'तुम बहुत आगे बढ़ रहे हो, रतन। कुछ नहीं किया कह रहे हो ? सूरज के गुमाश्ते को काट फेंका था, तो भी नहीं पकड़वाया था। उद्धव बसाई टुडु के साथ घूमता था। उसके ख़िलाफ़ भी कुछ नहीं किया। दिलीप को नौकरी दी, उसने नहीं की। इससे मान लिया गया कि वह संथाल है, शायद नक्सली बवंडर उठाता है।' "

"उसके बाद ?"

"कहा, 'सामन्त बाबू ! यह कोई अच्छा काम कर नहीं रहे हो। वोट दिया है और सारे कामों में शामिल भी होना चाहता हूँ। कब, क्या हुआ था, उसे पकड़कर बैठे हो !' "

कहते-कहते रतन जरा रुका। फिर भौंह सिकोड़कर न जाने कैसे स्वर में बोलने लगा, "दिल टूट जाता है। कह सकता था, अपने लड़के गौर और कदम से पूछो न ! चरसा के लोगों से जब उसने कहा था कि नक्सली बने हुए हो, बसाई टुडु को मदद दी तो वह बात क्या भूल जाऊँगा ? जानता हूँ बहुत ही दुख से हथियार उठाया था। और वादा करता हूँ कि जितने लड़कों को जेल में रखा गया है, उन्हें छोड़ दूँगा। ज़मीन के मालिकों को नहीं, तुम लोगों को मदद दूँगा। हर तरफ़ से सुविधाएँ दूँगा।"

इन्द्र बहुत ही ध्यान से सब बातें सुन रहा था। चुनाव के इलाक़े भी तरह-तरह से बँटे हुए और मिले-जुले होते हैं। हर चुनावी इलाक़े में अलग तरह से बातें करनी पड़ती हैं। काँकड़ासोल में जो बातें कहकर वोट माँगे हैं, वही बातें जटिल समस्याओं से उलझे, संग्रामी, ख़ून से सने चरसा प्रान्तर में नहीं कही जा सकतीं। उसके भी मन में नेताओं के ख़िलाफ़ कहने को बहुत-सी बातें हैं। पार्टी से प्यार करता है, इसीलिए मन में यह बातें भीतर जमती जाती हैं। रतन की बातें सुनना बहुत ज़रूरी है।

"कह सकता था, गौर और कदम से सुनकर तुम लोगों की बातों पर विश्वास किया था। सामन्त बाबू को वोट दो, इस बार रोतोनि साऊ, रामेश्वर भुईयाँ की हेकड़ी नहीं चलेगी। 'वोट दो' नारे के साथ कितने चक्कर लगाये, सभाएँ कीं ! सामन्त बाबू हो ! तुम जीत जाओ, भूखे पेट

धामसा[1] बजाकर तुम्हारा जयजयकार करूँ। उसके बाद तुम्हारे सारे कामों की अगुवाई करूँ। सब-कुछ भूल गये। इसी से मन में दुख होता है। उस दिन कहा था, 'वोट से जो जीतता है वही गदहा बनता है।' फिर घर नहीं लौटा।"

सदानन्द जैसे हैरत में पड़कर पुरानी बातें याद करते हुए बोला, "नहीं, वह घर नहीं लौटा। मेरे यहाँ शराब भी नहीं पीने आया। जो किया, वह अजब ही था।"

बरगा के किनारे जाकर चुपचाप जा बैठा था रतन। क्यों बैठा था? पूछने पर कहा था, "वोट माँगने वाले बाबुओं का स्वरूप तो उसे अच्छी तरह पता था। फिर भी पाँच लोगों की बात सोचकर सामन्त को वोट दिया था। गाँव के लोगों की ज़िन्दगी में बहुत दिनों से बिखराव है। सामन्त को वोट देने पर जोतदारों का आतंक कम हो सकता है, जेल में बन्द लड़के घर लौट सकते हैं। बरगा नदी को उसके मन की सभी बातों का पता है। इसीलिए बरगा के आगे रोते बैठा था। इतना बड़ा दुख शराब पीकर भूलना ठीक नहीं है। और भूलेगा भी क्यों? याद रखना ही पड़ेगा।"

दिलीप सोरेन ने उसका हाथ पकड़ा था। कहा था, "चलो रतन, घर चलो। कई काम करने हैं। तुम हम लोगों के सिरमौर हो, तुम्हारे बैठे रहने से काम नहीं चलता। घर चलो।"

फुटुर-फुटुर की आवाज़ हो रही थी।

"यह क्या है?"

रतन चौंक पड़ा था।

"फरई भुना रहा हूँ, लो फरई, प्याज लो।"

फरई और प्याज खाते हुए रतन घर लौटा था। गाली देकर बोला, "हरामी ने नौकरी पाकर भी नौकरी नहीं की। सुनकर सामन्त गरम हो रहा है।"

दिलीप ने कहा था, "मिर्च लोगे? फरई के साथ मिर्च न होने पर मज़ा नहीं आता? लो, लो न!"

---

1. मयाजी पर बाजा।

वे लोग गाँव लौट गये। बहुत दिन बीत गये। वक़्त कैसे बीता, रतन कह नहीं सकता। शायद पश्चाताप में, या ग़लती के अहसास में। सामन्त ने एक काम किया। जब जागुला में देहाती हस्तकला की प्रदर्शनी हुई थी तो उसने लड़कों से कहा, "उचित मूल्य पर चीजें बेचनी पड़ेंगी ताकि ग्रामीण कारीगरों को पैसा मिले। और चरसा के रतन डोम से कहो कि डोमों से बाँस और बेड़े का एक देखने लायक़ प्रदर्शनी-कक्ष तैयार करायें। कच्चा माल लायें। रस्सी-वस्सी तुम लोग दो। रुपये का आधा पहले ही थमा दो, बाक़ी आधा काम पूरा होते ही दे दो।"

रतन ने सोचा था कि काम नहीं करेगा। मगर दिलीप, गौर, कदम के साथ जागुला का चक्कर लगाया गया और रतन से कहा गया कि "दस-पन्द्रह लोग मिलकर घर खड़ा करो। बाँस काटने और चीरने के लिए बीस लोगों को लो।"

"सामन्त बाबू कितने रुपये देंगे?"

"यही समझो, चार हज़ार रुपये।"

"क्या कहता है तू?"

"चार हज़ार।"

"हाँ, देगा हम लोगों को।"

"दें तो करोगे?"

"देने दो। रुपया देखें पहले।"

रतन ने रुपया देखा था। उन बीस लोगों ने मिलकर ही सारा काम किया था। हाँ, चार हज़ार रुपये ही मिले थे। दो-दो सौ रुपये एक आदमी को। बड़ी ही आश्चर्यजनक बात हुई थी।

घर की शोभा ग़ज़ब की थी। कत्तील डोम ने कहा था, "माँ का मन्दिर उतार दूँगा आँखों के सामने।"

बासुली मन्दिर कांकड़ासोल की सीमा पर है। बड़ा ही ख़ूबसूरत मन्दिर है। कलस पर कलस, दोनों ओर दो पत्थर की दो नावें। उन नावों में चढ़कर ही बासुली देवी अपनी सखियों के साथ सैर करते हुए, आसमान के रास्ते तैरती हुई यहाँ आकर टिक गयी थी। देवी के आदेश से भुईयाँ राजा ने यह मन्दिर बनाया।

रतन आदि ने इस परिचित मन्दिर की नकल में ही माँ देवी का घर खड़ा किया। कर्त्तोल के निर्देश से। बाँस और टट्टरों से बना विचित्र मन्दिर। छोटे-छोटे बल्बों की मालाएँ ओढ़कर मन्दिर झिलमिलाने लगा। बहुतों ने बहुत तारीफ की उसकी। बेशक मोतीबाबू बोले थे कि "तुम लोग तो सिर कलम करने वाली पार्टी के आदमी हो। यह सब काम भूले नहीं हो, देख रहा हूँ। अब क्यों नहीं करते यह काम ?"

रतन के मन की प्रसन्नता दूध की तरह फट गयी और उसका मन गुस्से से भर गया था। उसने कहा था, "कराओ तो सही।"

"जो कराता हूँ वह हर वक्त करता है क्या ?"

"क्यों नहीं ? भूखा रखते हो, भूखा रहता हूँ। काम रहते हुए भी काम न देकर जान से मारते हो, मरता हूँ। और रुपया देकर काम कराने पर काम करता हूँ। तुम लोग तो अभी भी भगवान हो।"

मोतीबाबू की बात से चिढ़कर रतन आदि चले आये। उसके बाद जागुला में बहुत-से उत्सव, बहुत-से पंडाल बने।

लेकिन रतन और उसके साथियों को फिर बुलावा नहीं आया।

"मदद नहीं मिलती है बाबू, मदद नहीं मिलती। पहले राजा-जमींदारों ने त्योहारों पर कितनी तरह की चीजें बनाने के लिए बयाना दिया है, हमने बनाया है। देसी चीजों से मदद नहीं मिलती, इसीलिए बना नहीं पाता, बाबू ! तुम लोगों का तो अब रोज नया-नया पर्व होता है। सभाओं का भी अन्त नहीं है। देसी चीजों से इन्द्र-सभा का लिबास ! तुम लोग भी मदद नहीं देते। हम लोग जो कुछ जानते हैं, लड़कों को नहीं सिखाते। सिखाने में क्या लाभ ? डाला, कुला, चंगाड़ी और टोकरी बनाना सिखाता हूँ।

"जागुला में धरमराज का मेला लगता है। हम लोग धरमराज की ध्वजा ढोकर ले जाते हैं। मयूर, मछली, हाथी—तरह-तरह के ध्वज बनते हैं। उन ध्वजों को देखकर कितनी तारीफ करते हो तुम लोग, फटाफट तसवीरें खींचते हो। मगर मदद नहीं देते। ऐसी तमाम बातें किसकी व्यवस्था में हो रही हैं ?"

रतन इसी तरह बातों का जाल बुनता चला गया। तभी इन्द्र को

अचानक शक हुआ। उसने कहा, "रतन-दा ! तुमने क्या बहुत दिनों के बाद भर-पेट भात खाया है ?"

रतन दुर्बोध हँसी हँसा, "क्यों ? सोचते हो कि भात के नशे में बातें कर रहा हूँ ?"

"हाँ।"

"समझे नहीं ?"

"क्या नहीं समझा ?"

"क्यों यह बात कह रहा हूँ।"

"क्यों ? तुम ही बताओ।"

रतन फिर घुटी-घुटी हँसी हँसा। कहने लगा, "साले, तुम्हें समझाना चाह रहा था कि पार्टी का काम चरसा में बैठकर करो। देखो, हम किसी भी सरकार के साथ झगड़ा नहीं करते। 'नक्सली' नाम भूल जाओ। उन लोगों के साथ हम लोग क्यों शामिल हुए थे, किस दुख के कारण, उसे देखो। दुख के कारणों को मिटा दो न, बस ! हम लोग जान लड़ा देंगे। जो आदमी दुख में साथ रहेगा, उसे मदद दूंगा। इतनी बातें यूं कह रहा हूँ, ताकि मुझे पहचान लो। अगर मेरी नहीं सुनोगे तो मुझे जानोगे कैसे ?"

"कहो, सब सुन रहा हूँ।"

"भात के नशे में नींद आती है, बात नहीं।"

"क्या पता, कई दिनों से भात खा रहा हूँ।"

"यह कैसी बात हुई ?"

"रोटी और प्याज खाता था।"

"ओह, कब ?"

"बहुत सालों से।"

रतन बहुत ही परेशान हुआ। कहने लगा, "जेल में भात नहीं देते ? जेल में तो रहे हो।"

"हाँ देते थे।"

"रोटी और प्याज। वहाँ चावल नहीं मिलता ?"

"मिलता है। लेकिन पकाये कौन ?"

"बाबू ! अन्न लछमी है। चावल था। चाहते तो खा सकते थे। खाया

नहीं। इसीलिए भात का दुख नहीं समझते। भात के मर्म का पता नहीं लगता। इसीलिए कह रहे हो कि भात के नशे में डोम बक रहा है।"

"आगे कहो रतन-दा, रात बढ़ रही है।"

सदानन्द ने गला खँखारा और कहा, "मैं सो रहा हूँ बाबू, मेरी आँखें मुँदनी आ रही हैं।"

रतन ने कहा, "धत्त साले को!"

"तुम जाग सकते हो, मुझ में ताकत नहीं है।"

सदानन्द लेटते ही सो गया। धुँधली लालटेन की ओर देखता हुआ रतन जाने क्या सोच रहा था। उसके बाद कहने लगा, "इतनी बातें कहने में क्या फायदा? एक और बात बताऊँ? उस मामले में दीनू जैसे बहुत-से मज़दूरों के, बहुत सच्चे लड़कों के मन टूट गये थे। और जिसका मन टूटता है, वही नक्सली बनता है। यह भी कोई बात है, बाबू? तुम्हारी पार्टी और नक्सली और कांग्रेसी—इनके बाहर क्या और कोई नहीं है? इनके बाहर भी अनगिनत लोग हैं। मुकुल बाबू किसी दल में नहीं थे, आज भी नहीं हैं।"

मुकुल वकील की कहानी या उसका अनुभव बहुत ही अहम है इस प्रसंग में। वह अनुभव सुनकर ही इन्द्र निर्णय ले सका था।

"बाढ़ और बाढ़ के बाद बहुत दिन बीत गये। प्रशासन में बदलाव आयेगा, डोमों की यह उम्मीद ही बुझ गयी थी। सब-कुछ पहले जैसा ही चल रहा था। पहले से कुछ बुरा ही चल रहा था। या शायद अच्छा। असल में बुरा-अच्छा कुछ भी नहीं है, इन्द्र बाबू। एक चीज राम के लिए अच्छी है तो वही श्याम के लिए बुरी। रतन की उम्र कम तो नहीं है। 'नारायणी' सिनेमा-हॉल जहाँ बना है, देखा है वह? नहीं देखा? देख आओ। बहुत ही भड़कीला हॉल है वह। उसके आगे रतन का लड़का, अभागा मानो डोम रिक्शा लेकर खड़ा रहता है। बाबू, चप्पलों के रंग कितने हैं, बाल के कितने फ़ैशन हैं।

"अब जहाँ 'नारायणी' सिनेमा-हॉल देख रहे हो, वहाँ घना जंगल था। जागुला का नाम था भुइँयाँ जागुला। जागुला को उन दिनों भी शहर कहा जाता था, मगर छोटा। शहर बहुत देखा है रतन डोम ने। अब जहाँ हाट-

वे वस-जंक्शन है, वहाँ हाथी देखने आते थे। वहाँ भुईयाँ-राजाओं का हाथी चरता था। वँसवारी थी, हाथी कच्चे वाँस की डालें-पत्ते खाता था।

"अच्छा किसे कहते हो और बुरा किसे, वावू? अव पुलिस वाले सामन्त-वावुओं के दामाद वने हुए हैं। पुलिस वालों के शरीर पर खरोंच लगते ही वावुओं की आँखों से आँसू गिरने लगते हैं। पार्टी के लड़कों को उस समय दनादन मारती है पुलिस। पार्टी के सभी लड़के फ़िलहाल निताई-गौर वन गये हैं। सव-कुछ भूल गये हैं। वे लोग ही दीवार पर लिखते हैं: पुलिस पर ज़ुल्म-अत्याचार मज़वूत हाथों से रोकना पड़ेगा।

"इसमें पुलिस का भला है। पार्टी के लड़कों का भला है या बुरा—यह रतन नहीं जानता। लड़के निरे वेवकूफ़ हैं, उनमें सोचने की ताक़त नहीं है। देखने की आँखें और सोचने का दिमाग़ पार्टी के पास गिरवी रखा हुआ है, रतन यही मानता है।

"पुलिस के लिए भला है घूस लेना। पुलिस घूस ले रही है। ग़रीव की पिटाई कर रही है, चोर-वदमाश-लुटेरों-छिछोरों के गिरोह, मस्तान-ठग सवको मदद दे रही है।

"यह चीज़ रतन-जैसे लोगों के लिए बुरी है। क्योंकि वे लोग पीटे जा रहे हैं। सभी चीजों में ऐसा ही है, वावू! गौर, कदम, रजत, दीनू जैसे लड़कों के सीने पर पत्थर-सा वोझ वढ़ रहा है। वे लोग गाड़ी पर घूमने वाले, काला चश्मा पहने और कलाईघड़ी की ओर नज़र रखते हुए भाषण देने वाले नहीं है। 'कामरेडो! दोस्तो! वन्धुओ!' कहकर दो मिनट के भाषण में इलाक़े की सभी पुरानी समस्याओं का समाधान सुझाने वाले पार्टी-वावू नहीं हैं। वे लोग पैदल चलने वाले कैडर हैं। लोगों का सामना करना पड़ता है उन लोगों को।

"जागुला अभी भी ठेकेदारों, कालावाज़ारियों और मस्तानों के चंगुल में है। चीजों की क़ीमतें वढ़ रही हैं। दवाएँ नहीं मिलतीं। परमिट पर किरासिन नहीं मिलता। यह सव रतन-जैसे लोगों के लिए वुरा है। अच्छा किन लोगों के लिए है, यह इन्द्रवावू, आप खुद ही समझ लो।"

"यह तमाम किसके इशारे पर हो रहा है?"

"वहुत दिनों से रतन उसी आदमी को खोज रहा है, जिसकी व्यवस्था

में यह तमाम बातें हो रही हैं, होती जाती हैं। उसके पागलपन की बात बनाई दुद्दु को पता थी। वह गंभीरता से उसकी सारी बातें सुनता था और कहता था, 'यह भला कोई बात हुई? उसका पता मुझे मिला है। उसी का तो मुकाबला कर रहा हूँ।'"

"बर्गाई की बातें रहने दो। इन्द्र ये तमाम बातें नहीं समझेगा। अभी मुकुल बाबू की बात सुनाओ।"

मुकुल मौतिरा इस शहर के धाकड़ वकील हैं। नहीं, काली मौतिरा के कोई नहीं लगते। याद आया इन्द्र को? वही जिसके मकान के फाटक के सिरे पर पूँछ हिलाते शेर हैं सीमेंट के। मुकुल मौतिरा के बाप विश्म मौतिरा ने मकान बनाया, फाटक पर शेर बैठाये। मुकुल मौतिरा बड़ा वकील है। जमीन सम्बन्धी क़ानूनों को बहुत अच्छी तरह समझता है। बीच-बीच में जाने क्यों, रतन को इसकी वजह नहीं पता, मुकुल बाबू एकदम निचले क़तार की पार्टी का केस लेते हैं। जैसा कि मोहनचाँद बागड़िया बनाम उद्धरण मुंड माली का केस। केस में उद्धरण ही जीता था। उसके बाद हालाँकि, उद्धरण को रुपये देकर बागड़िया ने उस विवादास्पद जमीन पर कब्जा कर लिया था।

इस साल की बाढ़ के अनुभव के बाद रतन ने भूल कर भी नहीं सोचा था कि उसका बुझा मन फिर किसी कारण से उत्पन्न उठेगा। मगर अचानक शहर के एक मोड़ पर, अदालत तथा म्युनिसिपल दफ्तर की दीवार पर, बस-जंक्शन के मोड़ पर—सभी दर्शनीय जगहों पर बड़े-बड़े होर्डिंग लग गये। ऑपरेशन-बर्गा को सफल बनाने के लिए आम जनता को आगे आने के लिए कहते हुए मोटे-तगड़े काले हरफ जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। 'बर्गादार' शब्द की लिखावट देखकर ही पता चलता है कि इन्हें लिखने का ठेका किसे मिला है। शोभन पटनी ही इस शहर के इस शासन से उस शासन तक सबसे सुर्वोले होर्डिंग लिखते हैं अपने 'कपालकुण्डला आर्ट स्टूडियो' में।

शोभन के बाल घुटने तक लम्बे हैं। जब-तब स्टूडियो के सामने कुर्सी लेकर बैठा बाल सुखाता है। कहता है, "हमके पुरखे अभिराम पटनी छह फुट लम्बे थे और उनके बाल एड़ी तक लम्बे थे। शाम के वक्त समुद्र के

किनारे वे बाल सुखा रहे थे और उन्हें देखकर ही बंकिमचन्द्र ने कपाल-कुंडला के बालों का वर्णन किया था।" इस कहानी के सच-झूठ के बारे में किसी ने जांच-पड़ताल नहीं की। शोभन हालांकि रवीन्द्रनाथ को अपना रिश्तेदार कहता है। कुछ भी हो, उसके मकान का नाम 'रवीन्द्र कुंज' और स्टूडियो का नाम 'कपालकुंडला' और साइकिल का नाम है 'धर्मेन्दर'।

शोभन ने ही धर्मराज के मेले में रतन से कहा था, "इस बार सभी राजा हो जायेंगे। जमीन मिलेगी।"

रतन ने कहा, "सिर्फ़ जमीन? घरद्वार, खलिहान, बगीचा, गाय-गोरू वगैरह नहीं मिलेगा?"

"नहीं मिलेगा मतलब, जरूर मिलेगा। इस बार सभी सालों की बेनामी जमीनों को खास करेगी सरकार और बांट देगी तुम लोगों को। और जितने लोग बर्गा करते हैं, सभी का नाम रिकार्ड होगा। लो, हटो अब, मैं जरा दंडवत करूं।"

शोभन पड़ंगी साल-दर-साल धर्मराज के सामने आकर, खंभा घेरकर दंडी काट-काट कर दंडवत करता है। उसके बाद ठाकुर उस पर सवार होता है और बाल खोलकर नाचता है। और, उस समय वह बहुत तरह की बातें करता है।

शोभन पड़ंगी के कहने से रतन-जैसे लोग उस प्रसंग को उतना महत्व (नहीं दे)ते। मगर हाट-बाजार-सड़क—सभी जगह बात धीरे-धीरे सुनायी पड़ने लगी।

उसके बाद चरना के जाने-पहचाने लोग आये—गौर, कदम और दीनू। उन्होंने कहा, "जो सुना गया है, वह सच है।"

रतन ने गौर कदमा क्यों माने? पर जली हुई गाय है वह। उसे अच्छी तरह पता है कि जिसे देख वह डरता है वह लाल मेघ नहीं, आग है। ... का जीवनदर्शन बहुत ही साफ़ है। सबका देखने पर डरो। और जब ... रहे हों कि चारों ओर अच्छी-अच्छी तरह-तरह की हवाएं बह ... डरना डरो। अन्तहीन दुखी जिन्दगी में बड़ी विपत्तियां दोस्ती के ... में हाज़िर होती हैं। अचानक सरकार ग़रीब-दुखियों के बारे में ... रही है? जरूर कोई बम्बू आ रहा है।

मदन ने कहा, "नहीं, नहीं। देखना न इस बार !"

"क्या दिखाओगे, बेटे ? तुम लोग जो दिखाने जा रहे हो बार-बार, दिखा पा रहे हो क्या ? नहीं दिखा पा रहे हो।"

"अरे, सारी जमीन निकलेगी।"

"कैसे ?"

"तुम हम लोगों पर भरोसा रखते हो ?"

"हाँ, रखता हूँ। तुम लोग तो सच्चे हो।"

"तभी समझो। हम लोग लिस्ट बनायेंगे।"

"हिसाब-किताब ?"

"कानूनगो हम लोगों की उम्र के लड़के हैं। उन्होंने कहा है, 'आप लोग बोलिये, कोई खतरा नहीं आयेगा। मैं सरकार के रिकार्ड से सब निकाल लूंगा। सरकार की खास जमीन जो कोई भी गैरकानूनी ढंग से रखता है, वही जमीन मैं बाँट दूंगा। जहाँ बर्गा रखते हैं, उनका नाम रिकार्ड पर चढ़ा दूंगा।"

"खतरे की बात क्यों कही ?"

"नहीं कहेगा ?" दीनू ने आग्रह से कहा, "उन लोगों को खतरा है। जो इतने दिनों तक गैरकानूनी जमीन पर कब्जा रखता है, वह उसे छोड़ देगा ? जोतदार किसी से भी नहीं डरता। इतने जमाने से नहीं डरा। इस बार समझेगा, हाँ ! किसके साथ लड़ रहे हैं ?"

कौन कितनी जमीन रख सकता है सिंचाई और गैर-सिंचाई इलाके में, रतन ने काली मांतरा से इस बारे में बहुत बार सुना है। काली मांतरा ने अपने अखबार के लिए बहुत सारे गाँवों को नापा था। रतन कहता था, "तुम्हारा काम बालूचर में धान रोपने जैसा है। बहुत मेहनत करते हो, मगर फल कुछ नहीं होता।"

कालीबाबू उस समय कहता था, "होगा, होगा।"

"मेरे मरने पर ?"

"अहा, तेभागा का क़िस्सा सुनो।"

"क़िस्सा सुनकर क्या करूँगा, बाबू ? हमारे पेट का तो एक हिस्सा भी नहीं भरता !"

[illegible]नक कहा था, "सदर गाँव में तुम लोगों के मोतीबाबू के [illegible] ज़मीन है। पाँच घर काउरा वर्गा करते हैं। वह ज़मीन भी [illegible] उसका वर्गा रिकार्ड होगा ?"

[illegible] के लड़के गौर और कदम, बाबुओं के चरवाहे का [illegible] हो गये थे। उसके बाद दृढ़ विश्वास के साथ कहा, "ज़रूर होगा। होना ही पड़ेगा।"

"अच्छा, बहुत अच्छा।"

"ताऊजी ! तुम्हें साथ-साथ रहना पड़ेगा।"

"क्यों ?"

दीनू और उसके साथियों ने कहा था,"रतन के न रहने पर कोई बड़ा काम नहीं किया जायेगा।" क़ानूनगो अफ़सर, अजय मजुमदार ने अपने अनुभव की बात कही है। वर्गादार ज़मीन का मालिक होगा, यह क़ानून बहुत दिनों का है। मगर कभी भी उतनी कड़ाई से लागू नहीं किया गया। 1976 में किसी-किसी जगह क़ानून के मुताबिक़ काम करने पर वम्बू आया। उस वक़्त तरह-तरह की असुविधाएँ दीख पड़ीं।

वर्गादार ही कहता कि वह वर्गा नहीं करता।

क्यों कहता ?

उसे बचाने के लिए क़ानून है, यह बात कहकर कोई लाभ नहीं है। क्योंकि उसे लड़ना पड़ेगा ज़मीन के मालिक के साथ। ज़मीन के मालिक के चाहने पर हाईकोर्ट तक मुक़दमा खिंच सकता है। वर्गादार के पास अमूमन मुन्सिफ़ की अदालत तक जाने का पैसा नहीं जुटता। कुछ क्षेत्रों में कोई-कोई काफ़ी सम्पन्न लोग भी वर्गादार बन बैठे हैं। उन्हें पता है कि कभी-न-कभी वे ज़मीन के मालिक बनेंगे। ऐसे केस हालाँकि हज़ारों में नहीं हैं।

वर्गादार क्या अपना हित नहीं समझता ? ख़ूब समझता है। समझकर भी कहता है कि वह वर्गा नहीं करता।

क्योंकि वर्गादार को पता है कि सरकारी क़ानूनगो उसका नाम लिखाकर, क़ानून के मुताबिक़ भरोसा देकर भाग जायेगा। उसी समय उसे ज़मीन-मालिक के गुस्से का सामना करना पड़ेगा। सारी ज़िन्दगी

रहते हैं, बाढ़-अकाल में जिनसे उधार लेना पड़ता है, उसे नाराज करेगा ?
जियतं ने छोड़ूँ, मारने पर मरूँ, बवाल है भाई हरि !

इसी वजह से ही, सरकारी जमीन के गैरकानूनी भोक्ता होते हैं -- जोतदार। उनके पंजे से जमीन निकाल कर भूमिहीन को देने पर, परिणाम में वह भूमिहीन जोतदार के गुस्से में पड़ेगा।

क्या इसी से इतने दिनों तक, कोई भी भूमि-कानून लागू नहीं हुआ, इसी वजह...?

इन सबको लागू करने का उत्तरदायित्व कानूनगो का है।

राजनीतिक दबदबे से ताकतवर जोतदार लोग मंत्री-न्यायाधीश-थाने का इस्तेमाल करते हैं। कानून को ठेंगा दिखाते हैं, कानूनगो की परवाह नहीं करते।

बर्गादार तथा खेत-मजदूरों के मन में डर एकदम गहरे तक बैठ गया है। इसीलिए उनमें भी आगे बढ़ आने का भरोसा नहीं। सरकारी कानून उन्हें नहीं बचायेगा, यह उन्हें पता है। इसीलिए चुप रहते हैं और मार सहते हैं।

इस बार लग रहा है कि सरकार कुछ करना चाहती है। अच्छी बात है। अजय मजुमदार घूस नहीं लेता। काम नहीं देखेगा अगर साथ न साथी के सहारे रहे। और, सबसे जरूरी यह आस्था लोगों के मन में उपजाना है कि सरकार इस बार कानून लागू करेगी। प्राथमिक स्तर का काम है। लोगों की जिस पर आस्था है, ऐसा व्यक्ति अगर यह बात उन्हें समझाकर तो काम बने।

उसके बाद अगर वास्तव में किसी ताकतवर व्यक्ति की बेनामी जमीन निकाल कर लोगों में बाँट दी जाये और बहुत-से बर्गादारों के नाम रिकार्ड पर चढ़ा लिये जायें तो किया फ़र्क समझेंगे। वह दशा पायेगा कि लोग सरकार पर आस्था रखते हैं। आगे बढ़कर साथ देने लगते हैं।

ऐसी बहुत-सी बातें दीनू और उसके साथियों ने स्वयं से कहीं। अजय मजुमदार क्यों, इनके जैसे बहुत-से अच्छे सेटलमेंट कानूनगो, या सेट्-लमेंट कानूनगो, जूनियर या जे० एल० आर० ओ० आदि—सन् 1969 के बाद से जितनी नौकरी अलग-अलग स्तरों पर भिन्न-भिन्न रूप से

में गिनी जा रही है, वे सभी खुश हुए।

इस बार लग रहा है, कुछ होगा।

इससे पहले किसी भी सरकार ने काम करना नहीं चाहा।

इस बार जोतदार लोग डरे हुए हैं।

इतने दिनों में पुराने अन्याय का फ़ैसला होगा।

ऐसी तमाम बातें चल रही हैं, चलती रहती हैं। और पुराने दिनों के ऐसे तमाम पार्टी-कार्यकर्ता, तमाम भूले-बिसरे लोग इतने दिनों के बाद जाने कहाँ से आ धमके, जो इस ज़माने में निष्क्रिय हो गये थे।

नगेन माइती भी आया जो चालीस के दशक के बाद काकद्वीप के आंदोलन में गया था। आये शशी बेटा। वही जो तीसरे दशक से किसान आंदोलन चला रहे हैं।

"क्यों रतन, पहचान रहे हो?"

"यह क्या, शशी बाबू? कहाँ रहे?"

"मर गया था, कह सकते हो। कितनी हँफनी चढ़ी है रे बाबा! समाचार सुना तो सोचा, जागुला जाते हुए चरसा हो आऊँ। रतन हुआ तो पहचान लेगा। वह नगेन को भी पकड़ लाया था। अकेला चल-फिर नहीं सकता, भैया।"

"जागुला क्यों जा रहे हो?"

दोनों को एक ही परेशानी है। मुँह खोल ज़रा साँस लेकर शशी बाबू ने कहा, "मेरा नाती, उसका लड़का, सब बर्गा करते हैं न? नाम रिकार्ड होगा, सुन रहा हूँ। इसीलिए सोचा कि चलकर ज़रा पता लगा आऊँ। होने पर ज़रा निश्चित हो सकता हूँ। तीन-चार महीने का धान मिलेगा। बाक़ी महीने? जो मिले...।"

पुरानी बातें रतन के सीने में उफान मार रही थीं। यह सभी लोग किसी समय किसान सभा के स्तम्भ रहे हैं। पार्टी का नाम सभी लोग नहीं भुनाते। इन्होंने नहीं भुनाया। आज हक़ पाने के लिए जागुला जा रहे हैं।

रतन ने कहा था, "तुम लोगों के पेट में डोम का बहुत भात है। आज भी रहे। कल हाट जाने वाली गाड़ी पकड़वा दूंगा, चढ़कर चले जाना। आज रात-भर यहीं रहो।"

भात, मैमारी दाल की चच्चड़ी, भुनी हुई मिर्च। भात खाकर शशी बाबू बहुत दिनों के बाद वर्गा रिकार्ड की संभावना से चिन्तामुक्त होकर तेभागा की बातें बता रहे थे। बोले,"यह बातें अब कोई नहीं कहता, भाई। और वर्गा की माँग पर जमीन का मालिक हल, बैल, खाद, बीज देने पर अधिया, न देने पर बारह आने और चार आने पर भी नहीं टिकता। कुछ भी नहीं देता, आधी फ़सल ले लेता है। इसीलिए तीन हिस्से का तेभागा कहाँ? आधा हिस्सा, दो-भागा है अब। चलो, यही सही। सोचा, यही देख जाऊँ।"

रतन ने कहा, "तुम लोग उस समय जो कुछ कहा करते थे कहा और बमाई जो संथाल विद्रोह की बातें करता था—वे सभी बातें अब किसे पता हैं? जागुला से जात्रा देखकर लौटने वाले लड़के कहते हैं, 'जानते हो रतन काका! सथाल लोग गोरों के साथ लड़े थे।'"

"इसी तरह की बातें फैली थीं, बाबूजी! हर समय हम पेट के लिए भात, सिर के लिए तेल, शरीर ढाँपने के लिए कपड़ों की चिन्ता में डूबे रहते थे। मगर वर्गा-रिकार्ड के तामझाम में वे सभी चिन्ताएँ राख की तरह कहाँ उड़ गयी थीं। हम सोचते थे कि हमारी जो मर्यादा है, उस आत्म-मर्यादा को जगाने की कोशिश ही तो सभी सच्चे कार्यकर्ता कर रहे हैं। उस समय उसी मर्यादा का स्मरण कराने के लिए हमारी जानी-पहचानी लड़ाइयों की चर्चा की जाती थी। बमाई लड़ा था, खेत-मजदूरों पर जुल्म का बदला लेने के लिए। उसने कहा था, 'बर्गादारी की लड़ाई में, तेभागा में खेत-मजदूरों ने अपना खून दिया है।' हम लोगों ने सोचा कि आज अगर वर्गादार को न्याय मिला तो कल खेत-मजदूर को मिलेगा।"

इस आस्था से ही रतन आगे बढ़ा था। दिलीप सोरेन और उद्धव काउरा से भी उसने पूछा था। उसने कहा था, "दीनू, कदम, गौर, रजन सभी निहायत ही सच्चे लड़के हैं। ये लोग तुम लोगों से जो कुछ कह रहे हैं, वैसा अगर हुआ तो बहुत अच्छा रहेगा, हम लोग मदद करेंगे।"

उन्होंने मदद की थी। दिलीप अपनी साइकिल पर रतन को लेकर कितना घूमा था! रतन को ले गया था दिलीप, और दीनू और उसके साथी साथ-साथ घूमे थे।

"इन्द्र बाबू ! सुना आपने ? दिलीप सोरेन और उद्धव काउरा ने तुम लोगों के देहात के स्तर के किसान कार्यकर्ताओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर बर्गादारों के मन में भरोसा जगाया है। सामन्त-बाबुओं ने मदद का हाथ पहले ही झटके में हटा लिया था। उसके बाद नाम के आगे 'नक्सल' ठप्पा लगा दिया। ग़ौर किया आपने ?"

"चरसा में रोतोनि साऊ खेत-मजदूरों से खेती कराते हैं। हम लोग भी करते हैं। क्या मिलता है, यह मत पूछो। मगर भूषण हाँसदा, चिकू हाँसदा, ब्रज काउरा, उत्सव काउरा बर्गा खेती करते हैं। उनके बापों ने भी यही काम किया है, वे भी करते हैं। ज़मीन ? चार बर्गादार, तीन हिस्सों में। परिमाण बारह बीघे, तीन हाथ, सात अंगुल। लिखा-पढ़ी पक्की की हुई है। इसमें अब ग़लती नहीं होती।"

रोतोनि अब बड़ी जमीनों का मालिक है। बाकुली का जोतदार सूर्य साऊ उसका बड़ा भाई था। सूर्य साऊ को बसाई-लोगों ने काट डाला था। सूर्य की पत्नी-बच्चे अब सदर शहर में रहते हैं। 'सूर्य बस सर्विस' की तीन बसें चलती हैं, पेट्रोल पम्प है। वे लोग जोत-जमीन की आमदनी लेते हैं, मगर देख-भाल नहीं करते। फलस्वरूप रोतोनि ही सर्वेसर्वा हैं।

अजय मजुमदार ने चरसा की इस जमीन पर बर्गा रिकार्ड करने का इंतज़ाम किया। उसने कहा था, "रोतोनि चूंकि बड़ा जोतदार है, इसी-लिए उसकी ज़मीन पर बटाईदार दर्ज होने पर लोगों के मन में यह बात प्रेरणा का काम करेगी। अजय ख़ुद भी दीनू की पार्टी का समर्थक है।" फिर उसने बात आगे बढ़ायी, "चरसा गाँव को लेकर बहुत बातें हुई हैं। वहाँ के निवासी समझते हैं कि पार्टी की निगाह में वे लोग अभी भी विश्वास के क़ाबिल नहीं हैं।

"वैसे माहौल अच्छा नहीं है। इसीलिए चरसा की मामूली ज़मीनें भी उनके नाम चढ़ गयीं तो चरसा के लोगों के मन में प्रशासन के प्रति आस्था लौटेगी। बहुत ही ग़रीब, बहुत ही उपेक्षित गाँव है। इस सरकार ने भी चरसा-निवासियों की विविध समस्याओं के समाधान की कोशिश नहीं की। केवल नये पुलिस-थाने के मातहत लाया गया है इस गाँव को।"

रतन ने कहा, "ठीक है। वैसा ही करो, बाबू। अपनी आँखों से देख तो

लूं। मयाल और काउरा लोगों को जब पता चलेगा कि जमीन पर उनका हक हो गया है तो उस समय उनकी छाती चौड़ी हो जायेगी। यह काम तुम जरूर करो, बाबू! उनकी फूली हुई छातियाँ जरा अपनी आँखों से देख तो लूं।"

और इन जमीनों के विषय में अध्ययन-अनुसंधान करते हुए अजय मजुमदार ने एक आश्चर्यजनक सच्चाई का सामना किया।

वह जब अपनी खोज में जुटा हुआ था तो उस समय रोतोनि का गुमाश्ता भूषण, चिकू, ब्रज और उत्सव आदि कई लोगों आगाह कर गया, "तुम लोग बर्गा करते हो, रिकार्ड में दर्ज है यह सब?"

"बाबू ने रसीद नहीं दी?"

"रसीद दी है क्या?"

"क्या कहते हैं? तुमने रसीद दी है। तुम जब कचहरी लगाते हो, धान तोलते हो तो रसीद देते हो।"

"उस रसीद से कोर्ट-कचहरी करके दखल लेगा?"

"सरकार कब्जा दिलायेगी।"

"तुम लोग कुछ नहीं समझे। खेत जोतने से कब्जा होता है? कब से? फिर तो बाबू लोग साल-दर-साल इतने बर्गाओं को क्यों उजाड़ते? नहीं उजाड़ा? उस समय कौन-सी सरकार ने आकर उन लोगों को बचाया? वे अब भी खेत-मजदूर नहीं बने हुए हैं क्या?"

गुमाश्ता चला जाता है। जाने से पहले कह जाता है कि "साऊ बाबू मालिक है। वे देवता है। धान निकाल देता है, रुपये कर्ज देता है। कौन-सा मालिक ऐसा है? मैं तुम लोगों की भलाई के लिए कहता हूँ। जमीन-मालिक के साथ झगड़ा करके कोई नहीं टिक सकता। बात जरा सोच कर देखना।"

भूषण और उसके साथी तभी रतन के पास आये। रतन गंभीर हो गया। हाँ, गुमाश्ते की बात में कड़वी सच्चाई है। भूमि-सुधार कानून की उम्र बहुत है, कानून उस ढंग से कभी भी लागू नहीं हुआ। मगर मालिकों का गुट बना रहा है कि कहीं लागू न हो जाये, कहीं बटाईदार जमीन पर कब्जा न कर बैठें। चरसा की जमीन उपजाऊ है। सूर्य साऊ ने इसीलिए चरसा की जोत से बटाईदारों को धीरे-धीरे कई सालों में उजाड़ा है। जोत

के समय ही आदमी लगाना ज्यादा बुद्धिमानी का काम है।

चाकुली उसका गढ़ है। वहां भी माहिन्दारा, भतुआ, खेत-मजदूर अधिक हैं। चरसा बहुत दूर पर है। एक जमाने के बटाईदार ही आज यहाँ दिहाड़ी पर खेत जोतते हैं। सूर्य अगर जिन्दा रहता तो क्या भूषण वगैरह को उस मामूली-सी जमीन से उजाड़ता? सूर्य मर गया। रोतोनि ने उस गड़बड़ी वाली जगह को और नहीं कुरेदा।

रतन ने रजत को भूषण आदि की रसीदें दिखायीं। देखकर रजत का चेहरा तमतमा गया।

"यही रसीदें हैं?"

"जी हाँ। क्यों रजत? तुमने मुँह काला क्यों किया?"

"रतन चाचा के कहने पर।"

रजत का चेहरा जैसे टूटने लगा हो। "रतन चाचा! इस जमीन में अगर मैंने वर्गा नहीं बैठाया तो मैं अपने बाप का बेटा नहीं। नाम बदल लूँगा या गांव छोड़कर चला जाऊँगा। इसके भाई को काटा है, इसे भी काटने में कोई गुनाह नहीं है। वर्गा हड़पने के लिए रोतोनि साऊ ने चौथे कागज में रसीद दी है। लिखा है, उधार धान का चुकता पाया।"

"स—ब झूठ है।"

"इस रसीद की अदालत में कोई क़ीमत नहीं है, हालांकि हम लोगों को जवाब जरूर देना पड़ेगा। मैं क़ानूनगो के पास जाऊँगा। सारा गांव गवाह है। किसान सभा का कार्यकर्त्ता कहेगा कि यह लोग वाक़ई वर्गा करते हैं तो अदालत यह बात मान लेगी।"

दिलीप सोरेन ने कहा, "ग़लत मत समझना, भाई। रोतोनि की खूंटी में कितना जोर है, यह इसे जानकर आगे बढ़ते तो अच्छा रहता।"

"खूंटी में जोर? कहाँ?"

"इलाक़े के प्रशासन में।"

"कुछ नहीं है। ग़लत प्रचार मत करो, सोरेन। यह कौन-सी सरकार है? यह सरकार जोतदारों की मदद नहीं करती।"

"देखो।"

"हाँ-हाँ, देखूंगा और दिखा भी दूंगा।"

रजत और उसके साथी पहले अजय के पास गये। सेटलमेंट दफ्तर में अजय ने जो कुछ कहा, उससे उनका सीना दस हाथ चौड़ा हो गया।

अजय उस समय एक अजीब-सी खोज की आग में जल रहा था। उसने कहा, "वर्गा रिकार्ड ? यह नक्शा देखिये। ठीक तरह से कार्रवाई की गयी तो इन तमाम जगहों पर इन्हें जमीन का मालिक बना दिया जायेगा। कम-से-कम चौदह-पन्द्रह परिवारों को जमीन मिलेगी।"

"क्या कह रहे हैं ?"

"इस सारे भूखंड पर सरकार का स्वामित्व है। पुराना नक्शा देखकर पता चला है यह। यह जगह किसी की नहीं है। चरमा नदी के पीछे हट जाने से यह जमीन निकली है। नदी या सागर के हट जाने से जो जमीन निकलती है, वह सरकार की होती है, खास जमीन। खास सरकारी जमीन ग़ैरकानूनी क़ब्ज़े में रखना कानूनन जुर्म है। लेकिन इस तरह की खास जमीनें जनता में बँट सकती है। इसी में उन चार आदमियों की जमीनें भी आ रही हैं।"

"फिर ?"

"नाप-जोख होगी पहले।"

रतन ने कहा, "उसने नापने दी ?"

"नहीं, नाप-जोख में कोई बाधा नहीं आयी। रोतिनि माऊ ने कहीं और से बदन दबाना शुरू किया। वह बड़ा जोतदार है। शहर के तीन वकीलों से उसका याराना है। कलकत्ते के वकील ने हाईकोर्ट में केस किया। चतुर रोतोनि केस चलते समय पास-पड़ोस कहीं नहीं गया।"

मन में गहरा दुख लिये वह मोतीबाबू के पास गया। सामन्त नहीं है, नवीनबाबू और मोतीबाबू हैं। रुलाई दबाकर, लम्बी-लम्बी साँसें खींचकर उसने बातें कीं। धर्म-राज्य में रह रहा है रोतोनि। बाढ़ के समय पार्टी-फंड में खुलकर चन्दा दिया है। बसें भी दी थीं, पीड़ितों को निरापद जगहों पर पहुँचाने के लिए। यह तो उसने निःस्वार्थ भाव से किया है। धर्म-राज्य में रहकर क्या यह सब नहीं करेगा ?

मगर बदले में उसने क्या कुछ पाया या पा सकता है ? बड़े भाई की मौत का दुख वह पिछले पाँच सालों से नहीं भूला। इसीलिए जमीन-जायदाद के

मामले को वह अच्छी तरह समझ नहीं पाया। वैसे भी यह मामले वह नहीं समझता। मगर इतना वह जानता है कि चरसा में उसका कोई बर्गादार नहीं है। ज़मीन की खड़ी सीमा? साफ़ उसी के नाम चढ़ी है। पार्टी के लड़के उसके पीछे क्यों पड़े हुए हैं?

नहीं, पार्टी के लड़के बहुत अच्छे हैं। मगर नक्सली दिलीप सोरेन, उद्धव काउरा और रतन डोम कोंचने से उकसाने पर रोतोनि की ज़मीन पर फ़र्ज़ी बर्गादार रिकार्ड करा रहे हैं। उसका क्या होगा? रोतोनि के पास थोड़ी ज्यादा जमीन तो जरूर है। उसे वह झट से अपने नाम कराकर उसमें बर्गादारों का नाम रिकार्ड कराना चाहता है। बोला, 'थोड़ी-सी।' मगर ज़मीन कम नहीं है। फिर भी सौ बीघे तो होगी ही। यह भूखंड बाकुली में है।

अजय की इस ईजाद के घोषित होते ही रोतोनि की दौड़-धूप शुरू हुई। साथ ही रजत और साथी जमीन के मालिकों के नामों की सूची बनाने लगे। उस समय सामन्त ने एक बड़ा काम किया। शहर के धाकड़ वकीलों को लेकर उसने एक पैनेल बनाया। ऑपरेशन-बर्गा से जुड़ी तमाम क़ानूनी छानबीन का काम यह लोग करेंगे। सुकुल सांतरा से कहा, "आप पैनेल के मुखिया हैं। आप जहाँ होंगे, वहाँ ग़रीब बर्गादार को न्याय मिलेगा।"

अजय की नाप-जोख में चरसा में पचहत्तर बीघे, तेरह कट्टे, तीन घुमाऊँ, तीन कनाल और सत्रह हाथ जमीन निकल आयी नक्शे पर। इस पूरी जमीन पर रजत और साथियों ने पार्टी का झंडा गाड़ दिया और संथालपाड़े से औरत-मर्द, डोम, काउरा—सभी लोग खुशी-खुशी से यह दृश्य देखने आये। रजत, दीनू, गौर और कदम के चेहरों पर उल्लास की चमक देखने लायक़ थी। रजत ने कहा, "यह सारी जमीन तुम लोगों को मिलेगी।"

ऐन उसी वक़्त ही रोतोनि की अर्ज़ी पर पुलिस आ गयी। पुलिस ने झंडे को हाथ नहीं लगाया। मगर थाने में जाकर पता चला कि अभी इस ज़मीन को लेकर कुछ किया नहीं जा सकता।

"क्यों?"

लफंगे चेहरे के दरोगा ने गहरी अनास्था से संथालों के काले-काले,

ज़मीन में चिरबिरे चेहरों की ओर देखा और मौखिक परीक्षा में जवाब देने के तर्ज़ पर सुरीली आवाज में चिल्लाकर बोलने लगे, "इस ज़मीन में बखेड़ा है। तुम लोग अभी अपने-अपने घर चले जाओ।"

कदम ने पुलिस को धमकाया, लेकिन दरोगा ने एक ही सुर में कहा, "मुझ पर गुस्सा मत होइये। मैं ड्यूटी के अलावा कुछ नहीं कर रहा हूँ।"

घटना की रिपोर्ट पार्टी-स्तर पर मोनीबाबू से की गयी तो उन्होंने देखा कि सूची से रामेश्वर मुईयाँ और रोनोनि माऊ का नाम हट गया है।

"इसका क्या मतलब है, मोनी-दा ?"

"किसका मतलब ?"

"इलाके में सबसे अधिक ज़मीन जिन लोगों की है, उनका नाम क्यों हटा दिया ?"

"क्या रिकार्ड नहीं होगा ?"

"होगा, ज़रूर होगा।"

"पुलिस क्यों गयी थी ?"

"ज़मीन में झंडा क्यों गाड़ा गया था ?"

"क़ानूनन ज़मीन हमारी है।"

"उसे अदालत देखेगी।"

"नेतृत्व के स्तर पर आप लोग यह सब क्या कर रहे हैं? उन्हें सिर क्यों चढ़ा रहे हैं ?"

"सिर चढ़ा रहा हूँ ?"

"इसमें तो यही मतलब निकलता है।"

"ज़रा रुको, कदम। यह ज़माना नक्सल का नहीं है। क़ानून के साथ हठधर्मिता नहीं चलेगी।"

"असली काम करने के लिए कहो तो कहते हो कि नक्सली हठधर्मिता कर रहा हूँ। नहीं, नक्सली-हठधर्मिता नहीं कर रहा हूँ। पार्टी के लड़के के नाते जनता के प्रति क्या हमारा कोई दायित्व नहीं है ? काम करके ही उस दायित्व का प्रमाण सामने नहीं रखना पड़ेगा क्या ?"

"जाओ, रोनोनि के पास जाओ। बातचीत करके देखो।"

"वह हमारे पास आये। हम लोग नहीं जायेंगे।"

"वह क्या कह रहा है, जानते हो ? वर्गादार अदालत में प्रमाणित करें कि वे वर्गादार हैं। मैं भी अदालत में प्रमाणित करूँगा कि उस ज़मीन पर मेरी भोग-दख़ल का अधिकार है।"

क़ानूनगो दफ़्तर की कोई बात रोतोनि ने नहीं मानी। तभी वे लोग सुकुल साँतरा के पास गये। क़ानूनी सहायता कमेटी का काम सुकुल बाबू ने बहुत ही ज़ोर-शोर के साथ शुरू किया था। उन्होंने ध्यान से सारा केस सुना और कहा कि "इस केस को तरतीब से तैयार करना पड़ेगा। जो लोग वास्तव में वर्गादार हैं, उन्हें गवाहों की मदद से खड़ा करना पड़ेगा, रसीद तो फ़र्ज़ी है। बेनामी ज़मीन को जबरन दख़ल किये हुए हैं जोतदार। ऐसी ज़मीनों को खास करते वक़्त सरकार जोत-मालिक को ही मुआवज़ा क्यों देती है ? चोरी भी करेगा और मुआवज़ा भी लेगा ? ऐसी ज़मीनों के लिए अलग से केस करना होगा।"

"डिक्री मिलेगी ? इज़्ज़त की लड़ाई है।"

"अवश्य मिलेगी।"

केस की तैयारी चलने लगी। उसके बाद एक दिन पता चला कि सुकुल बाबू ने सामन्त और मोतीबाबू से गाली-गलौज करके कमेटी छोड़ दी है।

रोतोनि साऊ ने अपनी ज़मीनें अपने नाम चढ़वा ली हैं और चार लाख रुपये मुआवज़ा भी वसूल कर लिया है और अपने महिन्दा राना नौकर के नाम वर्गा भी रिकार्ड कराया है। सुनकर शहर के सभी लोग चौंक गये। ज़मीन भी बनी रही, क्योंकि वर्गा ही फ़र्ज़ी है। सब उसी के मोहताज हैं। फिर मुआवज़े का रुपया भी आया।

मोतीबाबू और उनके साथियों ने इस घटना को ऑपरेशन-वर्गा की कर्मसूची तैयार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम बताया।

अजय का तबादला हो गया। सरकारी ज़मीन रोतोनि के दख़ल में ही रही। भूषण हाँसदा, चिकू हाँसदा, ब्रज काउरा तथा उत्सव काउरा वर्गा-अधिकार से उजाड़ दिये गये और वे खेत-मज़दूर बन गये।

रतन से रजत और उसके साथियों ने माफ़ी माँगी थी। पार्टी के लिए उनमें सच्चे कैडर सच्चाइयों के नाम पर पार्टी के लिए जान दे सकते हैं।

लेकिन अगर नेतृत्व दुमुँहा नीति अपनाये तो उसके साथ नहीं लड़ सकते।

रतन ने भूषण और उसके साथियों से माफी माँगी।

मंजी बेटा ने कहा था कि पार्टी नेतृत्व की इस बेईमानी के कारण पार्टी टूट जायेगी। कैडरों का मनोबल टूट जायेगा।

"इन्द्र बाबू, रतन ने सभी बातें तुम्हें बता दी हैं। अब बताओ, तुम कैसे काम करोगे? कोई तुम्हें काम नहीं करने देगा। ऑपरेशन-बर्गा में शायद कुछ लोगों के नाम रिकार्ड हुए हैं। मगर रौतोनि और रामेश्वर—पार्टी के दो मददगार किसनवर निकल गये हैं। उनकी जमीन पर बर्गा रिकार्ड नहीं हुआ।"

"इन तमाम चीजों की व्यवस्था कौन कर रहा है?"

बातें सुनते-सुनते इन्द्र ने मन-ही-मन सब-कुछ तय कर लिया। बोला, "तुम लेट जाओ रतन-दा, मैं भी लेटूंगा।"

"कुछ समझे आप, समझे कुछ?"

"बहुत-सी बातें साफ हो रही हैं धीरे-धीरे।"

"यह कानूनगो बहुत चिल्लाता है, लेकिन है सच्चा लड़का।"

रतन ने कहा, "दीनू ने भी आपसे कहा था कि सभी खबरें कानूनगो के पास हैं। मगर कुछ अप्रिय घटनाओं के बाद कानूनगो जैसे अफसर भी घबरा गये। ये लोग काम करते हैं, लेकिन उन पर हमला होने की स्थिति में उन्हें बचाने वाला कोई नहीं।"

"कानूनन जिला न्यायाधीश से मदद मिलनी चाहिए। जाने क्यों ऐसा नहीं होता?"

नये कानूनगो तुषार पात्र ने कहा, "बहुत ही मुश्किल काम है यह, जानते हैं? सब कर सकता हूँ, लेकिन वहाँ एक शीशे की दीवार है, उसे नहीं तोड़ पाता। इसीलिए लगता है..."

"क्या?"

"ऑपरेशन-बर्गा सफल हो, यह क्या कोई चाहता है! अगर चाहते होते तो दादाओं को मजदूर हाथों से हटाया क्यों नहीं जा रहा है?"

तुषार पात्र ने कहा, "पहले सुन लीजिये। फिर समझियेगा। सुन रहे हैं...इस, ऐसी हालत में, मान लीजिये कि.. सुन रहे हैं...न।"

"एक बात। ऑपरेशन-वर्गा का कुछ नहीं होगा, यह जानकर अगर काम करते जायें तो काम कैसे होगा?"

"सरकारी उपदेश दोहराये जायेंगे, और क्या?"

"कौन-से उपदेश हैं वे?"

"हैं, जरूर हैं। मन में आदर्शवाद, सत्यनिष्ठा, दुर्जय साहस होना चाहिए। क़ानूनगो क्या अरण्यदेव हैं? 'क' बाबू ने सरकारी जमीन खुद हड़पकर संथाल के नाम वर्गा लगा रखा है। क़ानूनगो ने उन संथालों को वर्गा रिकार्ड न होते हुए जमीन का मालिक बना देने का प्रयास किया, लेकिन पार्टी-लाइन आड़े आ गयी?"

"वह तो बुरी तरह फँस गया होगा।"

"पार्टी के लोगों को भी पता चला। उसके बाद जमीन का क़ब्ज़ा देते समय लड़कों ने 'क' बाबू के लोगों के साथ मिलकर क़ानूनगो को पीटा। हालाँकि यह कहानी नहीं है। सरकारी कर्मचारी होकर भी क़ानूनगो को पुलिस की मदद नहीं मिली। एस० डी० ओ० ने उसकी अर्जी दबा दी, हालाँकि यह भी कहानी नहीं है।"

"कहाँ क्या हुआ, आगे कहिये।"

"धीरे इन्द्रबाबू, धीरे। मैदान—जंगल—नदी किनारे इस काम के सिलसिले में चक्कर लगाऊँ और नौकरी करते हुए ज्यादा फड़फड़ाकर अपने को दिक़्क़त में डालूँ? आप क्या मुझे बचा पायेंगे?"

"सा—रा अनुभव यही है?"

"वह क्यों? छोटी, मझोली, कमजोर पार्टी होने पर वर्गा रिकार्ड हो रहा है। मगर छोटी जमीनों में बहुत वर्गा बैठाने पर न बटाईदार का फ़ायदा है, न जोतदार का। वैसे बटाईदार खेत-मजदूर बनने के लिए मजबूर हैं।"

"मामला पेचीदा है।"

"जोतदार ने जमीन का दख़ल ले लिया, मुआवजा लिया, फ़र्जी वर्गा रिकार्ड कराया। असल में जोतदार ने जमीन बचा ली। रुपये लेकर वर्गादार—यानी सच्चे वर्गादारों को वंचित किया गया। कैसा लग रहा है यह सुनकर?"

"बहुत अच्छा।"

'क' बाबू ने ठीक वक्त दबाया, इसीलिए उनकी बेनामी ज़मीन पर किसी ने हाथ नहीं मारा, बर्गा रिकार्ड नहीं हुआ। ठीक वक्त नहीं दबा तो 'ख' बाबू की ज़मीन बेदखल हुई और बर्गा बना।

उसने इस तरह की कितनी ही घटनाएँ सुनायीं।

"जोतदार का डर इतना भयंकर है कि कानूनगो को पता है, 'ग' बाबू बर्गा रखते हैं फिर भी सेटलमेंट में बर्गा नहीं लिया सका। लिहाज़ा मौके पर ज़मीन पर हाज़िर हुआ, बर्गादार को बहुत समझाया। उसके बाद भी जोतदार की धमकी पर सभी लोग खड़े हुए। क़ानूनगो बेवकूफ़ बनकर लौट गया। ज़रा इस दृश्य की कल्पना कीजिये...क़ानूनगो पैदल आ रहा है, बर्गादार हवा हो गया।"

"यह डर तोड़ना ही पड़ेगा।"

"कौन तोड़ेगा, मैं? मेरे बाजुओं का मांस देखा है? केंचुए की तरह है। डर कैसे तोड़ूँगा, मैं खुद ही डरपोक आदमी हूँ! भूत का डर, पत्नी का डर, कैंसर का डर, एन्सेफेलाइटिस का डर...हैमिये मन। एक क़ानूनगो अफसर के लिए डर-भय की सीमा छोड़कर बर्गादार के मन से जोतदार का डर दूर करना क्या सम्भव है?"

"कहते जाइये।"

"मान लीजिये कोशिश करके 'अ' बाबू, या 'अ' से 'औ' तक सभी लोगों ने कोशिश की, जी-जान से कोशिश की, फिर भी 'च' से 'ह' को निःशंक नहीं बना सके। 'अ' से 'औ' जब 'च' से 'ह' को प्रेरित करता है तो उस समय यह नहीं कहता कि 'भूलना मत एक दिन तुमने लेभागा किया था।' क़ानून का मामला बार-बार समझाता है। उसके बाद भी 'च' से 'ह' काफ़ी भरोसा नहीं जुटा पाते। क्यों?"

"समझ रहा हूँ।"

"'क' से 'ट' तक ज़मीन-मालिक, दूर-दूर गाँव के वाकई इतना शक्तिशाली है कि 'च' से 'ह' मन-ही-मन सोचते हैं कि 'अ' और 'औ' बाबू लोग तो सरकारी काम पूरा करके चले जायेंगे। उसके बाद? पशुओं के मुँह से इन्हें कौन बचायेगा?"

"और भी बातें हैं क्या ?"

"हैं, हैं, बहुत हैं। कितनी कहूँ ? सारी न भी कहूँ तो क्या ? सबसे आख़िर में अनेक बर्गादारों की बातें याद आ रही हैं। बहुत ही विचित्र मामला है। रिपोर्ट में इसका उल्लेख होना चाहिए। लेकिन नहीं पता कि होगा या नहीं।"

"क्या ?"

"कई क्षेत्रों में बर्गादार भी प्रभावशाली हैं यानी उनकी ख़ुद की भी जमीनें हैं, व्यापार है, आँखों पर काले चश्मे तथा बदन पर टेरिलीन के कुरते हैं। फिर भी जाने कैसे इन्होंने भी बहुत-सी जमीनों पर बर्गादार के तौर पर अपने नाम रिकार्ड कराये हुए हैं। एक आदमी दस लोगों की बर्गादारी जमीन में बर्गादार के तौर पर खेती करेगा नहीं। मजदूर रखकर यह लोग काम करा रहे हैं।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"यही तो असली सवाल है।

"कैसे इसे जड़ से उखाड़ा जायेगा ?"

'मेरा ख़याल है कि जब यह कार्यक्रम हाथ में लिया गया था तो उस समय इन सब बातों का ख़याल रखा गया होगा। मगर हमारे मुल्क में भूमि-व्यवस्था में बर्गादारी रिकार्ड कराने का मतलब आगे चलकर क्या होगा, समझा नहीं जा सका था।"

"तुषार बाबू, अभी तक आपने बातें काफ़ी खुल्लमखुल्ला की हैं। अब अचानक झिझक कैसी ?"

"नहीं, झिझक किस बात की ?"

"डर रहे हो ?"

"डर ? आपसे ? क्यों, आपसे क्यों डरूँगा ? आप तो हमारे ससुराल के रिश्ते के हो—हमारे परिवार के हो। नहीं जानता कि इसे कुटुंब कहा जा सकता है या नहीं। शायद पार्टी-कुटुंब कह सकते हैं।"

दीनू ने कहा, "नगेन मास्टर के भाई की लड़की इनकी पत्नी हैं, इन्द्र-दा।"

"समझा।"

तुषार कह रहा था, "हमारे मुल्क में अब तक अनेकों भूमि-सुधार कानून बने हैं, लेकिन जमीन-मालिकों के हितों को चोट नहीं पहुँची। 'ऑपरेशन-बर्गा' कामयाब हो सकता है, अगर वाक़ई बेनामी जमीनों का पता चलाया जाये, निहायत ही न्यायसंगत दृढ़ता के साथ असली बर्गादार का नाम रिकार्ड किया जाये, खास जमीनों को ग़ैरकानूनी कब्जे से निकालकर बाँट दिया जाये। हर जिले में इस तरह काम करने से लोगों के मन में आस्था जगेगी, उनसे सहयोग मिलेगा। अधिक नहीं, केवल बड़े दस लोगों की जमीनों को लेकर ऐसी कार्रवाई की जाये तो जबरदस्त काम बन जाये। मौजूदा ढाँचे को अक्षुण्ण रखकर भी ऐसा किया जा सकता है, समझे ?"

"समझूँगा क्यों नहीं ?"

"ऑपरेशन-बर्गा इस तरह भी चलता रहे तो बड़ी जमीन के कुछ मालिकों के हितों को चोट नहीं पहुँचती। बेशक लाभ का हिस्सा कम होता है। भूमिहीन बर्गादार को जमीन पर अधिकार मिलेगा, यह बात हवा में फैलते ही जमीनें हाथ बदल रही हैं। जमीन की देखभाल करने के बजाय किरासिन के डिपो और पेट्रोल पंपों का मालिक होना अधिक लाभदायक है। और क्या जानते हैं आप ? जिन लोगों के पास पहले से जमीनें हैं, उनके पास आज भी जमीनें हैं। वही बेनामी जमीनें भी रखे हुए हैं। आज भी खास जमीनों को वही भोग रहे हैं। उनके हितों पर कभी भी आँच नहीं आयेगी। फिर देखिये, 'ऑपरेशन-बर्गा' का जितना प्रचार है, उतना काम हो रहा है या नहीं ? यही सवाल बार-बार मन में उठता है। उस समय लगता है कि हम लोग भ्रष्ट नौकरशाही के बदनाम सदस्य हैं। सभी तरह की सरकारी व्यवस्थाओं से बचकर चलना ही हमारा काम है। क्यों, जानते हैं ? क्यों, कहिये तो ?"

"वाह, मैं तो श्रोता हूँ।"

"मगर आपकी गतिविधियाँ देखकर हम लोगों की भी धारणा बनती जाती है कि कानून बनाया गया है और हम लोगों से कानून के मुताबिक़ काम करने के लिए कहा गया है, लेकिन ऐसा करने की इच्छा किसी में नहीं जागती।"

"कोई भी ऐसा नहीं चाहता ?"

"नहीं जनाब ! 1950 में क़ानून के मुताबिक़ चलने के चक्कर में पी० डब्ल्यू० डी० इंस्पेक्टर सुमोहन पात्र नौकरी से हाथ धो बैठे थे। और अभी उस दिन मेरा बिरादरी भाई अजय मजुमदार का, क़ानूनी हवाला देने के कारण चक्कर में आकर तबादला हुआ है।"

"मतलब क्या निकला, तुषार बाबू ?"

"कुल जमा ?"

"हाँ, कुल जमा।"

"बड़े जोतदार, बड़े किसान, किसके बदन पर कितनी चोट लगी है, पता लगेगा इस बर्गा अभियान में ? किनका नाम रिकार्ड होगा, किनका नाम रिकार्ड नहीं होगा ? देवी-देवता, मृत प्रपितामह, गाय-बकरी, कुत्ते-बिल्ली के नाम बेनामी ज़मीन रखकर भूमि की निर्धारित सीमा के बाहर ज़मीन रखने का धंधा कितने दिन तक चलता रहेगा ?"

"बर्गा के बाद कितनी मदद की व्यवस्था हो रही है ?"

"बैंक से उधार देना, ब्लॉक कार्यालय से बीज-खाद देना तो है ही इसमें। हम लोगों का राष्ट्रीय चरित्र-गुण है ही ऐसा कि हम सब गुड़-गोबर कर देंगे। उधार लूंगा, लेकिन चुकता नहीं करूँगा। ऋण के मामले में तेल-लगे सिर पर तेल डालूंगा, रूखा सिर सूखा रखूंगा। और बीज-खाद शुरु-आती दौर में निश्चित कोटे से कम दूंगा। दूसरे स्तर पर आदमी के सिर पर हाथ फेरकर, कम दाम देकर नक़द पैसे से बीज-खाद खरीद लूंगा ! हे भारतवासियो, मत भूलो कि चोरी—जालसाज़ी—ठगी—उठाईगीरी और ग़रीबों को ठगना तुम्हारी महान परम्परा है। लीजिये, चाय पीजिये। चाय आयी है। गाना सुनियेगा, गाना ? मेरे पास बैटरी का रिकार्डप्लेयर है।"

"गाना सुनूं ?"

"क्यों ? गाना सुनने में क्या गुनाह है ? जासूसी उपन्यास और हिन्दी फ़िल्मों के गाने, मैं हमेशा साथ रखता हूं। उड़ाई हुई जासूसी-कथा बंगला में पढ़ने के बजाय मूल अंग्रेजी में पढ़ना बेहतर है। और हिन्दी फ़िल्मी गाने तो जनगीत हैं। नाक-भौं क्यों सिकोड़ रहे हैं ? अपसंस्कृति की बू आ रही है ? चनाचूर खाइये।"

"वह अपसंस्कृति नहीं है?"

"नहीं-नहीं, यह भी आपकी समझ का फेर है। मैं भी यही सोचता था। आज लोगों से छुपा लेना चाहता कि फिल्मों की मैं कभी बहुत इज्जत करता था। अपसंस्कृति के बारे में उसने बहुत-सी बातें बतायी थीं। मैंने सुनी थीं। उसके बाद एक दिन पता चला कि 'शोले' फिल्म का वह बहुत बड़ा पृष्ठ-पोषक है। अक्सर वही फिल्म देखता रहता है। उस बारे में पूछने पर वह अलमस्त श्वान की तरह हँस पड़ा। मैं चला आया। 'शोले' फिल्म इक्कीस बार देखकर अगर वह अपसंस्कृति के खिलाफ बोल सकता है—तो मैं क्यों नहीं फिल्मी गाना सुनूँ? चल रहे हैं क्या?"

"आप इतना बकते हैं सिरदर्द होने लगता है।'

तुषार पाल मुस्करा गया। कहने लगा, "बहुत बकता हूँ न! आदत में संतुलन नाम का शब्द नहीं है न। अरबी-उरबी खाकर पेट भरता हूँ। घर जाने पर तीन दिनों में ही लगातार एक महीने का खाना खा जाता हूँ। फिर बीमार पड़ता हूँ। बातें करने को आदमी भी नहीं मिलता। मिलते ही इतना बकता हूँ कि डरा देता हूँ। आप नाराज मत होइये।

"नहीं, नाराज नहीं हूँ।"

"फिर?"

इन्द्र समझ गया कि तुषार पाल बहुत ही बुद्धिमान और चुस्त लड़का है। वह खुद कुछ नहीं कहेगा, लेकिन अपनी बात इन्द्र से कहलवाना चाहता है। बहुत खूब। शाबाश! हाँ, ऐसे दाँव-पेंच इन्द्र को पसन्द हैं।'

"आप एक काम कीजिये। काम काबुली से शुरू हो। काबुली में कितने लोग मिले हैं?"

" 'ख' से 'ह'।"

"वर्गीदार? सारे मेल-मजदूर हैं। सिर्फ हारान माझी और मदन माझी वर्गी करते हैं। सुनें साऊ के लड़के महावीर की दलील। महावीर साऊ। मगर वह तो रोमांस के साम्राज्य में है।"

"वह शायद यहीं होगा, चलिये।'

"आप तो चरसा आयेंगे?"

"हम चरसा से लौटकर आ रहे हैं।"

चरसा की ओर वढ़ते हुए दीनू, रजत, गौर और कदम ने कहा था, "यह वहुत अच्छा रहेगा, इन्द्र-दा। तरह-तरह की दिक़्क़तों के कारण हम भी फ़जीहत में पड़े हैं। यह काम होने पर सव ठीक हो जायेगा।"

"अवश्य होगा। ऑपरेशन-वर्गा पार्टी का सिद्धान्त है, पार्टी का प्रोग्राम। हम इस प्रोग्राम को सफल वनायेंगे।"

"उद्धव और सोरेन ने अभी तक कोई अड़चन नहीं डाली। इन्द्र-दा, उन्हें खींचें तो वे हम लोगों के साथ मिल जायेंगे। आप क्या सोचते हैं इस वारे में? वैसे उन लोगों के वारे में क्या विचार है आपका?"

"इस वारे में अवश्य कोशिश करूँगा। पहले पता लगाना पड़ेगा कि वे अभी भी पहले जैसी राजनीति करते हैं या नहीं।"

"मन की वात कौन जाने? मगर अमल में वे कुछ नहीं करते। वल्कि हम लोगों के सभी कामों में रतन चाचा को सोरेन ने आगे कर दिया है। रतन चाचा के लड़के के साथ वही सुलह करा रहा है।"

"पता है... रतन डोम, उद्धव काउरा, दिलीप सोरेन—चरसा में पाँव जमाने के लिए इन्हें साथ रखना पड़ेगा। यह लोग चरसा के अपने लोग हैं। हम लोग वाहरी हैं।"

चरसा में उनके साथ घुसते ही दिलीप सोरेन ने उन्हें खदेड़ कर वाहर कर दिया। घटना काफ़ी नाटकीय है।

वास्तव में इस तरह के नाटकीय प्रस्थान के लिए इन्द्र तैयार नहीं था। चरसा नदी, उस पार वालूचर और ऊवड़-खावड़ झाँवा-पत्थरों के मैदान के वाद चरसा का जंगल। नदी-तट पर खेत-मैदानों में वसे चरसा गाँव को देखकर इन्द्र मुग्ध हो रहा था। हाँ, जैसे वह गाँव किसी तसवीर में उकेरा गया है। इसी नदी में से नहर निकाली जायेगी। उसमें से कई छोटी नहरें निकाल कर नदी को वाम्भोनी नदी के साथ जोड़ दिया जायेगा। पानी सिंचाई, मिट्टी का उपजाऊपन। चरसा नदी पर पुल। पुल हाई-वे में आ जायेगा। जंगल कट जायेगा। सामन्त कहता है कि आने-जाने की असुविधा के कारण इन सारी जगहों में आंदोलन होते रहते हैं। जिन जगहों पर पहुँचा नहीं जा सकता वहाँ हाई-वे पकड़कर लाखों-लाख जमकर घुस पड़ो

आन्दोलन बन्द। आजकल सभी बढ़-चढ़कर थ्योरी क्यों देना चाहते हैं? सिद्धान्त?

यह सोचते-सोचते इन्द्र चरसा में घुसा। काफी देर चलता रहा। वह रतन का घर खोज रहा था। तभी विलाप का स्वर सुनायी पड़ा। आँखें खोलकर देखा—अरे सोना की माँ!

खटोले पर लिटाकर किसी को लाया जा रहा है। उसकी बगल में रोते हुए चल रहा है, एक समर्थ प्रौढ़। रतन गमछा हिलाते हुए प्रौढ़ को तेजी से डाँट रहा है।

फीके नीले रंग की एक गंजी तथा धोती पहने एक मशाल युवक उन्हें देख आगे आया और इन्द्र से कहने लगा, "इन्द्रबाबू! मैं सोरेन हूँ, दिलीप सोरेन। दीनू वगैरह के साथ आते देखकर पहचान गया हूँ। चलिये, जल्दी चलिये।"

"कहाँ?"

"मातंग डोम की जोरू के पेट में बच्चा था। वह गिर पड़ी थी। बेहोश हो गयी है। चरसा ब्लॉक का अस्पताल जरा दूर है—शाम्बोनी गाँव में। आप साथ रहें तो उसे भर्ती कराने में सुविधा रहेगी। डाक्टर से मेरी खास पटरी नहीं बैठती।"

इन्द्र ने कहा, "चलिये। दीनू, कदम! आप लोग भी आइये। रोगी की गरदन हिलडुल रही है। खटोला लेकर दौड़ना पड़ेगा। रतन, तुम आगे आ जाओ।"

सोरेन ने उद्धव को पुकारा। बोला, "आप अपने झोले-बैग आदि सब इसे दीजिये। उद्धव काउरा! ठीक से पकड़ो, भाइयो! हेई, दो आदमी दोनों ओर से सना की माँ को दबाकर रखो। हम लोग दौड़ते हुए चलेंगे। कहीं वह लुढ़क न जाये, गिर न जाये। चलो!"

वे लगभग दौड़ते हुए चले। खटोले में चटाई और उस पर कथरी बिछी हुई है। बेहोश औरत का शरीर चलने की ताल के साथ हिलता है। मछली की गन्ध। सोरेन ने कहा, "खून रिस रहा है। लगता नहीं कि यह और...!"

चरसा ब्लॉक अस्पताल में छह बेड हैं। ग्यारह रोगी। डॉक्टर और

नर्स दौड़े-दौड़े आये। डॉक्टर बोला, "जागुला ले जाइये। यहाँ यह रोगी...।"

इन्द्र ने कहा, "आज संभव नहीं है। अभी जो करना है, कीजिये। वह बाद में देखा जायेगा।"

दीनू ने कहा, "यह हम लोगों के कामरेड हैं।"

सना की माँ को टेबुल पर लिटाया गया। सोरेन ने कहा, "दवा-सूई अभी उसी दिन ही तो आयी हैं, निकालिये।"

इन्द्र ने कहा, "हाँ, जो है निकालिये। अभी अँधेरा हो जायेगा। स्टोव कहाँ है?"

रतन ने कहा, "डॉक्टर के कमरे में...और कहाँ?"

स्टोव बाहर लाया गया। दीनू ने जलाया। सोरेन, कदम और उद्धव ने पानी गरम किया, औज़ारों को गरम पानी में उबाला गया। नर्स ने डॉक्टर की मदद की।

निहायत ही विचित्र परिदेश में जटिल अस्त्रोपचार पूरा होते-होते रात काफ़ी हो गयी। दस बजे के लगभग पसीने से तर डॉक्टर बाहर निकल आये। कहने लगे, "बहुत जोखिम उठाया है। आगे अब उसकी क़िस्मत।"

भोर के लगभग पता चला कि मातंग की जोरू इस बार बच गयी। मातंग और एक आदमी को वहीं छो[illegible] इन्द्र वगैरह चरसा वापस चले गये। सोरेन ने कहा, "मेरे यहाँ च[illegible]गा।"

घड़ी ने कहा—सवा दस। दीनू ने कहा, "चलिये, नहायेंगे तो?"

"सोरेन कहाँ है?"

"अस्पताल गया है। अभी आता होगा। आकर भात पकायेगा। रतन ने भी कहा है। वह कोंहड़ा लाने गया है।"

"सोरेन का यह घर बहुत खूबसूरत है।"

"ऊपर की मंजिल उसी ने बनायी है।"

यह घर संथाल बस्ती में है। तभी एक संथाल स्त्री चावल लेकर आती है और आँगन में रख जाती है। रतन एक मझोले आकार का कोंहड़ा ले आया। बोला, "घर में रखो। टट्टर डाल दो। उसके बाद नहा लो।"

इन्द्र ने कहा, "चावल और कोंहड़ा कितने का लाये, रतन-दा?"

"क्यों?"

"इनके पैसे न लेने पर नहीं खाऊँगा?"

"तो दे देना।"

सोरेन हल्दी, मिर्च और एक छोटी शीशी में तेल ले आया। पैसे की बात सुन सफ़ेद दाँतों को बाहर निकालकर हँसा और कहने लगा, "जरूर दीजिये। चलिये, नहा लीजिये।"

"नहाने की इतनी जल्दी क्यों?"

"दिन चढ़ने पर गड्ढे का पानी सूख जायेगा।"

"चैत से पहले ही?"

"हाँ, चैत से पहले ही।"

चरसा का सीना खोदकर पत्थर से पानी रोका गया है। शीशे की तरह निर्मल पानी। वह उसी में नहाया। लौटकर सोरेन ने भात चढ़ाया। कोंहड़ा काटा। उद्धव से बोला, "कोंहड़ा पकाने में नमक काम करेगा।" उसके बाद इन्द्र से कहने लगा, "अभी इसे उद्धव देखेगा। तुम जरा बैठो। 'तुम' कह रहा हूँ, अधिक देर तक 'आप' नहीं चला पाता।"

"बेझिझक कहो।"

"चलो, ऊपर बैठें।"

वे दोनों ऊपर आये। सोरेन ने अपने बालों पर यत्न के साथ कंघी की। पोंछकर कंघी रख दी। उसके बाद कहने लगा, "सोरेन और उद्धव—

न लोगों के बारे में क्या जानना चाहते हो?"

तुम कौन हो?"

"दिलीप सोरेन।"

"लिखाई-पढ़ाई कहाँ की है? बात करते हुए जुबान जरा भी नहीं

ती। अपने समाज में नहीं रहे शायद?"

"लिखाई-पढ़ाई जागुला में, हॉस्टल में रहकर की है। स्कूल का नाम-

ा हूँ? पता करोगे?"

"जागुला में?"

सोरेन ने बात काटते हुए कहा, "हाँ इन्दर बाबू! सामन्त बाबू मुझे

हचानते हैं। मेरी माँ को भी पहचानते हैं। माँ धान कूटकर मुझे पालती

थी। इसलिए बिट्टी बाबू ने मुझे ले जाकर स्कूल में दाखिल करा दिया।

माँ मर गयीं, तभी यहाँ आकर रह रहा हूँ। गुनाह किया है कुछ?"

"मैंने तुम्हारा अपमान नहीं किया, कुतूहलवश जानना चाहा है।

अगर मुझसे ग़लती हुई हो तो माफ़ करना।"

"अब तो आप जान गये हैं।"

"नौकरी तुम्हें मिल सकती थी।"

रही। कब से नहीं रही, माँ यह नहीं बता पाती थी। माँ के जन्म से बहुत पहले ही यह सब-कुछ घट गया था। माँ कहा करती थी, 'थोड़ी-सी जमीन अगर हमारे पास होती!' "

"माँ अब नहीं है?"

"नहीं। ऐसी बातें सुनकर दोस्त लोग कहते हैं, 'इसी से समझ में आता है कि तू सयाल है।' और क्या कहूँ? मैं सयाल हूँ, यह बार-बार याद आता ही है। किसी मुद्दे पर लड़कों ने कभी हड़ताल की तो उसमें मैं भी शामिल हुआ हूँ। फिर भी कहते सुना है कि मैं सयाल हूँ! सरकार मेरे लिए इतना कुछ कर रही है। लेकिन वह सब भूलकर मैं यह सब क्या कर रहा हूँ! एक दोस्त की बहन की शादी में, दावत के समय सब लोगों का चेहरा मेरी तरफ था। दोस्त की माँ ने कहा, 'तुम्हें खाने में तो कोई दिक्कत नहीं हो रही?' "

"ऐसा क्यों कहा?"

"मैं सयाल जो हूँ! इसीलिए मेरा ज्यादा-से-ज्यादा ख्याल रखा गया। मगर मुझे यह अच्छा नहीं लगा।"

"अच्छा न लगने की ही बात है।"

"सयाल होने के नाते नौकरी मिलेगी, यह मुझे पता था। उस बार कमीज, यानी बुशर्ट और पैंट खरीदी थी, जूता भी। वजीफे के रुपये एक साथ मिले थे। चरसा आता-जाता हूँ। रहता हूँ भूषण के घर पर। उसे चाचा कहता हूँ। उसकी माँ मेरी दादी है। शर्ट-पैंट पहनकर मैं खुशी से उफन रहा था। शान से मुहल्ले से गुजरूँगा। सभी देखेंगे। सभी।"

"यह कितने दिन पहले की बात है?"

"अधिक दिनों की बात नहीं है। चरसा के माझीपाड़े में मेरी बहुत कद्र है। हाँ, हम लोगों के काली मेझेन के लड़के ने पढ़ाई की है। चरसा में शिक्षित सयाल नहीं हैं। वह शिक्षित है। नाम उसने दूसरे समाज का लिया है। खैर लेने दो। मैं क्या बनूँगा, सभी जानना चाहते हैं। शिक्षक बनूँगा? या न्यायाधीश या डॉक्टर? कुछ बनकर क्या मैं देहाती समाज से कट जाऊँगा? कितने सवाल हैं उन लोगों के।"

"यह सब वे लोग कहते थे?"

"हाँ, कहते थे।"

"उसके वाद ?"

"शर्ट-पैंट और जूता पहनकर घर गया। दादी माँ, हम लोग जिन्हें गडम् आयु कहते हैं, मुझे देखकर पहले तो हक्का-वक्का हो गयी। उसके वाद सिर से लकड़ी का वोझ ज़मीन पर उतार कर रो पड़ी। कहने लगी, 'तू पुलिस वना ? पुलिस ? पुलिस का काम किया ?' "

"उन्हें चोट पहुँची थी !"

"वहुत ही। और उनकी वात सुनकर जैसे क्षण-भर में मुझे ज्ञान हो गया---नहीं, मैं पुलिस नहीं वन सकता। उन्हें समझाया, 'नहीं, मैं पुलिस नहीं वना हूँ। पुलिस क्यों वनूंगा ?' उन्होंने क्या कहा, जानते हो ?"

"क्या ?"

"कहा, 'तू क्या जानेगा, वेटे ? कितनी उम्र है तेरी ? तेरी माँ मुझसे कितनी छोटी थी। मैंने वहुत कुछ देखा है। हमेशा से देखती रही हूँ। हमेशा से यही देखा है कि पुलिस संथालों की ओर वन्दूक साधे रहती है।' "

"ऐसा कहा ?"

"हाँ। उसी समय मैंने तय किया, मैं पुलिस वाला नहीं वनूंगा। और उसके वाद भी मुझ पर पुलिस की नौकरी करने के लिए ज़ोर डाला जाता है।"

"तो नहीं की ?"

"नहीं कर सका। सामन्त वावू वहुत चिढ़ गये। और लोग भी छी-छी करने लगे।"

"उसके वाद यहाँ चले आये ?"

"नहीं। मूंगफली से लेकर जूते के फीते तक वेचने की कोशिश की। अन्त में सिर की क्लिपें वेचनी शुरू कीं। धर्मराज का मेला अव भी फ़ैशन-परस्ती की, घूमने-फिरने की जगह है। और धर्मराज का मेला देखकर जारूलिया फ़ारेस्ट बँगलों में जाया जा सकता है, रहा जा सकता है। वहाँ हिरणों, मोरों, तीतरों को जालियों से घेर कर रखा है। शहर के लोगों ने क्लिपें ख़रीदीं। इस वार मेले में ताड़ के पत्तों की वहुत-सी छतरियाँ ले जाऊँगा। रुपयों को लिये-लिये चरसा चला आया।"

"इन लोगों ने क्या कहा ?"

"पहले दुखी हुए। हम लोगों के काली मिशन में [illegible] बना। अब कुछ नहीं कहते।"

"सोरेन, तुमने क्या-क्या कहा ?"

दिलीप सोरेन की आँखों में हँसी [illegible]। [illegible], "[illegible] कुछ क्या कहा जाता है भाया ? [illegible]।"

"अब क्या कर रहे हो ?"

"लिखाई-पढ़ाई सीखकर अपने समाज में रह रहा हूँ।"

"अपने समाज में ?"

"छोटा गाँव। एक जमाने में [illegible] है। [illegible] यहाँ मिला-जुला है।"

"जंगल तरह-तरह से जिलाये रखता है। महुआ के फूल की पपड़ी-चपाती भूनकर खाते हैं। जंगल में कन्द-मूल भी मिलता है। सुदूर अतीत में यह सारी जगह जंगल महाल मानी जाती थी। क़िस्मत अच्छी हुई तो जंगल में खरगोश, साही-गोवी हाथ लग जाता है। तब मांस का भोजन चलता है। रतन और उसके साथी भी दिक़्क़त में फँस संथाल बनते जा रहे हैं। जंगल पर निर्भर। क्या किया जाये? खेत-मज़दूरी का काम बारह महीने का तो होता नहीं। पहले एकमात्र उपाय था, खाते-पीते किसान के घर बारहमासिया बनकर रहना। वह रिवाज़ अब उतना नहीं रहा।"

"बारहमासिया?"

"बारहमासिया, भतुआ, खानाबेगारी, पेटबेगारी—सभी असल में एक हैं।"

"मामला क्या है?"

"माहवारी या सालाना तनख्वाह पर और भरपेट भात पर तुम चौबीस घंटे के ग़ुलाम बन जाते हो। जरूरत या ग़ैर-जरूरत पर क़र्ज़ पर लिये धान या रुपये पर चक्रवृद्धि दर से ब्याज बढ़ने लगता है। इतने पर भी क्या ग़ुलामी चुकता हो सकती है? नहीं, न होना ही स्वाभाविक है।"

"न होने पर?"

"बेटे को काम पर लगा दिया।"

"यह तो ग़ुलाम बनाना हुआ।"

"पहले यह प्रथा खूब चलती थी। अभी भी खूब चलती है। जहाँ-जहाँ राजनीतिक आन्दोलन चला है, या लिखाई-पढ़ाई के फलस्वरूप हवा बदली है, वहाँ-वहाँ अब इतना नहीं चलता। उपेक्षित इलाक़े में अभी भी खूब चलता है। कदम को पूछो न। उसे खूब पता होगा।"

"इसके खिलाफ़ कोई आन्दोलन नहीं हुआ?"

"सुना है, नहीं हुआ। पर किसी-किसी इलाक़े में राजनीतिक चेतना बढ़ जाने पर इस प्रथा का जोर कुछ घटा है। शहर से जुड़ी जगहों पर, जहाँ ज़मीन का मालिक वर्ग या मजदूर से बचना चाहता है, वहाँ भतुआ काम करता है। अनुपात में यह प्रथा कुछ कम प्रचलित है।"

"कम क्यों है?"

"क्योंकि शहर से जुड़े हुए देहाती इलाके कम हैं।"

"धातुरी में रोनोलि माऊ के जमीन पर बर्गा बैठाने का काम चलता है। एक-एक करके हरेक उपेक्षित मामले को पकड़ना पड़ेगा।"

"अच्छा, बहुत अच्छा।"

"तुम लोगों की मदद की जरूरत होगी।"

उद्धव ने कहा, "जरूर। मगर यह भी सोचने की चीज है, जानते हैं न ? जमीन के मालिक का जमीन पर कब्जा रखने से मूल जड़ पर चोट नहीं की गयी है। भतुआ अब गुलाम नहीं रहेगा, खेत-मजदूरों को मजदूरी मिलेगी और बर्गादार को न्याय। मानो जहरीले पेड़ की डालियाँ काट रहे हों। जड़ पर चोट करने की बात नक्सली हो गयी। पहले ऐसी बात नहीं कही गयी। कमाई टुडु ने जो कहा है, हमने वही किया है। अब जब उनकी बातें जितना सोचता हूँ, मन में बैठती जाती हैं।"

दीनू अचानक कहने लगा, "इन्द्र-दा, सिनाहाट में खेत-मजदूरों का एक कैंप लगा था। अफसर बहुत ही चालाक था। ऐसी जगह कैंप लगाया, जहाँ कभी कोई आन्दोलन नहीं हुआ था। मकरवाहिनी का मन्दिर और उसके पुजारी के परिवार के पास ही सारी जमीन-जायदाद है। पुजारी के यहाँ खेत-मजदूर काम पर आते हैं। हम लोग भी देखने गये थे। और अधिक क्या कहूँ ! खेत-मजदूरों से जब पूछा गया कि तुम लोगों को कैसे आसानी रहेगी ? उन लोगों ने हमें बेवकूफ बना दिया। कहने लगे, 'भूमि की उच्चतम सीमा हम नहीं समझते। पहले सारी जमीन सरकार ले ले और फिर उसे बाँट दे। जिसके पास नौकरी है, व्यापार-तिजारत है, दुकान-दस-बाँधी है, उसे जमीन मत दो।' जिन लोगों ने यह बात कही, वे लोग नक्सली हैं या कुछ और—नहीं जानते।"

"वे भी समझते हैं, उन्होंने भी सोचना सीखा है।"

नीरेन ने कहा, "हम लोग क्या सोचते हैं, उससे उन्हें क्या मतलब ? अगर कुछ काम करो, तो हम लोग भी उसमें शामिल होना चाहते हैं।"

इन्द्र के मन में एक बात उठी। क्यों ? डर से ? डरते हैं हम लोगों से ?

"नीरेन, तुम्हें हम लोगों के कार्यक्रम पर आस्था है ?"

"मेरी ओर से भी कह सकते हो कि यह एक कोशिश है। शायद आख़िरी कोशिश भी। कोशिश तो बहुत बार की है। हर बार जाना है कि मुझ पर किसी ने विश्वास नहीं किया। क्यों? उद्धव का शायद एक राजनीतिक अतीत है, लेकिन मेरा? या यहाँ के हिसाब से मैं ऐसा संथाल लड़का हूँ, जिसकी बातचीत में संथालीपन नहीं है और जो लिखना-पढ़ना जानता है तथा जिसने पुलिस में काम नहीं किया—लिहाजा वह अविश्वसनीय है। उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। विश्वास न करके चलना, एकदम विश्वास न करके चलना क्या हर समय अच्छा लगता है?"

खाने के बाद इन्द्र ने कहा, "तुम चलो, उद्धव भी चले। बाकुली में संथाल हैं। तुम्हारे साथ रहने पर अच्छा रहेगा।"

"चलो।"

जाते-जाते इन्द्र कहने लगा, "संथाल मुहल्ले में ही क्यों रहें? फिर संथालों के लिए सरकार अब बहुत कुछ कर रही है—इसे अस्वीकार नहीं कर सकते।"

"हाँ, लिखाई-पढ़ाई का मौक़ा दे रही है, काम पर लगा रही है।"

"सब पुलिस की नौकरी में तो जाने से रहे।"

"तुम आदिवासी नहीं हो। नहीं समझोगे।"

"बोलो, समझना सीखूँगा।"

"मैं जिस कारण लौटा था, उसी कारण से रुक भी गया। तुम जब कहते हो कि सरकार बहुत कुछ कर रही है, क्या तुमने उसका आनुपातिक हिसाब लगाया है कभी? काम दे रही है सरकार। संथाल समाज में धीरे-धीरे एक नया वर्ग पैदा हो रहा है—शिक्षक, डॉक्टर, नौकरपेशा। मगर अभी भी निन्यानवे प्रतिशत संथाल धान के खेतों में, कोयला-खदानों में, कुली के काम पर लगे हैं। तभी तो मैं चरसा में एक दूसरा स्तर बनाने की कोशिश कर रहा हूँ। लिखाई-पढ़ाई का मौक़ा पाकर भी अपना समाज छोड़कर नहीं गया हूँ, उन्हीं के बीच रह रहा हूँ।"

"पर तुम अकेले हो।"

"कौन कहता है, अकेला हूँ! चरसा में संथाल बस्ती ही देखी है?

मगर गाँव के रतन, काठरा जैसे लोग संथालों के साथ काम के मामले में एक हैं। एक जैसा काम, एक जैसी आमदनी, एक जैसी छलना। अपने में से ही एक पढ़ा-लिखा आदमी हो तो उन्हें भरोसा मिलता है।"

"इस तरह के स्वर बनाने में तुम अकेले हो।"

"नहीं। सुना है, सरकार सिदु-कानु की लड़ाई के उपलक्ष में इस बार काफी धूम-धड़क्का करेगी। सुना ही है, सुनने में क्या होता है!"

भागनाडिह के मैदान का युद्ध। इनके समाज की कितनी ही दन्त-कथाएँ! यह लोग कुछ भी नहीं जानते।

बात अचानक इन्द्र के मन में कौंध उठी। उसने कहा, "हम लोग यहाँ संथाल-विद्रोह का जयंती-उत्सव मनायें तो बहुत अच्छा हो, क्यों? अभी तक तो कभी नहीं हुआ है न?"

उद्धव ने कहा, "चरसा में संथाल-युद्ध का उत्सव? आपको बड़ी फजीहत में डाल देगा।"

"फिर 'आप'?"

चमकीली हँसी हँसकर सोरेन ने कहा, "उद्धव! तू कसाई टुडु के साथ गया था। संथालों के साथ रहता रहा, पर अभी तक 'आप' 'जी' नहीं छोड़ सका? 'तू' सबसे बेहतर है। सुनने में मीठा, कहने में मीठा। 'तुम' चल सकता है। 'आप' में कोई मिठास नहीं है। सबको दूर रख देता है।"

इन्द्र बोला, "ठीक कहते हो। मैं कुली-मजदूरों के समाज का आदमी हूँ। 'आप' 'जी' मेरे साथ नहीं चलता।"

"बात सच्चा है रे, उद्धव। सिखेगा।" सोरेन की एक बात पर वे सब करीब चले आये। देर तक चुपचाप चलते हुए अचानक रतन, कदम, गौर तथा दीनू के कंधे थपथपाते हुए सोरेन ने गाना शुरू किया :

"हाथों - हाथों रोपता हूँ धान,
हाथों - हाथों में काटता हूँ धान।"

उद्धव ने कहा, "यह गाना कदम ने बनाया है।"

चारुलो पास आ रहा था।

एक नम्बर चरसा कैनाल के सीने में बरसात का रंगीन पानी किनारे

से छलकते हुए गिर रहा है। अब पानी का इन्तज़ाम हो जाने के बहाने दो फ़सली ढाई बीघे तथा चार बीघे ज़मीन पर भी हारान माझी तथा लवण माझी के नाम पर बर्गा रिकार्ड हो रहा है। चारों ओर रोतोनि तथा महादेव की सौ-सौ बीघा ज़मीन पुराने रिकार्डों में अकेले मिल्कियत में चढ़ी है। दोनों भूखंडों पर पार्टी का क्रांतिकारी झंडा गाड़ा गया। रोतोनि ने स्नेहभरी आँखों से उस तरफ़ देखा और कहा, "यह काम बहुत अच्छा हुआ।"

सब-कुछ हो चुकने के बाद बाम्भोनी में इन्द्र जब अपने डेरे पर लौटा तो उसी समय जागुला से उसका बुलावा आ गया। नवीन बाबू ने ज़रा सूखे स्वर में कहा, "यह काम अच्छा हुआ है। मगर उसने बग़ैर किसी को बताये अपनी मर्ज़ी से यह किया है, किसी को बताया तक नहीं। यह ठीक नहीं है।"

"के० जी० आर० ओ० ने काम किया, हम लोग महज़ साथ थे।"

नवीन बाबू ने और भी सूखी आवाज़ में कहा, "रोतोनि साऊ की ज़मीन लेकर उसे और कोंचना ठीक नहीं है। और चरसा के सोरेन और उद्धव वहाँ क्यों गये थे?"

"सोरेन और उद्धव को भी अपने प्रोग्राम में शामिल करना पड़ेगा।"

यह सुनकर नवीन बाबू का चेहरा सूख गया, मगर सब-कुछ सुनकर सामन्त खि-खि करके हँसने लगा। कहने लगा, "इन्द्र अच्छा है, बहुत अच्छा। उन्हें इस तरह के स्वस्थ कार्यक्रमों में व्यस्त रखना बहुत ही अच्छा रहेगा। यही सही दवाई है, हा-हा-हा-हा!"

"इसका मतलब क्या है? उन्होंने तो बार-बार आप लोगों के कार्यक्रम में शामिल होना चाहा है।"

"कभी नहीं।"

इन्द्र कहने वाला था, 'रतन डोम से जो कुछ सुना है, उस पर मुझे भी विश्वास होने लगा है कि ग़लती आप लोगों ने ही की है।'

मगर बोला नहीं। सिर्फ़ इतना कहा, "किसी समय यही गाँव या ऐसे बहुत-से गाँव हिंसात्मक आन्दोलन में उतरे थे। लेकिन वह रास्ता हम लोगों का नहीं है। मगर जिन कारणों से वे आन्दोलन में उतरे थे, वे कारण

और भी यथार्थ और भयंकर हो उठे हैं। जो कारण ज्यों-के-त्यों बने रहे और हम उन्हें परे रखने की कोशिश करें—यह ठीक नहीं है। उनके सुख-दुख में शामिल न होने पर उनके मन में आस्था कैसे जगेगी ?"

"क्यों ? ऑपरेशन-बर्गा से भी नहीं ?"

"वह तो खेत-मजदूरों का गाँव है। ऑपरेशन-बर्गा ? रोतोनि साऊ, रामेश्वर भुईयाँ—इन्हें आप लोग सुरक्षा देंगे और बर्गा बैठेगा छोटी जोत पर ? पता है, सच्चे कैडरों के मन पर इससे कितना उलटा असर पड़ रहा है ?"

सामन्त ने मन-ही-मन इन्द्र के स्वर में गूँजते प्रतिवाद के सुर को नोट किया। कहने लगा, "पार्टी का अनुशासन बनाये रखना सबसे बड़ी बात है। प्रारम्भिक दौर के कारण कुछ नहीं कह रहा हूँ। वे बहुत ही ताकतवर हैं। मौजूदा ढाँचे में ही सब-कुछ रखकर देखना पड़ेगा। हम लोग जितना कर रहे हैं, पहले की किसी सरकार ने उतना नहीं किया। इस क्रांतिकारी रास्ते पर हम दुस्साहसवादी तरीकों से आगे निश्चय ही नहीं बढ़ेंगे।"

सुनकर इन्द्र ने कहा, "किस तरह आगे बढ़ियेगा ? क्या सोचा है इसके बारे में ? प्रभावशाली लोगों के बारे में क्या कीजियेगा ?"

"उनके बारे में कोई अलग नियम नहीं है। सरकारी कर्मचारियों को चाहिए कि वे कानून लागू करें। जमीन पर कब्जा लें, उसे बाँटें, बर्गा बैठायें...।"

"काम के दौरान बदली हो, हर स्तर पर अड़गे लगाये जायँ। जो तबीयत आये, कहिये। निर्भीकता से काम कीजिये, सबका श्रद्धाभाजन बनिये, सामन्त-दा ! जनता की राय के साथ आया हूँ। डर कैसा ?"

"डर की बात कौन कर रहा है ? मैं किसी से नहीं डरता। प्रभावशालियों को समझाकर, दबाव डालकर ..।"

"हृदय-परिवर्तन कीजियेगा ? वे लोग डकैत और हम लोग सर्वोदय कार्यकर्ता हैं क्या ? धरती पर उतरिये। जो प्रचार कर रहा हूँ, उसे कार्यान्वित न करने पर लोगों से अलग पड़ जायेंगे। पड़ ही गये हैं।"

"तुम्हारी बातें...।"

"नक्सली बातें नहीं सामन्त-दा, पार्टी के सच्चे कार्यकर्ता की बातें हैं। आप मानें या न मानें, पार्टी से जिन्होंने कभी कोई फ़ायदा नहीं उठाया, ऐसे कुछ लोग भी हैं। काम कीजिये, काम। काम करने दीजिये। फिर वोट माँगने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

"निश्चय ही। और जीतेंगे भी हम लोग ही।"

"नकारात्मक वोट से। इसीलिए कि पार्टी का विकल्प नहीं है। मगर काम क्यों नहीं करें?"

"काम करो न तुम। कौन रोक रहा है?"

"बाहर की बाधा से नहीं डरता।"

"पार्टी का सच्चा कार्यकर्ता किसी भी बाधा से नहीं डरता। तुमने जो बातें सुनी हैं, वह सच नहीं हैं। मैं जान रहा हूँ कि यह बातें तुमने किस स्रोत से सुनी हैं। साऊ की जमीन पर बर्गादार रिकार्ड हुआ। इसमें किसी ओर से कोई बाधा आयी?"

"जितनी ज़मीन पर रिकार्ड हुआ, वह भी महत्वपूर्ण है। मगर साऊ लोग कितनी बड़ी ज़मीन के मालिक हैं। उन लोगों की तो सारी ज़मीन ही बच गयी है। यह बात मेरे मन में बार-बार खटक रही है।"

"धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा।"

"खेत-मज़दूरों के बारे में क्या करूँ?"

"सरकारी मदद पाने की कोशिश करूँगा, मगर शांतिपूर्ण तरीक़े से। भूमि पर केन्द्रित दुनिया को तुम नहीं समझते। बहुत ही गड़बड़ जगह है। हम लोगों के दुश्मन सामने खड़े हैं, विरोधी साजिशों का अन्त नहीं है। ज़ोर-ज़बरदस्ती करने पर आन्दोलन खड़ा होगा, क़ानून और अनुशासन का सवाल सामने आ जायेगा।"

"सामन्त-दा, पार्टी-कार्यकर्ता के नाते मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप लोग आन्दोलनों से इतना डर क्यों रहे हैं? जोतदार को ज़मीन अपने क़ब्ज़े में रखने का अधिकार है, लेकिन कार्यकर्ता के स्तर पर एकजुट आन्दोलन करके तेभागा के असम्पूर्ण लक्ष्य को पूरा करने का अधिकार नहीं है! मीठी-मीठी बातों से ज़मीन का मालिक खेत-मज़दूरों को सरकारी रेट देगा? आन्दोलन से ही यह रेट हम उसे दिलवा सकते हैं, लोगों का

निर्वाण पा सकते हैं। कानून-सम्मत आन्दोलन में इतना डर क्यों है? शहर में भी वही हालत, गाँवों में भी वही। ऐसी बातों से शह पाकर व्यापारी, कालाबाजारी, दलाल और थोक व्यापारी मनमर्जी कीमतें बढ़ा रहे हैं और मुनाफा लूट रहे हैं। यह बात आप अच्छी तरह जानते हैं। पर चीजों की कीमतों की वृद्धि के विरोध में भी आज आन्दोलन सम्भव नहीं है। जो आन्दोलन हमें आम लोगों के करीब ले जाते हैं, वे आज सारे बन्द क्यों हैं? कार्यकर्ताओं को कैसे सिखाऊँ? नया कैडर पार्टी में आयेगा कैसे, जब वह किसी आन्दोलन के बीच से नहीं गुजरेगा?"

"आन्दोलनों के बारे में धारणा भी तो बदल रही है।"

"क्या आप यह नहीं देख रहे हैं कि आन्दोलन नहीं चलाये जायेंगे तो कैडर के स्तर पर नैतिक पतन होगा, सच्चे कैडरों का दिल टूटेगा। उधर जिन्हें लूटकर खाना है, वे लूट जारी रखेंगे। इसके बाद भी क्या वोट मिलेंगे? निश्चय ही, लेकिन नकारात्मक वोट। विकल्प नहीं है, इसलिए न। मगर लोग हम लोगों को प्यार से, हम लोगों पर आस्था रखकर सकारात्मक वोट दें, ऐसी हालत हम बना सकते हैं, मगर बना नहीं रहे हैं।"

"मगर शिक्षित वोटर यह नहीं कहता।"

"उन्हें हम लोग वेतन की बढ़ी दरें आदि जो दिला रहे हैं।"

"तुम क्या सिर्फ नकारात्मक पक्षों को ही देखते रहोगे?"

"पार्टी मेरी जिन्दगी है, सामन्त-दा। इसकी सफलता को मैं बहुत दूर तक ले जाना चाहता हूँ। अपनी पीठ खुद थपथपाने से आगे बढ़ा जा सकता है क्या? आप कहिये तो सही खुले दिल से।"

"ऐसा ही हो तो ठीक है। तुम काम करो। सोरेन और उद्धव को जितनी जल्दी खींच सको, उतना ही अच्छा।"

बासभोनी के अपने डेरे पर इन्द्र स्थिर बैठा नहीं रहता। उसके दिल में चोट, भीषण अस्थिरता है। जेठ आयेगा आँधी-बारिश लेकर। जेठ में आमन धान का बीज बोया जायेगा। पानी मिलने पर धान के पौधे बढ़ेंगे। आषाढ़-सावन तक पौधे को रोप दीजिये। यह सब करने के लिए खेत-मजदूर खेत में उतरेंगे। उन्हें सरकारी रेट पर खेत-मजदूरी मिलनी चाहिए।

हारान और लवण माझी इस साल अपने क़ब्ज़े वाली ज़मीन बीजेंगे। लवण अस्पताल में आया और कहा, "इस बार बाबू लोग बीज का धान नहीं देंगे। कहते हैं कि क़ानून के बल ज़मीन रिकार्ड कराया है तो बीज-धान क्यों दूं?"

"इतने दिनों तक क्यों दिया है?"

"क्यों? बीज उधार दिया है, बाद में काट लिया है।"

"हल और बैल?"

"बैल माँग लेते थे।"

"किससे?"

"गाँव के लोगों से।"

"बीज का उधार किस दर से काटा जाता था?"

"बारह आने उसका, चार आने मेरा।"

"मिल जाता था?"

"कहाँ मिलता था?"

"क्यों नहीं मिलता था?"

"साल-भर का धान घर ले जाऊँ, रुपये भी ले लूं। उस पर भी धान बच रहता है क्या? इतनी बातें जानते हो, पर यह बात नहीं समझे?"

"कुछ नहीं मिलता था तो खेती क्यों करते थे?"

"ज़मीन को बांझ छोड़ देते?"

"इस साल क्या करोगे? हल, बीज, बैल कुछ भी तो नहीं है तुम्हारे पास। इस साल क्या करोगे ज़मीन लेकर?"

लवण आशावादी है। कहने लगा, "हारान जैसा कहेगा। मैं कुछ नहीं जानता, वही सब-कुछ जानता है। अपने खेत का कोंहड़ा एक रुपये में देने लगूं तो वह छीनकर तीन रुपये में बेच देता है। वही सलाह देगा। ऐसी बातें वह बखूबी समझता है।"

"अस्पताल में क्यों आये हो?"

"दवा लेने।"

दीनू ने उसके हाथ में ख़ाली शीशी देखकर कहा, "सारी दवा पी ली क्या? एकदम खाली है।"

"पी ली।"

"जाओ, जाकर कहो। देखिये इन्द्र-दा, जले हुए घाव पर लगाने के लिए जो लाल दवाई दी थी वह पी गया है यह।"

लवण समझाने लगा कि घाव उसके पैर में है। दवाई पी गये। घर के अंडे-बच्चे और दर्द ठीक हो गया इसके पेट का। मगर समझाने में असफल होने पर उसने दूसरी बात कही। बुद्धिमानों की तरह :

"बाबू ! जमीन तो रिकार्ड करा दिया, लेकिन बीज, हल, बैल तो उन्हीं लोगों से मिला। इसीलिए बारह आने उपज उसने ले ली। धरम भी कहता है और कानून भी कहता है कि बीज, हल, बैल मेरा तो मेरे बारह आने और उसे चार आने दूँगा।"

कदम ने कहा, "कानून भी यही है। मगर मानेगा नहीं। आधा हिस्सा माँगा और वही लिया भी।"

"यह काम कर दो।"

लवण हँसता है। आस्था की हँसी। इन्द्र ने धीरे से कहा, "फसल उठने दो लवण, तब देखा जायेगा। कानून है, मगर जो चलन चला आ रहा है वही नियम बन जाता है।"

"यह काम कराओ।"

"फ़सल उठने दो।"

"कर्ज के नाम पर अधिक नहीं काट लेगा?"

"नहीं-नहीं, इतना कर्ज थोड़े ही है।"

निश्चित होकर लवण दवा लाने चला गया और भूलने का भाव चेहरा पर लाते हुए, सिर खुजलाता हुआ आगे आया। गमछे में बँधा थोड़ा-सा चूड़ा सामने रखकर बोला, " 'आप'...नहीं, नहीं, तुम्हारे लिए जोरू ने भेजा है। जमीन दिलायी है ना।"

लवण चला गया।

इन्द्र ने कहा, "अभी भी इतना सीधा है।"

रजत ने कहा, "कमाल के लोग हैं। धान-चावल-मसूर खरीदने जाते हैं तो उन्हें तौल में ठगा जाता है। हाट में एक ठो रुपया फेंककर बाबू लोगों ने इनकी दो मुर्गियाँ उठायी है, हमेशा। हालाँकि अड़सठ-उनहत्तर के बाद

ने ऐसा नहीं रहा है।"

दीनू ने कहा, "उस समय बहुत डर गये थे सब।"

असहिष्णु इन्द्र ने कहा, "फिर डरना पड़ेगा। अच्छा, यह बताओ कि उसने चट से यह क्यों कहा कि क़ानून में ही बारह आने-चार आने का हिस्सा लिखा है?"

"सोरेन ने कहा, होगा। सब लोग उन्हें बहुत मानते हैं।"

"सोरेन को हम लोगों ने कहना चाहिए था।"

"कहने से क्या होता है? कोई भी बर्गादार को तिभागा नहीं देगा।"

"देखा जायेगा।"

"इस बार क्या करूँ? बैठ जाऊँ?"

"नहीं, बैठूंगा नहीं।"

काम माँग रहे थे दीनू, रजत, कदम और गौर। कदमखुआँ ब्लॉक के चरण, मोहन बाँसी और भूपाल भी आने-आने को कर रहे थे। कैडर काम करना चाहते हैं। काम के जरिये लोगों के दिल तक पहुँचना चाहते हैं। इसी कारण क्या इन्द्र का आत्मविश्वास बढ़ गया है? वरना सदर गाँव में मोती बाबू की जमीन देखने, बर्गादारों से बात करने क्यों गया था?

सदर गाँव और ब्लॉक की तसवीर दूसरे तरह की है। वहाँ पुलिस-चौकी, ब्लॉक-ऑफ़िस, ग्रामीण बैंक की शाखा, मुर्गी-पालन-प्रशिक्षण-केन्द्र, मिशनरियों का आना-जाना, तुलसी स्वामी पंथियों के कीर्तन द्वारा आत्म-उन्नयन, लाइसेंस-प्राप्त देसी शराब की दुकान तथा जनता-बाजार—सभी हैं। बसाई टुडु की पाँचवीं मौत सदर के पास ही चरसा के जंगल में हुई थी। उसके बाद ही सदर इतना जमा है। नन्दिता बराट यहाँ समाज-सेवा केन्द्र खोलकर अनाथ शिशु पालना चा[illegible]थीं। मगर काफ़ी संख्या में अनाथ शिशु न होने के कारण उनकी [illegible] हुई। सदर में इस तरह के होर्डिंग देखने को मिल[illegible]

'हिंसा से बचिये। उपज बढ़ाने[illegible]

'हिंसा से बचिये। संचय में मन[illegible]

'हिंसा के[illegible]

लिए इस के[illegible]

'हिंसा नहीं, यीशु ही आपकी समस्या का जवाब है।'

'हिंसा करके कहाँ जाओगे, भैया? तुलसी-पत्तियों के कीर्तन में जो आत्मसमर्पण करता है, वही उसे पाता है।'

'हिंसा की बात भूलकर सहकारिता-बाजार में पाँव रखें। कुदाली से लेकर प्रेशर कुकर, सभी मिलेंगी।'

केवल यही बँधे-बँधाये होर्डिंग ही नहीं हैं। सदर के बारे में बहुत-से सरकारी विश्वास भी प्रचलित हैं। प्रशासन के आतंक का स्रोत बसाई टुडु चूँकि सदर के पास मारा गया था, लिहाजा 'छेना विक्रय केन्द्र' सदर गाँव ही हिंसा का प्रसूतिगृह है। इसीलिए बहुत सिर खपाकर यह होर्डिंग लगाये गये हैं। इस गाँव के तेरह साक्षर लोग गाँव के बाहर नौकरी करते हैं, इसलिए इन होर्डिंगों को कोई नहीं पढ़ पाता है, होर्डिंग के मालिक लोग इस बात को कोई महत्त्व नहीं देते। शिक्षा के विस्तार के लिए सदर को खतरनाक माना गया है, इसीलिए यहाँ प्राइमरी स्कूल तक भी नहीं खोला गया है।

सदर में बहुत राजनीतिक मीटिंगें होती हैं। गाँव के आदिवासी लोग गाँव की इस बढ़ोतरी से बहुत खुश हैं, क्योंकि बहुत-सी इमारतों के निर्माण में बहुत-से लोगों ने अपनी जमीनें बेच दी हैं। वे लोग जब छेना नहीं बेचते तब सभाओं में भाषण सुनते हैं। हाथ में पैसा आने के बाद बेशक वे लोग भारी मात्रा में शराब नहीं पी रहे हैं, मगर एक-दूसरे पर दीवानी मुकदमे जरूर चला रहे हैं। ऐसा क्यों कर रहे हैं, कौन-सी मानसिकता के कारण ऐसा कर रहे हैं—इस विषय का अध्ययन एक विशेषज्ञ दल आकर कर चुका है। शराब के मुकाबले मुकदमों के प्रति इनका इतना झुकाव क्यों है? कारण गोशाला के मच्छर हैं। इन मच्छरों के काटने से सरल ग्रामीणों के मन में विपर्यय पैदा होता है और वे शराब छोड़कर मुकदमा करना चाहते हैं। विशेषज्ञों ने भी मच्छरों को ही मूल कारण माना।

शाम को एक मौलिक श्यामा-गान सुनने को मिला :

"इस बार मरकर जब वकील हुआ,
मुंडमाला सहित तुम्हें माँ,
कठघरे में खड़ा करूँगा।"

मोती बाबू के साधक चाचा हरकाली साहित्य-भारती, बी० एल० द्वारा रचित यह गाना सदर गाँव में बहुत ही लोकप्रिय है। देशवासियों की प्रतीक्षा न करके उन्होंने ही अपने को 'साहित्य-भारती' ख़िताब से विभूषित कर लिया। वकालत की परिभाषा में श्यामा-संगीत रचकर हाल में हरकाली साधनोचित धाम का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया है। इस गाने को सुनकर शोधार्थियों ने घबराकर अपना मौलिक शोध-पत्र बग़ल में दबाये सदर त्याग किया।

ऐसे सदर में इन्द्र हाज़िर हुआ। तुषार पात्र पहले से ही वहाँ था। उसने बार-बार कहा था, "मुझे मत फँसाइयेगा। मुझे वहाँ ज़मीन रजिस्टर कराने में, बर्गा रिकार्ड करने में काफ़ी मदद मिली है। इस ज़मीन को लेकर मेरे पीछे क्यों पड़ गये हो?"

"रजिस्टर कराने लायक़ ज़मीन कितनी है?"

"सत्ताईस-अट्ठाईस बीघा होगी।"

"इतनी?"

"कितने ही लोग कितनी अधिक ज़मीन रखकर भी छूट गये हैं, जनाब! आप ज़मीन पर ज़रूर जायेंगे, यह लग रहा है। गोरा बाबू आप लोगों की समिति के पुराने आदमी हैं। उन्होंने बहुत मदद की है। मगर हैं मिलेट्री मिज़ाज के आदमी।"

"मैं ज़मीन देखने जाऊँगा।"

मगर इन्द्र को मोती बाबू की ज़मीन देखने को नहीं मिली। गोरा ने कहा था, "यहाँ तुम लोगों को घुसने की कोई ज़रूरत नहीं है, इन्द्र प्रामाणिक! अपने को सबसे सच्चा आदमी समझते हो, क्यों?"

इन्द्र ने कहा, "आपस में कोई झमेला नहीं चाहता। मुझे लगता है, यह मामला आप खुले दिल से स्वीकार नहीं पा रहे हैं। आपकी ख़ुद की ज़मीन है?"

"ज़रूर। हरेक की होती है।"

"नहीं, हरेक की नहीं होती। वह ज़मीन?"

"रजिस्टर हो चुकी है। बर्गादार रिकार्ड ख़त्म।"

"मोती बाबू की ज़मीन पर बर्गादार क्यों नहीं बैठा?"

"वहाँ जो नहीं है इसीलिए।"

"मेरी जानकारी में है।"

"ना, नहीं है। 'नहीं' कह रहा हूँ, नहीं। कराएँ रिकार्ड, कोशिश करें, बेइज्जती होगी।"

"क्या मामला है, बोलिये तो? यह जमीन रजिस्टर बराबर करा दिये तो कितना अच्छा होता!"

गोरा बहुत ही विश्वसनीय है। फिर भी उसने उत्तर दिया, "यह क्या हमारे-तुम्हारे समझने से होगा? हम लोगों की जमीन है?"

"मोती बाबू ने ऐसा किया है?"

"मोती बाबू ने कुछ भी नहीं किया। मोती-दा इधर आते ही नहीं है। उन्हें पता भी नहीं है, कोई खबर भी नहीं रखते। उनके भांजे लोग ही सब-कुछ करते हैं, समझे? उन्होंने ही जमीन को बढ़ा-बढ़ाकर इतना फैला दिया है। मोती बाबू ने शादी नहीं की, परिवार नहीं बसाया। सारी जिंदगी दो विधवा बहनों के परिवारों को सींचते रहे। जमीन-जायदाद भी उन्हें ही दे दी।"

"भांजों ने मामा के परिचय का फायदा उठाया?"

"हाँ, काफी।"

"इसीलिए तो यह मामला साफ होना चाहिए था।"

"क्या करते? उन्हें जानते हो?"

बहुत बहस-मुबाहसा हुआ। इन्द्र ने सोचा था, भांजे लोग भारी सम्पत्तिशाली तथा प्रभावशाली हैं। मगर आधी रात को एक पुलिस-इंस्पेक्टर ने आकर उसे नींद से जगाया। कहा, "मुझे चोरी छोड़कर आना पड़ा। आप बिना जरूरत के यहाँ झमेला क्यों खड़ा कर रहे हैं?"

इन्द्र ने पूरी घटना बतायी। बताने के दौरान दीनू उसे कोंचता रहा। इंस्पेक्टर के चले जाने के बाद दीनू ने कहा, "छोटे भांजे ने... दोनों पुलिस में हैं।"

जब मामा की जमीन के मालिक पुलिस वाले हों तो निर्धारित [illegible] सीमा वाली जमीन उच्चतम सीमा पार करेगी ही। और वह जमीन रजिस्टर नहीं होगी। सरकारी परिभाषा में 'भूधारक' से निर्धारित [illegible]

होगी। इन्द्र भी बहुत ज़िद्दी है। रात गये तक प्रबल मानसिक बाधाओं के बावजूद गुमसुम सोचता हुआ बीड़ी सुलगाता है।

"पुलिस का रोबदाब कब घटेगा ?" कहते हुए वह लेट गया।

दीनू ने कहा, "मोती-दा ने किसी तरफ़ नहीं देखा। इन दोनों को पिछली सरकार के दौरान काम मिला था। उन्हीं लोगों के आदमी हैं।"

"मोती बाबू के नाम पर। एक तो पुलिस, ऊपर से मामा का नाम भुना रहा है, तभी तो...।'

"हाँ, दीनू।"

"तुमसे अगर यह काम नहीं हुआ तो किसी से नहीं होगा।"

"दीनू, वास्तविक स्थिति को अस्वीकार करने से कोई फ़ायदा नहीं है। गाँव में बैठकर दरोगा की ज़मीन पर बर्गादार बैठाने पर, हर बर्गादार आफ़त में फँसेगा। मगर यह यहीं काम कैसे कर रहा है ?"

"यह बात कह सकते हो।"

सुबह गोरा ने आकर झाँका। "वही एक जगह नुक्स रह गया, वरना जो काम हो रहा है, कमाल का हो रहा है। हम कल ही जायेंगे, शिकदार की ज़मीन पर बर्गादार बैठेगा।"

"लोग सभ्य बन रहे हैं समिति के ?"

"सदस्य कहो, 'सभ्य' नहीं ? हो रहे हैं, सदस्य बन रहे हैं। होंगे क्यों नहीं ? वे लोग क्या हमें देख नहीं पा रहे हैं ?"

लौटते वक़्त टूटे-फूटे औंधे घर और झाड-झंखाड़ को दिखाते हुए दीनू ने कहा, "उद्धव-लोगों का घर था।"

"किसी ने यहाँ अपना घर नहीं खड़ा किया ?"

"पैतृक ज़मीन को कोई इतनी जल्दी नहीं छेड़ता।"

सदर के अनुभव से इन्द्र निहायत ही मुरझा गया और सोरेन से बातें करने की उसकी तबीयत हुई। भीतर से कहीं बाधा भी महसूस हुई। सोरेन भी शायद समझता है कि इन्द्र मन-ही-मन दुखी और मन मारे हुए है। एक दिन वह इन्द्र के पास चला आया।

"न्यौता देने आया हूँ।"

"किस बात का ?"

"डोमपाड़े के मदन और पारो की शादी है।"

"कब ?"

"इसी वैसाख में। मगर परेशानी बहुत है।"

"कैसी परेशानी ?"

"वर और वधू राजी है, लेकिन कन्यादान नदारद।"

"कितना चाहिए ?"

"बीस रुपये।"

"क्या कह रहे हो ? बीस रुपये में जोड़ मिल जायेगी ?"

सोरेन हँसा। कहने लगा, "क्यों न मिलेगी ? एक जमाने में पाँच रुपये देने से काम चल जाता था। बढ़कर बीस रुपये हुए। उसके बाद शहर की हवा ! खर्चा भी बढ़ गया। अधिक रुपये दो। नाइलन की साड़ी दो, रोलेक्स घड़ी दो, चाँदी का गहना दो। लड़के क्या चोरी करें ? इसी कारण पचायत बुलाकर हम लोगों ने नियम बाँध दिया है। बीस रुपये में ऊपर दहेज नहीं है। लाल सूती साड़ी के अलावा कोई कन्या-वस्त्र नहीं है। जस्ते के अलावा कोई गहना नही है। सामाजिक भोज में दाल, चटनी, मछली। जिसे जो देना हो, घर में ले जाकर दे।"

"वाह ! यह तो बहुत अच्छा किया।"

"मदन हम लोगों का अच्छा साथी है। घर नहीं था, सबने मिलकर उसका घर खड़ा कर दिया। बकरी बेचकर रुपये जुटाये, तो सिपाही बकरी उठा ले गये।"

कुछ देर तक सोरेन सोचता रहा। कहने लगा, "चन्दा उगाहकर शादी करेगा...और क्या ?"

"शादी में भोज का इन्तजाम होगा ?"

"क्यों ? पाँच लोगों के पास दाल-चावल है। तुम समझते हो कि मछली का मतलब रोहू कतला है ? नहीं, कतई नहीं। मैंने तो प्रचार कर दिया है, सैंधा, बेले, नि.. टेंगरा, पूंटी, चिंड़ि कुलीन मछलियाँ हैं, [illegible] हरिजन हैं। उनके लिए नहीं है यह।"

"मैं क्या करूँ ?"

"भई ! तुमसे क्या छिपाऊँ ? मदन पुलिस-चौकी में बन्द है। [illegible]

उधर से जुटा-बटोरकर शादी तो नहीं रुकेगी, मगर दूल्हे के बग़ैर शादी होती है क्या? सुना है कभी?"

"मुश्किल। फिर और भी दिक्कतें हैं। केस क्या है?"

"धर्मराज के मेले में नरसा के डोम लोग बाँस की चीज़ें बेचते हैं। दुकानों से उगाही के मामले को लेकर पुलिस के साथ डोमों का झगड़ा पुराना है। पिछले साल मदन ने मिलिट्री मिजाज से पुलिस को खदेड़ा था।"

"क्यों?"

"कहने लगा, पहले की सरकार को देता था, क्या अब भी दूं?"

झगड़ा शुरू हुआ तो मदन शायद बड़े ही गर्म मिजाज में था। उसने मछली की टोकरी झट से कांस्टेबल के सिर पर पहना दी। बड़ी टोकरी जिसमें मछली रखी जाती है। इस पर सब लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और पुलिस से फूट जाने को कहने लगे।

इसी कारण मदन हवालात या थाने में है। जामुला बाज़ार में पाकर पुलिस उसे अचानक पकड़कर ले गयी। सुना, दिन-दहाड़े शराब पीकर वह शान्ति भंग कर रहा था।

"तुम उसे छुड़ा सकते हो?"

"देखता हूँ।"

"देखो।" गहरे उद्वेग से सोरेन ने सीखी हुई बोली का त्याग कर दिया और अपनी भाषा में कहने लगा, "पारी ने रो-रोकर आँखें लाल कर ली हैं। माँ द्वारा ख़रीद-फ़रोख़्त सुन जैसे वह पागल हो गया है। चावल-दाल मौजूद है। पूंटी-चैला भी ख़ूब मिलेगी। लेकिन यह फ़जीहत कैसी?"

इन्द्र ज़ोर से हँस पड़ा। "बहुत अपने लगते हो, जब अपनी भाषा में बातें करते हो।"

"ऐसा? तो ठीक है।"

मदन को छुड़ाने का मामला आसान नहीं था। मोतीबाबू के साथ मुलाक़ात ही नहीं हुई। नवीन बाबू ने कहा, "मोती की ज़मीन को लेकर हंगामा खड़ा कर रहे हो और एक छिछोरे शराबी को बचाने के लिए दौड़े आये हो! यह सब क्या तुम ठीक कर रहे हो?"

बहुत कोशिश करके मदन को छुड़ाया गया। फलस्वरूप इन्द्र की इज्जत बहुत बढ़ी। तभी वह मदन और पारो की शादी में उलझ गया। सोरेन ने चरमा के संथाल, डोम, काउरा लोगों से उसे मिलाया। उनमें उसके प्रति श्रद्धा बढ़ी। सोरेन ने पहले ही यह साफ-साफ कह दिया था :

"गाँव छोटा है। काम भी एक जैसे हैं। बाढ़-अकाल में सबका दुख एक जैसा होता है। हर हालत में वे एक जैसे बने रहते हैं। इसी कारण ऐसा इन्तज़ाम किया गया है कि इस बार वे उनके पर्व में भी आयें। उनके पर्वों में हम लोग भी जायेंगे। मैं आदिवासी हूँ, वह डोम है, यह हिसाब भला चल पायेगा ?"

जैसे उसी की बात के समर्थन में मदन की शादी से पहले ढोल, धामसा, शिंगा बजने लगा है। डोम लोग जंगल में मंगल चंडी की पूजा करने गये हैं, सारा गाँव उनके पीछे गया।

"यह पूजा जरूरी है," रतन बोला, "मंगल चंडी कहो, या बागुती कहो, वन की रक्षा वही करती हैं।"

बैसाख की बारिश से आसमान में तपिश कम थी। हवा मीठी थी। चरमा नदी पार करके वन में घुसते ही हवा से हिलते हुए पेड़-पौधों ने उनका स्वागत किया था। प्राचीन बरगद का पेड़ जैसे इन लोगों की प्रतीक्षा में था। उसकी जड़ के आसपास की जगह साफ करके लीपी गयी। पूजा वहीं होनी थी। अपने थरथराते स्वर में रतन मंगल चंडी की प्रशंसा में रचा गीत गा रहा था। दूसरी ओर रसोई का इन्तज़ाम था। आज यहीं वन-भोज है। सेमारी की दाल की खिचड़ी और अमचूर की खटाई।

इन्द्र को बहुत अच्छा लग रहा था। विचित्र शान्ति। सोरेन उसे छोड़ कब उठ गया, पता ही नहीं चला। सोरेन को खोजने के लिए उठा। खोजते-खोजते चरमा के जंगल में घुसा। चरसा के गाँव वालों तथा सोरेन के हृदय का भेदन अप्रत्याशित भेद से हुआ। अब तक ऐसा नहीं हुआ था तब तक उसका ख़याल था कि उस पर इन लोगों की पूरी तरह आस्था है।

जंगल उसे खींच रहा था।

किसी ज़माने में इस जंगल के बारे में उसने बहुत कुछ सुना था। शाल, पियासाल, केंद, शिरिस, पलाश—तरह-तरह के पेड़ हैं यहाँ। बरगद.

पीपल और इमली। बीच-बीच में बँसवारियाँ। जंगललाट का अन्तिम चिह्न अभी भी मौजूद—वनविभाग द्वारा आरक्षित जंगल।

बहुत पहले चरसा नदी बार-बार धारा बदलने लगी थी। फलस्वरूप पहले वह जहाँ-जहाँ बहती थी, अब वहाँ जंगल हैं। वर्षा की बाढ़ में चरसा की प्रबल धारा इस वनभूमि को परे नहीं ढकेलती, इस सचाई को जानकर वनविभाग ने यह जंगल ख़त्म नहीं किया। बेशक शालवन की सृष्टि उन्होंने नहीं की। घने-घने झाड़-झंखाड़ बहुत हैं। उससे पानी रुकता है। इस दुर्गम वन ने एक ज़माने में इस इलाक़े का रक्तास्त इतिहास चुपचाप देखा है—ऑपरेशन बसाई टुडु।

इन्द्र को कुछ पता था, कुछ नहीं था। भीतर घुस जाने के बाद वन की सर्वव्यापी सत्ता में उसने खुद को खो दिया। उलट-कम्बल की झाड़ियाँ, ग्वालकँडे की लताओं के जाल झूल रहे हैं। गिलहरी दूर-दूर भागे जाती है। विचित्र हरी काई। इन रास्तों से न जाने कौन लोग जाते थे कभी! रास्ता उन्हें नहीं भूला। चलने के रास्ते में काई नहीं है। मन्त्रमुग्ध की तरह इन्द्र आगे चला गया, आगे बढ़ता गया। धीरे-धीरे वन के एकदम भीतर घुस गया।

झाड़-झंखाड़ काटकर तैयार ज़मीन पर हल के निशान। सोरेन। सोरेन ने चेहरा ऊपर उठाया। गंभीर जिज्ञासु दृष्टि। काफ़ी देर तक एक-दूसरे की ओर देखते रहे। फिर सोरेन के चेहरे पर मुसकान उभर आयी। दूसरी तरह की मुसकान। मुसकान में चुनौती है क्या? इन्द्र चुनौती नहीं चाहता। सोरेन के साथ उसकी कोई दुश्मनी नहीं है। दुश्मनी रह नहीं सकती। सोरेन जंगल काट कर ज़मीन हासिल कर सकता है। मगर वह अकेला है। उसके पीछे एक महान संगठन, राष्ट्र, प्रशासन है। और यही ज्ञान उसे मदद दे रहा है। सभी तरह की राजनीति ग़लत है। समझौता-परस्ती बेवकूफ़ी। इन्द्र जैसे लोग अकेले रहकर निर्मूल राजनीति करते हैं। बेशक ऐसे लोगों के होने पर ही काम चलेगा, वरना और सभी फ़ालतू हैं।

मगर तभी इन्द्र के मुँह से एक अद्भुत बात निकली। इन्द्र ने कहा, "बाड़ा क्यों नहीं लगाया?"

"अभी ज़मीन ख़ाली है। धान छींटने पर पौधे निकलते ही नज़र

रखने के लिए आदमी रहेंगे।"

"तुम्हारी जमीन है?"

"हम लोगों की है।"

"मवालों की?"

"सबों की।"

"मगर यह तो फारेस्ट वालों की जमीन है।"

"फ़ारेस्ट गार्ड को पता है। वे दोनों सयाने हैं।"

"फारेस्ट विभाग की जमीन?"

"हाँ, अवश्य ही फारेस्ट विभाग की जमीन है। सरकार की जमीन है। सरकार ने हम लोगों से सब-कुछ लिया है, मगर दिया कुछ नहीं है। जान कबूल, मगर भीख नहीं मांगेंगे। इसीलिए सब लोगों ने मिलकर यह जमीन हासिल की है। हँस रहे हैं, यह जमीन देखी है? कितना धान देती है! जिला कर रखती है।"

"इसके चावल से ही फिर...।"

"हाँ, इन्द्र।"

"मुझसे क्यों नहीं कहा?"

"तुम ईमानदार लड़के हो। तुम अपने तरीके से काम करना चाहते हो। मगर इन्द्र जो कुछ कहता है, उससे आगे बढ़ गया हूँ मैं। जब तुम नहीं थे, उस समय भी आगे बढ़ता रहा हूँ। मगर मन में कभी कोई भरोसा नहीं जगा।"

"नहीं जगा?"

"नहीं जगा। विश्वास नहीं मिला, न मिलेगा। बातों और काम में कोई मेल नहीं है। किस बात पर भरोसा हो? तुम खुद नहीं देख रहे हो? वर्गा रेकार्ड में चूहे-मूस-जैसे जमीन के मालिक मर रहे हैं। बाघ-शेर जैसे-के-तैसे ही रह गये। खास जमीन है, मगर हमें नहीं मिलेगी। वही लोग भोगते रहेंगे। यह सब जानकर गाँव में ही रह गया। हाँ, गाँव में ही रहूँगा। पुलिस वाला नहीं बनूँगा। पुलिस वाला बनकर आदिवासी और गाँव के लोगों पर बन्दूक नहीं उठाऊँगा। कलेजा जल गया है।"

"यह तो जबरदस्ती जंगल पर कब्ज़ा करना हुआ।"

चुभा है, उसका सिर फट जाता है। यह तुम भी देख रहे हो, पर मानोगे नहीं।"

"नहीं, मैं मान नहीं सकता।"

"मत मानो। क्या करोगे अब?"

"कुछ नहीं करूँगा। तुम क्या करते हो, देखूँगा। अपना काम करूँगा।"

सोरेन विजयी हँसी हँसा। कहने लगा, "कहीं संथाल हथियार न उठा लें, इसीलिए कितनी तरह से प्रचार किया जा रहा है। समाज मरता जा रहा है, और मैं बनूँ पुलिस वाला! तुम्हारे बनाये रास्ते पर चलने से यही होगा, इन्द्र। एक धनी जोत-मालिक के बदन में काँटा चुभने पर पुलिस आ जाती है। और फिर धान छाँटने से पहले ही प्रचार कर रहे हैं कि खेती-बाड़ी को लेकर कोई हंगामा सरकार नहीं होने देगी। हंगामे पर तो अकेले जोत-मालिक का हक है न?"

पहचान नहीं सका, पहचान नहीं सका सोरेन को। व्यर्थता का बोध। उस बोध से ही और भी करीब आया था इन्द्र सोरेन के। सरकारी दर से खेत-मजदूरी हासिल करने के आन्दोलन में उतारा था कार्यकर्ताओं को। कुछ नहीं हुआ। जैसे पहले नहीं हुआ था।

और इसी बीच वर्षा। बरसते पानी में धान-रोपाई के बीच नये उत्सव में जुट गये थे। सिधु-कानु के विद्रोह की स्मृति में चरसा गाँव में जो उत्सव हुआ, भारी पानी में भीगते हुए संथालों के औरत-मर्द शामिल हुए उसमें।

सामन्त ने कहा था, "क्या जरूरत थी? अगले साल सरकार की ओर से किया जायेगा यह उत्सव।"

"उस समय हम लोग बड़े पैमाने पर उत्सव मनायेंगे।"

"नहीं। सरकारी अनुष्ठान ही काफी है।"

"देखा जायेगा।"

सामन्त, नवीन बाबू और मोती बाबू ने कहा था, "बदलता जा रहा है, इन्द्र बहुत ही बदलता जा रहा है।"

इसीलिए द्वैपायन सरकार के साथ इन्द्र को भिड़ा देने की बात सामन्त के मन में आयी।

लेकिन इससे पहले ही वाम्भोनी के काठकाली मन्दिर के सेवाइत—पंचायत प्रधान—एक अच्छे खासे जमीन-मालिक चूड़ामणि पतितुंड तथा गौर लोगों के बीच जमकर झगड़ा हुआ। इन्द्र के पास अर्जी आयी, ढेरों अर्जियाँ।

अर्जियाँ एक सड़क के बारे में थीं। वाम्भोनी, वाकुली, सुड़ा, गंजरमुल, खेजुरहाटा, तालहाटा, कदमखुआँ—यह सभी जगहें सड़क से जुड़ जायेंगी। उससे हाट वालों को सबसे अधिक सहूलियत होगी। वैसे सभी को इससे फ़ायदा होगा। सड़क बनाने की माँग स्थानीय लोगों ने बहुत दिनों से कर रखी थी। विधानसभा के अनेक सदस्यों के पास, अनेक अर्जियाँ पड़ी हैं, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बाढ़ के बाद सड़क बनाने के निर्णय पर लोगों ने दोनों हाथ उठाकर सरकार की सराहना की। और जिस मंत्री महोदय ने इस सड़क के काम का उद्घाटन किया उनका बहुत स्वागत किया गया। सड़क के शुरू होने पर गाँव के लोगों को काम का भी आसरा मिला।

चूड़ामणि पुतितुंड, काठकाली मन्दिर के कारण प्रभावशाली हैं। पुतितुंड वंश को स्वप्न में प्राप्त यह काठ की काली-प्रतिमा जाने क्यों चाल-कुमडों के वगैर वकरा नहीं खाती? उनके मन्दिर के दीये में पूरे दस सेर तेल खपता है। यह तेल गठिया तथा सम्मोहन की महौषधि है। इससे अगर किसी को गठिया हो तो एकदम ठीक हो जाता है। कोई भी पुरुप या नारी किसी पुरुप या नारी के सम्मोहन में पड़ने पर इस तेल के कारण फंदे में से निकल आयेगा। चूँकि गठिया या सम्मोहन से उबरने की यहाँ व्यवस्था है, इसीलिए इलाक़े के चारों ओर जितना प्रकोप गठिया का है, उतना ही सम्मोहन का भी है। यह दैवी तेल उनके लड़के और मैट्रिक-पास पुत्रवधू बाँटती है। इसका वे पैसा लेते हैं। माँ काली के दफ़्तर में काम करते हैं। झंडा बदल कर चूड़ामणि पंचायत का प्रधान बना है।

अगर कभी पत्नी कहती, "माँ का काम क्यों नहीं देखते?"

चूड़ामणि हँसकर कहता, "तुम क्या समझोगी! अभी जो करता हूँ, वह काम भी माँ ही ने जुटा दिया है। कभी सोचा नहीं था कि इतने पैसे हाथ से पकड़ूँगा।"

सरल और शिशुप्राण सरकार। चूड़ामणि जैसे झंडा बदलने वाले घट जोनदार और सेवाइत को पंचायत का प्रधान बनाया और यह भी तय किया गया कि चूड़ामणि के हाथों से इलाके के विकास की विविध योजनाओं पर रुपये खर्च कराये जायेंगे। इसके पीछे कोई बुरा खयाल नहीं है। कल का निरगा आज लाल हुआ है! होगा क्यों नहीं? हृदय-परिवर्तन हुआ है। इस निरगे ने ग्राम-जीवन में तरह-तरह की भूमिकाएँ की है। वह महाजन भी बना है, उसके हाथ में कच्चे रुपये भी रहे हैं। लेकिन इसमें क्या? वह क्या अभी भी पंचायत का सिरमौर नहीं बना हुआ है?

चूड़ामणि के हाथों से रुपये खर्च हो रहे हैं। सड़क बन रही है। अचानक सड़क का काम बन्द। इन्द्र आदि के पास अर्जियों पर अर्जियाँ। उस समय सुबह के दस बजे होंगे। बी० डी० ओ० दफ्तर से बीज-धान किसे कितना जारी किया गया है, इन्द्र ने यह जानना चाहा था। दफ्तर के लिपिक ने कदम के हाथ में 'आषाढ़ के महीने में मछली की अच्छी पैदावार के लिए मछली के पोटों का संवर्धन तालाब बनाने' से सम्बन्धित कागजात थमा दिये। जागुला के मत्स्य-विभाग के अफसर बी० डी० ओ० दफ्तर के माध्यम से इनका प्रचार करा रहे हैं और स्वयं वर्षा उतरने से पहले 'माँ तारा' स्पेशल से केदारनाथ-बद्रीनाथ घूमने के लिए गये हुए हैं।

इन्द्र एक तरफ तो उसे डाँट रहा था और साथ ही सरकारी प्रचार में भाषा की करामात देख-देखकर बेहोश हो रहा था। उसकी समस्या धान और धान रोपने वाले किसान थे, 'मछली के प्रणोदित संवर्धन में मछली के सेसिहर' नहीं। उसकी धारणा है कि मछली की खेती वाले पोखर में वैज्ञानिक खाद के इस्तेमाल से पहल करना असंभव है। हारान को यह समझाना असंभव है कि सरकारी खाद बिक्री के लिए नहीं, इस्तेमाल के लिए है। इन्द्र के कहने से भी क्या होगा? हारान को पता है कि खाद खरीदने ही नकद रुपये देने होंगे, फिर चाहे उसकी कीमत कितनी ही कम क्यों न हो। रुपये तो रुपये हैं! और हारान वगैरह को यह भी पता है कि एक बार सरकारी खाद का स्वाद चख लेने पर धरती राक्षसी बन जायेगी। लगातार वही खाद माँगेगी। गोबर की खाद से काम नहीं चलेगा। इससे तो गोबर की खाद बेहतर है।

अक्रान्त कौरव

सी बीच उन्हें डिमडिम की आवाज़ सुनायी पड़ी। ढोल को धीरे-
डंडी से पीटते हुए जाने कौन लोग आ रहे हैं। कौन लोग? क्या हुआ?
वरसा में कुछ हुआ है? वहुत दिनों से उधर नहीं गया था।
डोम, संथाल, केवट, काउरा—पच्चीस के क़रीब आदमी। हर उम्र
ोग उस भीड़ में थे। साथ कई लड़के भी थे। गौर, कदम, रजत इन्हें
नते हैं। लड़के सिर्फ़ उसके ही दल के नहीं, सभी राजनीतिक दलों के
। वह लड़का उग्र राजनीति का समर्थक है। यह लोग सभी पार्टियों के
। उन दो लड़कों ने ज़िन्दगी में कभी भी वामपंथी राजनीति नहीं की।
चानक सभी क्यों इकट्ठे हो गये हैं? किस कारण से?

लड़के आगे आये। अर्ज़ी है। निमंत्रण-घर की टेबुल पर विछाने वाले
रोल काग़ज़ में लिपटी हुई अर्ज़ी। दस हाथ लम्बे काग़ज़ के ऊपर संक्षिप्त
वयान लिखा हुआ है। फिर शुरू से अन्त तक अँगूठे के निशान।

चूड़ामणि द्वारा किये गये विभिन्न कारनामों की संक्षिप्त सूची।
सड़क का काम वन्द है, फिर शुरू होगा। अच्छी तरह वर्षा उतरने से पहले
तक चलेगा। पहले चूड़ामणि का फ़ैसला हो। जागुला में, ब्लॉक दफ़्तर में,
सदर न्यायाधीश के यहाँ वार-वार शिकायत करके भी कोई फ़ायदा नहीं
हुआ।

चूड़ामणि चार-चार आने पैसे देकर आदमी रिक्रूट कर रहा है। वह
हिसाव दिखा रहा है कि सात सौ लोग खट रहे हैं। असल में खटते हैं तीन
सौ लोग। वाक़ी चार सौ लोगों की दिहाड़ी वह ख़ुद हड़प रहा है। पहले
जितना गेहूँ दिया गया था, इसी तरह वाँटा गया था। चूड़ामणि हफ़्ते में एक
दिन उन्हें मज़दूरी नहीं देता। कहता है, वह रुपया मन्दिर की सेवा में देना
है। मज़दूरी दो रुपये। इस तरह मज़दूरी हड़पकर महीने में चौवीस सौ
रुपये मार रहा है। इस आरोप की सचाई का प्रमाण चूड़ामणि की
मौजूदा सम्पत्ति है, जो उसने एक साल में जुटायी है। सम्पत्ति है: जागुल
स्टेशन के सामने सिनेमाघर, विभिन्न रूटों पर चार वसें, जागुला में भ
पर चलने वाली दस लॉरियाँ। सव-कुछ वेनामी है। सिनेमा की मालि
जयकाली कोई मानवी नहीं है, काठकाली के साथ पूजे जाने वाली जयका
देवी है। चार वसें जिन लोगों के नाम पर हैं, वे वहुत पहले ही स्वर्ग सि

चुके हैं। सोलिसीटर [illegible] के [illegible] पर हैं। [illegible] के बाद उनकी लड़की की शादी हुई थी। इसका फैसला करना पड़ेगा।

इन्द्र ने दल के लड़कों से कहा, "कानून की लड़ाई है। [illegible] इसके हिस्सेदार हैं [illegible] बी० बी० [illegible] बाबू, [illegible]"

सबके साथ इन्द्र भी चला था। धीरे धीरे जनता की भीड़ [illegible] की ओर [illegible] जनता ने मुरारीलाल को घेर लिया था। मुरारीलाल [illegible] बहुत ही [illegible] इन्द्र ने [illegible] सीधे [illegible] कहा, "आप जनता के सामने [illegible] जवाब दो।"

"हुँआ, हुँआ।"

"रुपये का हिसाब दो।"

"सब हुआ।"

"रुपये लाये हो?"

"रुपये लिये हैं।"

"कितने?"

"नहीं चार हजार।"

"चार हजार?"

[illegible]

[illegible] मुरारीलाल [illegible] कहा, "[illegible]"

"[illegible]" [illegible]

"[illegible] है, [illegible] है, [illegible] है, [illegible]?"

इन्द्र ने [illegible] हुए कहा, "[illegible]?"

[illegible] मुरारीलाल [illegible] ने कहा, "[illegible] है, [illegible] पास नहीं है। [illegible]"

[illegible] मुरारीलाल [illegible] इन्द्र ने कहा, "[illegible]

[illegible]

रहेंगे। कल इसे साथ लेकर बैंक जायेंगे। इनके लड़कों पर भी नजर रखना।"

तीसेक लोग बैठे रहे। सामने बैठे हैं चूड़ामणि और उनके लड़के। इन्द्र बोला, "पंचायत से इस्तीफ़ा देना पड़ेगा। तुम्हारा सिनेमा और गैराज मैं बन्द करके छोड़ूँगा।"

समय बीतता गया, बीतता गया। जुटे हुए लोग मजदूरी के रुपये वापस पायेंगे, यह जानकर वे धीरे-धीरे लौट गये। बहुत गालियाँ दीं। खूब मखौल उड़ाया चूड़ामणि का! चूड़ामणि कहने लगा, "तुम लोगों ने जो किया है, इसका बदला माँ लेंगी। लिखा भी है, दस दिन चोर के तो एक दिन साधू का।" इन्द्र उसे डपटने लगा।

फिर पुलिस आयी। चूड़ामणि की मैट्रिक-पास पुत्रवधू की ओर किसी का ध्यान नहीं गया था। गोद के लड़के को सास को थमाकर 'जय माँ काठ-काली' कहकर वह खिड़की के रास्ते घर से निकल गयी। दौड़ती चली गयी। पहले गयी बी० डी० ओ० दफ़्तर। वहाँ कमरे में घुसकर वह कुर्सी पर जा बैठी। दफ़्तर के जिस लिपिक ने चूड़ामणि की मेहरबानी से पक्का मकान खड़ा किया है और हरियाणा का बैल ख़रीदा है, वह पुलिस-चौकी पहुँचा।

पुलिस ने आते ही बेधड़क लाठी चलायी और इकट्ठा लोगों को मारने लगी। जबाब में इन्द्र और उनके साथियों ने भी मारा। गौर का सिर फट गया और उसमें से खून गिरने लगा। उसे संभालने के लिए आगे बढ़ा तो इन्द्र की गुद्दी पर खाँडे की तरह लाठी की चोट हुई। चारों ओर अँधेरा छा गया। तभी सिर पर लाठी गिरी। ख़ून।

पुलिस इन्द्र और गौर को अस्पताल ले गयी। पुलिस वाले पहले थाने ले जाकर पार्टी के लड़कों को छोड़ बाक़ी सभी पर केस बनाना चाहते थे।

चूड़ामणि पुतितुंड ग्राम-जीवन के एक अपरिहार्य स्तम्भ हैं। चूड़ामणि-जैसे लोग समाज के प्रतिष्ठित अंग हैं। सरकारें आती हैं, सरकारें जाती हैं, चूड़ामणियों का कुछ नहीं बिगड़ता। किन्तु शंकाजनक घटना यह है कि चूड़ामणि के कारनामे की वजह से सभी दल तथा विचारधारा के लड़के एकजुट हो गये हैं। शासक दल के लड़कों में अपने नेताओं के प्रति अनास्था बहुत डर की बात है।

पार्टी के लड़कों के दबाव डालने पर सबको छोड़ देना पड़ा और बहुत ही परेशान होकर सामन्त को चूड़ामणि से बकाया मजदूरी दिलानी पड़ी। मजदूरों की संख्या से चार सौ नाम छँट जायेंगे, रुपये हासिल किये जायेंगे, आदि के बारे में जबानी आश्वासन दिये गये। चूड़ामणि फिलहाल दक्षिण के भ्रमण पर चला गया। फलस्वरूप सब-कुछ दबा रह गया। लड़के कहते हैं, "सड़क का काम चलेगा, हम लोग रुपये देंगे।"

सामन्त खीझ उठा, "यही करो। कौन लोग तुम्हें उकसा रहे हैं, गलत रास्ते ले जा रहे हैं, यह नहीं समझ पा रहे हो तुम!"

आंशिक विजय। वही चूड़ामणि रहा, उसकी सम्पत्ति बरकरार रही, रुपये का हिसाब बकाया रहा। फिर भी यह सुना गया कि उनकी बड़ी जीत हुई है।

अस्पताल में ही इन्द्र ने सब-कुछ सुना। मन में अतृप्ति, अशान्ति, क्षोभ। विपण्ण चेहरा लेकर कदम एक दिन उससे मुलाकात करने गया। उसके बगल में दबे थे, *'भारत-जर्मन खाद प्रशिक्षण योजना'*, *'बिधु नर्सरी ऐंड एग्रीकल्चरल फार्म प्राइवेट लिमिटेड'* तथा *'कुमार ट्रैक्टर कंसेशन्स'* के बहुत सारे विज्ञापन। नवीन बाबू के साथ बात करने पर उन्होंने थमा दिये हैं। *उसके बाद एक सर्टिफिकेट दिखाया।* विपण्ण आवाज में अपने दुख की कहानी सुनायी। कदम के घर के छाजन पर एक राक्षसी कोंहड़ा फला था। उसके बड़े भाई उसे बेचने के लिए ले गये थे। संयोगवश कदम साथ था। दोनों पहले कृषि-प्रदर्शनी में गये। मोतीबाबू ने उनसे कोंहड़ा ले लिया और प्रदर्शनी में रखा। कोंहड़ा बाद को प्रदर्शनी में भी गया और कदम को एक सर्टिफिकेट मिला है। सुनते ही माँ बिगड़ जायेगी, दरअसल यह लड़के की पार्टी को दे सकता है, लेकिन कोंहड़ा प्रदर्शनी में देने पर काम नहीं चलने वाला। हालत बहुत ही खराब चल रही है।

फिर कदम कहने लगा, "वह और और गाँव से सब्जी लाकर हाट में बेचेंगे। देखेंगे कि थोक व्यापारी लोग क्या तिकड़म करते हैं? उसके बाद खुद सहकारिता संघ बनाकर शहर में चालान देंगे।"

"और काम नहीं है?"

"कदम और कोई काम नहीं करेगा, और भी नहीं करेगा। दोनू

अंडे का व्यापार करेगा। किसलिए करें वे लोग कोई और काम? जी-जान लगाकर काम करने पर पार्टी के लिए उसका क्या मूल्य है? चाहे कोई धन्धेबाजी करे, लेकिन पार्टी के लड़के होकर उनसे यह काम नहीं होगा।"

"पहले मैं लौट आऊँ, फिर करना यह सब-कुछ।"

"हाँ, उसके बाद ही बात बनेगी।"

कदम उसे शरमाते हुए एक बंडल बीड़ी और दो बिस्कुट देकर चला गया। जाने से पहले कह गया, "हम लोग भी दाँत गड़ाये पड़े हैं, अभी नहीं छोड़ेंगे। हाट गंज में दीनू, सोरेन घोषणा कर रहे हैं कि हम लोग साथ-साथ हैं। उन्होंने बात फैलायी है कि मन्दिर के तेल में कोई गुण नहीं है, केवल पैसे खींचने का तिकड़म है। अस्पताल जाओ, दवा मिलेगी।" सोरेन ने तर्क दिया, "अगर मन्दिर के तेल में जो गुण हैं वैसे किसी चीज में नहीं हैं तो फिर पुतितुंड परिवार वाले शहर से डॉक्टरी दवाई क्यों मँगाते हैं? उनकी बुआ गठिया से अपाहिज क्यों है?"

"यह सब सोरेन कह रहा है?"

"हाँ, कह तो रहा है। और बी० डी० ओ० की बदली हो गयी है। और क्या कहना था? अरे हाँ, बड़ी बात तो भूल ही गया हूँ। सिधु-कानु के हूल को लेकर सोरेन बहुत बड़ा उत्सव मनाना चाहता है। हम लोगों से मदद लेगा। सिधु-कानु का मेला लगाया जायेगा। रोतोनि का गुमाश्ता, पुतितुंड का लड़का वगैरह सब कह रहे हैं कि बराई टुडु फिर आ जायेगा। वे बहुत डर गये हैं।"

"क्यों? यह बात क्यों कह रहे हैं?"

कदम ने गरदन घुमाकर इन्द्र के माथे की तरफ़ देखा। कहने लगा, "पहले चूड़ामणि का घेराव किया और अब सिधु-कानु का फंक्शन करने जा रहे हैं। इसी से वे दो-दो चार जोड़ रहे हैं। माथे पर अभी भी पट्टी बँधी है। तब गोली चलाने से भी नहीं डरे थे। अब उन्हें क्या हुआ है?"

"सिर और गरदन बहुत ही नाजुक अंग हैं।"

कदम चला गया। गोरा बाबू साइकिल पर चढ़कर आये। इन्द्र की ओर देख मन का उद्वेग जताने के लिए बोले, "तुम्हें पता नहीं है कि पुलिस वालों की बदली कर दी गयी है? जिन लड़कों के उकसावे पर तुम्हें ग़लत-

फ़हमी हुई थी, उन्हें भी आगाह कर दिया गया है।"

इन्द्र चुप रहा।

"हम लोगों को हर कदम सोच-समझकर आगे बढ़ाना चाहिए। हठ-धर्मी से काम नहीं करना चाहिए, जैसा उस दिन किया था। क्या हमें ऐसा करना चाहिए या ऐसा कर सकते हैं? हम क्या उग्रपन्थी हैं?"

इन्द्र कुछ नहीं बोला।

"अस्पताल से छुट्टी मिल जाने पर हम लोग आलोचना के लिए बैठेंगे। क्योंकि पार्टी की नीति अनुशासन के लिहाज़ से...।"

इन्द्र बीच में बोल उठा, "आत्मालोचना और आचरण का मूल्यांकन निहायत ही जरूरी है। इसके बिना कार्यकर्ता और पार्टी कोई एक हो सकते हैं?"

"बिलकुल ठीक, तुम तो जानते ही हो।"

गोरा पसरकर बैठा था। वैसे भी वह सूखे दिल का आदमी है, इसीलिए उसने माना कि यह काम उसका नहीं है। नवीन-दा को खुद आना चाहिए था, वे खुद नहीं आये...।

इन्द्र ने आँखें बन्द कर लीं और चुप लेटा रहा। थोड़ी देर तक बक-बक करने के बाद गोरा उठ गया। इन्द्र सो गया।

दूसरे दिन मोहन, रतन और दीनू का मौसा सदानन्द मिलने आया। रतन के मुँह से निकला, "उफ़! कितने टाँके लगाये हैं, दाग रह जायेगा। यह तो बहुत बुरा हुआ।"

इन्द्र हँस पड़ा। "दाग रह भी जायेगा तो क्या बुरा है? मैं क्या कोई लड़की हूँ कि चेहरे पर नुक्स आ जाये तो रोने लगूँ।"

मोहन उसकी ओर मुसकराते हुए देख रहा था। उसके बाद बोला, "झटपट अच्छे हो जाओ। क्लब का फंक्शन होने जा रहा है? हम लोगों के उद्योग से नाटक तैयार किया है। गीतों की सुर मैंने दिया है।"

"अभिनय भी होगा?"

"नाच, गाना, अभिनय—सब-कुछ होगा।"

"मेरे शरीर का जो हाल हुआ है...।"

"धत्त! दस दिन बिस्तर पर पड़े रहने पर कमजोरी लगने लगती है।"

"इसके अलावा तुम लोगों के साथ मेरा...!"

"जमीन-आसमान का फ़र्क है। वहाँ से चलो तो सही !"

"चलूँ कैसे ?"

"कब छोड़ोगे ?"

"शायद परसों।"

"बैलगाड़ी में बिठा ले जाऊँगा। लाया तो हूँ। फूल बेच दिया है। कम नहीं, एक सौ दस रुपये में !"

"चाहता हूँ कि कहीं जाकर सो जाऊँ।"

"इतना काम किया है ! काम नहीं है क्या वह तुम्हारा ?"

रतन अचानक बूढ़े बुजुर्ग की भूमिका निभाते हुए कहने लगा, "अरे बाबू ! बात से बात बढ़ जाती है। काम की बात पर क्यों न गौर करें ? इन्द्र ! तुम एक भरोसा हो, लड़कियों की तरह क्यों करते हो ? यह लड़ाई मजदूरी हासिल करने की लड़ाई है। तुम गोविन्द के घर के ऊपर वाले कमरे में रहो। वहाँ आराम भी मिलेगा। बाम्भोनी में तुम्हारी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। उस दिन पता नहीं था। तुम्हारे बाप को जानता था। वह बहुत ही डरपोक था, जल्दी से डर जाता था। तभी तो राम मुखियों के बाप ने उसे उजाड़ा। वैसे भी तुम्हारे पास कोई ठौर कहाँ है ? अच्छा चलो, उठो तब।"

इन्द्र ने जैसे अचानक कुछ तय कर लिया। लेकिन उससे कुछ नहीं कहा।

गया। नींद खुलते ही खिड़की से आसमान दिखायी दिया। हरर-हरर की आवाज सुनायी दी। सुअरों को भगाकर घर में ला रहे हैं वे लोग। नीचे से गोरेन की आवाज सुनायी पड़ी, "अक्षर पहचानते-पहचानते ही तेरी मूँछें निकल आयीं, सना ! तुझसे पढ़ाई नहीं चलने की।"

सुनते-सुनते चन्द्र फिर सो गया। क्या उसके शरीर को इतनी नींद की जरूरत थी ?

दूसरे दिन सुबह बदन हलका था। उठकर सना के साथ चरसा के तट पर पहुँच कर दैनिक कर्म से निपटे और नदी की पतली धार में मुँह धोया। लाई और प्याज खाते हुए नदी के किनारे घूमते रहे। सना ने उसे आग्रह के साथ डोम टोली की गड्ढी दिखायी। कहने लगा, "अभी मिट्टी खोदी जा रही है, हम लोगों ने मिट्टी निकाली है, दुबारा खोद रहे हैं। अभी भी थोड़ा-बहुत पानी रहता है।"

"यह है क्या ?"

"नदी किनारे डहर बना रहे हैं।"

"डहर ?"

"सना का बाप कहता है, 'पानी की तकलीफ बहुत है। नदी किनारे डहर खोदने पर पानी मिल सकता है।' "

"कुआँ खोदना चाहिए।"

"यह सभी को पता है। मगर हम लोग कुआँ खोद नहीं सकते। कुएँ का खर्च बहुत अधिक है।"

कुआँ नहीं है, पानी नहीं है। चरसा जैसे कितने ही गाँव हैं, जहाँ पीने का पानी नहीं है। पुराने तालों का जीर्णोद्धार क्यों नहीं किया जाता ? सान-दीघा गाँव के छह ताल भी बुरी दशा में हैं। केवल एक में साफ पानी है। पानी नहीं है, इसीलिए आसमान की ओर ताकते हुए पूजा-पाठ किया जाता है। पानी के लिए गुहार मचायी जाती है। सुना है, सानदीघा के एक ताल में पानी ऊपर नहीं आया था। उस समय द्रोण डोम ने पानी को पुकारा था और पाताल से पानी ऊपर उठ आया था। ऐसे बहुत-से क़िस्सों में देहाती इंसान आज भी आस्था रखते हैं। प्रकृति पर निर्भर रहोगे तो अलौकिक में आस्था रहेगी। विज्ञान को आधार बना लो, अलौ-

अरण्यानी कौरव :

किफ पर आस्था नहीं रहेगी। लेकिन यह सब कौन करेगा? रतन कहता है, "यह तमाम बातें कौन-सी व्यवस्था में हो रही हैं? किसकी व्यवस्था है यह?"

सोरेन ने कहा, "तुम अपना काम करो, मैं अपना। अपने-अपने रास्ते पर रहो। फिर देखेंगे कि कौन-से रास्ते से नया मिलेगा?"

"ठीक कहते हो, सोरेन।"

"इससे थोड़ी ताक़त मिली है?"

"एक दिन नहीं, अकसर मुर्गा क्यों खिला रहे हो?"

"मटर बेचकर उस बार मुर्गी ख़रीदी थी। घर-घर में कहलाया था। सब अपने-अपने घर में मुर्गी पालो। अंडा बेचो, मुर्गा बेचो। मैं कभी भी नहीं बेचता।"

"फिर भी रोज-रोज मुर्गे की जरूरत नहीं है।"

"यह रास्ता सारा-का-सारा ग़लत है। वह रास्ता पूरा-का-पूरा सही है। मान लेता, अगर वैसा काम देखता। काम का अता-पता नहीं है। ज़मीन-मालिक और पुलिस—दो यमों से छुटकारा नहीं है। यह सब देखकर सोचा कि जीने का कुछ हिसाब-किताब करना पड़ेगा, वरना मर जायेंगे।"

"समझा, मगर...।"

"हथियार उठायें या नहीं? अगर हथियार उठाने को कहें तो हथियार उठा लेते हैं। उस दिन पुतितुंड के घर पुलिस मार-पीट कर रही थी। हाथ में अगर लाठी रहती तो...क्या वे मार पाते? खाली हाथ होते भी तो शेर की तरह कूद पड़े थे।"

"उस समय भला विश्लेषण की ताक़त रहती है! उस समय तो मन में गुस्सा भरा होता है।"

"तुम्हारे फ़ंक्शन की तैयारी कहाँ तक पहुँची है?"

"जरा पानी पड़े, रोपाई हो जाये। उसी समय फ़ुरसत मिलती है, फ़ुरसत का काम है। हूल के बारे में अच्छी तरह पता नहीं था। पढ़ने-जानने में समय लगेगा।"

कई दिन बाद सामन्त ने इन्द्र को बुलाया। इन्द्र के पहुँचते ही वह बोल उठा, "सोरेन से बहुत घुल-मिल रहे हो। कितना जानते हो उसे? मैं नहीं

चाहता कि संथाल लोग अपने किसी प्रसंग को लेकर नाचें-कूदें। बहुत ही जटिल मामला है यह।" इन्द्र का सम्पर्क द्वैपायन के साथ तभी हुआ था।

द्वैपायन सरकार की बात सुन तोरेन की आँखें दुर्बोध्य हो गयी थीं। कहने लगा, "कुछ बात है क्या ?"

"क्या हो सकती है ?"

"पता नहीं। आदिवासियों की तरफ़ बहुत ध्यान दे रहा है वह। देखता हूँ तो ज़रा डर लगता है। सरकारी आदिवासी अपनी पार्टी का तो आदमी है नहीं ?"

"नहीं। दूसरी पार्टी का आदमी है।"

"मिशनरी को पहचानता हूँ, राजा बाबू को भी पहचानता हूँ। लेकिन यह आदमी अपरिचित है। तुम कह रहे थे कि चरसा, बाकुली और कदम-धुआँ जाने की मनाही है ?"

"हाँ।" इन्द्र संशय में था और अस्वस्ति भी।

"जो लोग सिर खपाकर नक्सली आंदोलनों पर अँग्रेज़ी में किताब लिखते हैं, वे भी इन तमाम गाँव-गिरांव का चक्कर लगा गये हैं।"

"लेकिन यहाँ के चक्कर नहीं लगाये।"

"देखो, यह बात छोड़ो। हम लोगों के फंक्शन में बाकुली के संथाल लोगों ने जो बात कही है, वह बात असली है। बलाई टुडु को लेकर जितने गाने रचे गये हैं, वे सभी गाने उसमें गाये जायेंगे। कहते हैं कि वह भी मशाल था। सिधु-कानु की लड़ाई को नये सिरे से दिखा गया है। उसका नाम लेना ही पड़ेगा।"

"यह सब मैं नहीं जानता।"

"लेकिन मैंने एक तरह से फ़ैसला किया है ।"

"क्या फ़ैसला किया है ?"

"सबसे पहले पेश किया जायेगा बाबा तिलका माझी का प्रसंग। उसके बारे में बहुत कम लोगों को पता है। मगर अँग्रेज़ों के साथ पहली लड़ाई उसी ने ही शुरू की थी। हाँ। सिधु-कानु की लड़ाई से सत्तर साल पहले। उसके बाद कहूँगा सिधु-कानु-चाँदो-भैरव की कथा। उसके बाद सुनायी जायेगी मालदह के जितु संथाल की लड़ाई। उसके बाद तेभागा की लड़ाई

में शहीद हुए संथालों का वर्णन आयेगा। बाद में वसाई टुडु और नक्सलियों की यादगार में भी पर्व मनाया जायेगा। इन सब प्रसंगों की नौटंकी तैयार की जायेगी। मैं सुमिरन गाऊँगा।"

इन्द्र गंभीर हो गया। कहने लगा, "यह सब बातें सबसे मत कहना। कहने से भारी गड़बड़ खड़ी हो जायेगी।"

"अच्छा!"

"उस आदमी के कारण इस मौक़े पर फंस गया।"

"सामन्त को कैसे पता चलेगा? ले आना न उसे भी!"

हलकी बारिश हो रही है। झमाझम बारिश के दिन आते हैं अचानक। रूखे लाल प्रान्तर में हरे घास के अँखुए फूटते हैं। बारिश आने पर पंछियों का झुंड कीड़े-मकोड़े खाने के लिए जमीन पर उतरता है। कदम के घर के छाजन पर फिर बड़ा कोंहड़ा फलता है। रोपाई तेजी से चलती है। बीज-तल्ला से लाकर धान के पौधों का खेतों में बोना, रोपाई करना या धान गोड़ना आदि—सभी के लिए खेत-मजदूर चाहिए। सरकारी रेट पर खेत-मजदूरी हासिल करने का आंदोलन। वह यह नहीं कर पा रहा है, इसलिए इन्द्र को दुख हुआ। सामन्त, नवीन बाबू, मोती बाबू नहीं चाहते कि यहाँ वह रहे। वह भी यह समझता है। चूड़ामणि पतितुंड की घटना। दीनू और रजत कह गये हैं कि इन्द्र निश्चित होकर चले जायें। खेत-मजदूरी के इस मामले में वे लड़ाई जारी रखेंगे। इस लड़ाई में वे विभिन्न दलों के लड़कों को भी अपने साथ शामिल करेंगे। सभी दलों के लड़के अच्छे हैं, वरना चूड़ामणि के साथ लड़ाई लड़ने के लिए क्यों आते भला? उनका अपना दल या संगठन नहीं है क्या? काम के माध्यम से उनके साथ एकजुट होना पड़ेगा। बेकार तथा अवसरवादी नेतृत्व के समांतर मजबूत संगठन बनाना पड़ेगा। इन्द्र ऐसी बातें क्यों सोच रहा है?

जाने से पहले इन्द्र ने नवीन बाबू से कहा, "वसाई टुडु के आंदोलन वाले गाँवों में तो आप लोगों ने उस आदमी को दौरा नहीं करने दिया है। फिर उसे दूसरे गाँव क्यों दिखा रहे हैं?"

"पता नहीं है इन्द्र, मुझे कुछ पता नहीं।"

"कौन है यह आदमी? पीर या पैग़म्बर?"

"पता नहीं।"

"अचानक मेरी गरदन पर यह चोट क्यों? मैं क्या सारे गाँवों को जानता हूँ? जिन लोगों को पता है वे यहाँ क्यों नहीं भेजे जाते?"

"पता नहीं। शायद गोरा जाये।"

"गोरा बाबू? शहर छोड़कर?"

गोरा ने कहा, "जरूर जाऊँगा। तुम मेरे नीचे हो। अभी भी कम जानकारी है तुम्हारी। मेरे साथ घूमने पर कुछ सीखोगे भी। खेती-बाड़ी चल रही है, वरना बेटेराम को उनका उत्सव दिखा देता।"

द्वैपायन कहने लगा, "उत्सव मैंने बहुत-से देखे हैं। उत्सवों में नाच-गाना अब पहले जैसा जमता नहीं है।"

गोरा बोला, "वैसा नाच अब कहीं नहीं होता। क्यों नहीं होता, इसका किसी को नहीं पता। सब दूसरी तरह के होते जा रहे हैं न।"

इन्द्र शरारत से बोला, "शायद खाना नहीं मिलता, इसलिए।"

गोरा ने जवाब दिया, "तुम ठीक कह रहे हो।"

द्वैपायन ने एक छोटा भाषण ही दे मारा। "खाना मिले या न मिले, नाच के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। संथाल और दूसरे आदिवासी लोग जिन्दगी की खुशी से नाचते हैं। जिन्दगी की खुशी एक ऐसी चीज है, जिसके साथ भूख का कोई संबंध नहीं है।"

गोरा मूर्खानन्द है। उसने चिढ़कर कहा, "अच्छा! पेट के भात के साथ उसका कोई संबंध नहीं है?"

"नहीं। यह सब बातें विदेशी विशेषज्ञों को ही पता है।"

"खाना न जुटने पर भी 'बाबू आये है जी' कहकर नाचना होगा?"

द्वैपायन अवज्ञा की हँसी हँसकर चुप हो गया।

"भूख के कारण नष्ट नहीं हो रहे हैं, अच्छी बात है! फिर उन लोगों की जिन्दगी की खुशी किसलिए नष्ट हो रही है?"

द्वैपायन पेचीदा, लेकिन परम धैर्य की हँसी हँसा। अपने भाषण का दूसरा दौर। "उन लोगों में राजनीतिक चेतना जगाना, उनमें गैर-आदिवासी शिक्षा-व्यवस्था चालू करना जैसी बातें ठीक नहीं हैं। उससे उनका मौलिक आदिवासीपन नष्ट हो जाता है। उनके रिवाज में, बातचीत में

में शहीद हुए संथालों का वर्णन आयेगा। वाद में वसाई टुडु और नक्सलियों की यादगार में भी पर्व मनाया जायेगा। इन सव प्रसंगों की नौटंकी तैयार की जायेगी। मैं सुमिरन गाऊँगा।"

इन्द्र गंभीर हो गया। कहने लगा, "यह सव वातें सवसे मत कहना। कहने से भारी गड़वड़ खड़ी हो जायेगी।"

"अच्छा!"

"उस आदमी के कारण इस मौक़े पर फंस गया।"

"सामन्त को कैसे पता चलेगा? ले आना न उसे भी!"

हलकी वारिश हो रही है। झमाझम वारिश के दिन आते हैं अचानक। रूखे लाल प्रान्तर में हरे घास के अँखुए फूटते हैं। वारिश आने पर पंछियों का झुंड कीड़े-मकोड़े खाने के लिए ज़मीन पर उतरता है। कदम के घर के छाजन पर फिर वड़ा कोंहड़ा फलता है। रोपाई तेज़ी से चलती है। वीज-तल्ला से लाकर धान के पौधों का खेतों में वोना, रोपाई करना या धान गोड़ना आदि—सभी के लिए खेत-मजदूर चाहिए। सरकारी रेट पर खेत-मज़दूरी हासिल करने का आंदोलन। वह यह नहीं कर पा रहा है, इसलिए इन्द्र को दुख हुआ। सामन्त, नवीन वावू, मोती वावू नहीं चाहते कि यहाँ वह रहे। वह भी यह समझता है। चूड़ामणि पतितुंड की घटना। दीनू और रजत कह गये हैं कि इन्द्र निश्चित होकर चले जायें। खेत-मज़दूरी के इस मामले में वे लड़ाई जारी रखेंगे। इस लड़ाई में वे विभिन्न दलों के लड़कों को भी अपने साथ शामिल करेंगे। सभी दलों के लड़के अच्छे हैं, वरना चूड़ामणि के साथ लड़ाई लड़ने के लिए क्यों आते भला? उनका अपना दल या संगठन नहीं है क्या? काम के माध्यम से उनके साथ एकजुट होना पड़ेगा। वेकार तथा अवसरवादी नेतृत्व के समांतर मजवूत संगठन वनाना पड़ेगा। इन्द्र ऐसी वातें क्यों सोच रहा है?

जाने से पहले इन्द्र ने नवीन वावू से कहा, "वसाई टुडु के आंदोलन वाले गाँवों में तो आप लोगों ने उस आदमी को दौरा नहीं करने दिया है। फिर उसे दूसरे गाँव क्यों दिखा रहे हैं?"

"पता नहीं है इन्द्र, मुझे कुछ पता नहीं।"

"कौन है यह आदमी? पीर या पैग़म्वर?"

"पता नहीं।"

"अचानक मेरी गरदन पर यह चोट क्यों? मैं क्या सारे गाँवों को जानता हूँ? जिन लोगों को पता है वे वहाँ क्यों नहीं भेजे जाते?"

"पता नहीं। शायद गोरा जाये।"

"गोरा बाबू? सदर छोड़कर?"

गोरा ने कहा, "जरूर जाऊँगा। तुम मेरे नीचे हो। अभी भी कम जानकारी है तुम्हारी। मेरे साथ घूमने पर तुम कुछ सीखोगे भी। खेती-बाड़ी चल रही है, वरना बेटेराम को उनका उत्सव दिखा देता।"

द्वैपायन कहने लगा, "उत्सव मैंने बहुत-से देखे हैं। उत्सवों में नाच-गाना अब पहले जैसा जमता नहीं है।"

गोरा बोला, "वैसा नाच अब कहीं नहीं होता। क्यों नहीं होता, इसका किसी को नहीं पता। सब दूसरी तरह के होते जा रहे हैं न।"

इन्द्र शरारत से बोला, "शायद खाना नहीं मिलता, इसलिए।"

गोरा ने जवाब दिया, "तुम ठीक कह रहे हो।"

द्वैपायन ने एक छोटा भाषण ही दे मारा। "खाना मिले या न मिले, नाच के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। संथाल और दूसरे आदिवासी लोग जिन्दगी की खुशी से नाचते हैं। जिन्दगी की खुशी एक ऐसी चीज है, जिसके साथ भूख का कोई संबंध नहीं है।"

गोरा मूर्खानन्द है। उसने चिढ़कर कहा, "अच्छा! पेट के भात के साथ उसका कोई संबंध नहीं है?"

"नहीं। यह सब बातें विदेशी विशेषज्ञों को ही पता है।"

"खाना न जुटने पर भी 'बाबू आये हैं जी' कहकर नाचना होगा?"

द्वैपायन अवज्ञा की हँसी हँसकर चुप हो गया।

"भूख के कारण नष्ट नहीं हो रहे हैं, अच्छी बात है! फिर उन लोगों की जिन्दगी की खुशी किसलिए नष्ट हो रही है?"

द्वैपायन पेचीदा, लेकिन परम धैर्य की हँसी हँसा। अपने भाषण का दूसरा दौर। "उन लोगों में राजनीतिक चेतना जगाना, उनमें गैर-आदिवासी शिक्षा-व्यवस्था चालू करना जैसी बातें ठीक नहीं हैं। उसमें उनका मौलिक आदिवासीपन नष्ट हो जाता है। उनके लिबास में, बातचीत में

फ़र्क आ जाता है।"

गोरा और भी जल-भुन गया। वह जीप की सीट पर लपककर बैठने के बाद बोला, "यह कैसी बात हुई?"

"बहुत अधिक राजनीतिक चेतना के कारण ही पृथकतावाद आ रहा है। बिलकुल साफ़ दिखायी पड़ रहा है यह सब-कुछ।"

इन्द्र खुराफ़ात के मूड में कहने लगा, "लिबास और बातचीत नहीं बदलेगी? लिखाई-पढ़ाई सीखने पर, काम-धाम करने पर उस दुनिया का कोई असर नहीं पड़ेगा?"

द्वैपायन लगभग दहाड़-सा पड़ा, "नहीं, नहीं। वैसे आदिवासी कृत्रिम-कृत्रिम नज़र आयेंगे।"

इन्द्र ने तर्क दिया, "आप शोध के लिए जीप में चढ़कर गाँवों में पहुँचे तो इसी उम्मीद में वे लिखाई-पढ़ाई और काम-धाम छोड़कर छोटी-छोटी धोतियाँ पहने नाचती रहें...ऐसा भला क्यों है?"

"क्यों नहीं!" द्वैपायन ने नासमझी को समझ देते हुए कहा, "वे लोग खुद ही समझेंगे कि उनका सही रूप वही है।"

"किसने कहा है यह आपसे? कौन-से भगवान ने कहा है?"

"बहुत, बहुत लोगों ने कहा है। इसी को लेकर कम काम हो रहा है भला?"

"राजनीतिक चेतना की बातें बहुत करते हैं।" गोरा फिर तमतमा गया, "जानते हैं, उन लोगों ने हूल किया था? क्यों, नहीं किया था क्या? उसी को लेकर यह फ़ंक्शन भी होगा। उसे देखियेगा।"

"दूसरे लोग के सिखाने पर वे लोग हूल जैसी लड़ाई करेंगे। अपूर्व! तीर और धनुष! लाल कँकरीले मैदान में काले लोगों की भीड़। मगर यह लड़ाई ग़लत है, यह भी समझेंगे वह। क्योंकि बन्दूक के सामने तीर-कमान डट सकती है क्या? उन्हें खुद पता चल जायेगा।"

गोरा थोड़ा नासमझ और सीधा है, इसलिए बोल उठा, "खाक समझा है। बसाई टुडु के बारे में कुछ नहीं पता है न? कई साल तक सरकार को थर्रा दिया था उसने।"

"कोई फ़ायदा हुआ है उससे?"

इन्द्र ने गोरा का हाथ दबाया। गोरा कहने लगा, "नहीं-नहीं, लाभ क्या होगा ? हिंसा कोई अच्छी बात नहीं है। यही हम उन्हें सिखा रहे हैं।"

"बसाई टूडू के बारे में मैं खूब जानता हूँ।"

"छोड़िये।"

गोरा बेचैनी के साथ चुप था। धाकुली पीछे छूट गया था। मूड़ा गाँव पास आ रहा था। गोरा कहने लगा, "इस जगह पर डाकबँगला होगा, कभी नहीं सोचा था। सब-कुछ उस बसाई की लड़ाई के बाद से ही हुआ। धत्त ! फिर वही बसाई ज़बान पर आ गया।"

निहायत ही छोटा डाकबँगला। दो कमरे हैं। दोनों बाजू बाथरूम हैं। बँगला कँटीले तारों की बाड़ से घिरा हुआ है। भीतर खेत में कोहड़ा, मिर्च, तरोई। बँगले से जुड़े एक कमरे में चौकीदार के रहने की व्यवस्था है। गोरा ने पहले से ही सब-कुछ व्यवस्था कर रखी थी। गाँव के प्राथमिक स्कूल के शिक्षक, ताम्रगुड़ के व्यापारी तथा किरानी की दुकान के मालिक शशी हाजरा बरामदे में बैठे थे। गोरा को देखकर उसने कहा, "चाय यहाँ बनेगी। भात मैं भेज दूँगा।"

"क्या है खाने में ? मछली या मुर्गी ?"

"अरे, आप क्या कहते हैं ! पूरा एक बकरा काटा है। लीजिये, कमरा साफ करा दिया है। टार्च है न ? बहुत साँप निकल रहे हैं।"

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"ज़रा नाश्ता-वाश्ता देखूँ। यह जामुना तो है नहीं। यहाँ कुछ भी नहीं मिलता। सड़क पक्की होने पर.. ।"

द्वैपायन बोला, "सड़क पक्की होने पर गाँव की चीज़ें बाहर नहीं चली जायेंगी ?"

"देर है, सर ! डाइन के हाथ में बच्चा—चूड़ामणि की देखरेख में सड़क बनेगी ! मुरम्मी डालकर कुटवायेगा...फिर इस पर भी कितने नखरे !"

"संथाल, यानी माझीपाड़े में ले जाना है इन्हें। कल ही। अभी तो तुम्हारे छात्र सेतों में उतरे हुए हैं।"

माझीपाड़ा ! इन लोगों के लड़के कितने आगे आ रहे हैं अब ! सेजुर-

हाटा का पवन किसकू वड़ों को पढ़ना सिखा रहा है। बुरी तरह पिल पड़े हैं। घर पर धान है, पन्द्रह वीघे में अच्छी खेती है, पानी की तकलीफ़ नहीं है। अब इसे लेकर ही जुट गये हैं।"

गोरा हँसा और वोला, "पवन किसकू काली-दा के अखबार का संवाद-दाता रहा है। मगर हाँ, संथाल-प्रधान गाँव होने के कारण पंचायत का सिरमौर वही बना है, और काम भी कर रहा है।"

शशी हाजरा ने जल-भुनकर कहा, "उसकी वजह से हम लोग परेशान हैं। वह खुद लड़कों को लेकर आन्दोलन करता है और खेत-मजदूरी की दर सात रुपये से भी ऊपर चढ़ा दी है उसने। सात रुपये दूँ और साथ ही फरई-प्याज भी—इतना हमसे नहीं होता।"

"अच्छा?"

"पुलिस-चौकी में जाकर झगड़ा कर आया हूँ।"

"क्यों?"

"रानी मेझेन से किसी पुलिस वाले ने छेड़छाड़ की थी।"

"पुलिस वाले साले बड़े खच्चड़ हैं।"

"वाप रे, पवन की वे लम्बी-चौड़ी वातें! सुना है, लड़कियों के साथ वदमाशी करने पर आग लगा दी जायेगी। एक वात खूब सुन रहा हूँ, लेकिन समझ नहीं आ रही।"

"क्या?"

"वसाई टुडु लौट आयेगा, पहले गोरा को भेजेगा।"

"नहीं-नहीं, फ़ालतू अफ़वाह है।"

"अफ़वाह हो तो भी अच्छी लगती है।"

द्वैपायन ने अचानक कहा, "वसाई टुडु? गिरा?"

शशी हाजरा वोला, "मैं चलूँ, भैया?"

शशी के घर से परांठे और तिल की पट्टी आयी। द्वैपायन स्वचालित व्यक्ति हैं। उसने अपने घर को अच्छी तरह सजा-सँवार रखा है। मसहरी टँगी है। कछुआ धूप जल रही है। गोरा और इन्द्र के लिए शशी के घर से मसहरी, तकिया, गद्दा और चद्दर आ गये। गोरा ने वोला, "शशी सवका इंतजाम रखता है।"

शाम को द्वैपायन अपने घर में बैठा हुआ बैटरी से चलने वाले टेप-रिकार्डर की जाँच कर रहा था। इन्द्र टार्च लेकर घूमने निकला। वह थोड़ी देर बाद ही लौट आया था। लौटते वक़्त शशी के बालक-नौकर से भेंट हो गयी। वह कहने लगा, "घर पर चलिए, साहब। रास्ता अच्छा नहीं है।"

"साँप ?"

"हाँ सा'ब। बहुत। दो दिन पानी बरसते ही निकल आये हैं सब। इस बार सभी बहुत भयभीत हैं।"

"साँप तो तुझे भी काटेगा।"

"उनका काटना अपनी क़िस्मत में लिखा है, साहब।"

"तू शशीबाबू का नौकर है ?"

"बारहमासिया हूँ, हुज़ूर।"

"स्कूल नहीं जाते ?"

"पहले जाता था।"

"उसके बाद ?"

"बाप मर गया, इसलिए मैं बारहमासिया बना।"

"कहाँ जा रहे हो ?"

"घर !"

"दूर है ?"

"वहाँ।"

"खाना क्या शशीबाबू के घर खाते हो ?"

"हाँ, हाँ। रात होने पर घर जाता हूँ।"

इन्द्र को पहुँचाकर लड़का चला जाता है। अँधेरे में ही निकल जाता है। इनका विश्वास है कि 'नर और नाग का वास' हमेशा से धरती पर है। साँप काटने पर कहते हैं, 'साँप का लिखा और बाघ का दिखा' टल नहीं सकता। विज्ञानोन्मुख आधुनिक जिन्दगी और खुशहाली, धीरे-धीरे इस नियतिवाद को काटेगी। हाथ में जलती टार्च रहेगी और पाँव में रहेगा जूता। सर्प-चिकित्सा की व्यवस्था भी करीब ही होगी। देहाती जीवन के हर कोष में कैंसर का संक्रमण। बारह महीने लगातार शशी-बाबुओं के

अमन्तान्त को

दिन-रात गुलाम बने रहते हैं लड़कों के पिता। मर जाने पर लड़के
छोड़कर उन्हीं के यहाँ बारहमासिया बन जाते हैं। 'बॉन्डिड लेबर सि
(एबोलिशन) आर्डिनेन्स 1975' द्वारा कृषि और ऋण दास प्रथ
पाबन्दी लगायी जा सकती है। उस क़ानून में बँधुआ मजदूरों के राज्य
नामों में 'बारहमासिया' नाम छोड़ा जा सकता है। उनके रक्षक
नीतिक दलों का कुछ आता-जाता नहीं है। पश्चिमी बंगाल सरकार सं
का ध्यान रखते हुए प्रगति के मार्ग पर अनेक खतरनाक रोगों
बँधुआ मजदूर के कैंसर को लेकर आगे बढ़ रही है। 'ज़िलावार्ता'
में काली साँतरा ने बारहमासिया प्रथा की ज़िलेवार आँकड़ों
प्रकाशित की थी। पार्टी का अधपगला निःसंग इंसान!
लापता है—अभी पता नहीं, लेकिन वह तसवीर अभी भी
पर टंगी है। तुम क्या महज़ वह तसवीर थे जो थाने की
है?

"किसने कहा, नहीं जाऊँगा ?"

"जायेंगे ?"

"जहां जाना जरूरी होगा, जाऊँगा।"

"किस सिलसिले में जा रहे हैं ?"

"संथाल समाज की नयी समीक्षा करने के लिए।"

"समीक्षा ! देखिये, मैं काम करने वाला लड़का हूँ, यह सब शोध-वोध नहीं समझता और समझना भी नहीं चाहता। वे कोई चार सौ बीस तो हैं नहीं। फिर यह तो बताइये कि अन्त में आलतू-फालतू तो नहीं लिख मारेंगे ?"

"नहीं, सच बात ही लिखूँगा।"

"क्या लिखियेगा ? बताइये न हमें। मैं तो नासमझ आदमी हूँ। उनके बीच मुझे काम करना है। काम खत्म करके आप चले जायेंगे। आपसे न सीखने पर मैं फिर काम कैसे करूँगा ?"

द्वैपायन भूरी आँखों से देखता है। कहने लगा, "बताऊँगा।"

गहरी नाराजगी से इन्द्र ने द्वैपायन की नाइलान की मसहरी तथा दूसरा विदेशी साजोसामान देखा। नरम, कीमती, सिल्क नाइलान से बना स्लीपिंग बैग। भीतर किस चीज की पैडिंग है ? कैमरा, टेपरिकार्डर, नाइलान का पाजामा। इस आदमी को धान-रोपाई के काम में लगा दिया जाये तो कैसा रहे ?

शशी और गोरा लौट गये। बड़े गमछे में बँधी देगची है। मांस की खुशबू। शशी ने कहा, "चौकीदार आकर पानी देगा, मैं जा रहा हूँ।"

मिर्चीदार मांस, बहुत ही मीठा चावल, इमली की मलाईदार चटनी, भुना हुआ बैंगन। इन्द्र ने जम कर खाया और फ़र्श पर दरी बिछा मसहरी ओढ़कर लेट गया। फिर सो भी गया।

सूड़ा के मांझीपाड़े के लोगों को जुटाने-जुटाते दूसरे दिन शाम हो गयी। दिन में सभी धान-रोपाई करने में, सड़क काटने वाली मिट्टी हटाने में व्यस्त रहे। शशी के स्कूल में हैजक झूलता है, कई कुर्सियाँ हैं। सामने कई अभिव्यक्तिहीन नीरव, काले-काले चेहरे। द्वैपायन बोला, "इस तरह भला कोई बात होती है ? किसी एक आदमी को बुलाइये।"

माधव उठ आया। माधव हाँसदा। उसे देखते हुए पता चल गया कि वह पहले भी सामने आया है, उसने पहले भी बातें की हैं। द्वैपायन ने टेप-रिकार्डर चालू करके बात शुरू की।

"गाँव में कितने जने हैं? कितने पढ़े-लिखे हैं? लिखाई-पढ़ाई का क्या उद्देश्य है? क्या लड़कियाँ भी लिखती-पढ़ती हैं?"

माधव अपनी औक़ात के मुताबिक़ जवाब देता है। बेझिझक। कोई हिचक नहीं।

"अपने हक़ के लिए वे लोग क्या करते हैं? लड़ाई करते हैं क्या?"

"यह बात पवन किसकू बता सकते हैं।"

"यहाँ नक्सल आन्दोलन चला था क्या?"

माधव को पता नहीं है।

"तुम लोग तो उस आन्दोलन में नहीं गये। मेरे पास समाचार है। क्यों नहीं गये? क्यों?"

माधव ने बहुत ही चकित और सतर्क दृष्टि से उस तरफ़ देखा। कोई बात नहीं की। उसकी आँखें घूमीं। वह समझने की कोशिश कर रहा है।

"बसाई टुडु के आन्दोलन में भी नहीं गये थे। क्यों?"

माधव ने हाथ उठाया। भूखे खेत-मजदूर के लिहाज से अधिक गुस्से-भरी आवाज में शशी से कहने लगे, "पिछली बार जिस आदमी को लाये थे, उससे पूछा था कि तुम लोग बसाई के साथ क्यों गये थे? नक्सली आन्दोलन क्यों शुरू किया था? लेकिन यह बाबू साहब पूछते हैं कि तुम लोग नक्सली क्यों नहीं बने? बसाई के साथ क्यों नहीं गये? ऐसी बातें आप लोग क्यों पूछ रहे हो? जाओ-जाओ, फ़ालतू बात का जवाब नहीं है।"

शशी ने कहा, "अरे, यह तो सिर्फ़ पूछ रहे हैं।"

माधव ने कहा, "हैजक जलाकर और कुर्सी लगाकर बैठे-बैठे ऐसी बातें पूछने से कोई लाभ नहीं, बाबू। हम लोगों को कुछ नहीं कहना। शशी-बाबू समिति के सिरमौर हैं। हम लोगों को आधा मजदूरी देने में काँखने लगते हैं, उनसे पूछकर तो देखिये। बोलिये शशीबाबू, आप ही बोलिये।"

फिर माधव कहने लगा, "चलो उठो, घर चलें सब।"

वे लोग चले गये। द्वैपायन बोला, "क्या हुआ? कुछ समझ नहीं आ

रहा ! इन लोगों ने तो कोई आन्दोलन नहीं किया।"

शशी कहने लगा, "टुडु का नाम ले बैठे। वैसे ही वे हम लोगों में से किसी पर भी विश्वास नहीं करते !"

"पवन किसकू खेजुरहाटा में है ?"

"हाँ। चलिये, वापिस चलें।"

"वहीं चलिये कल।"

दूसरे दिन वे लोग खेजुरहाटा रवाना हो गये और खेजुरहाटा पहुँचाकर गोरा ने इन्द्र से कहा, "मैं जीप लेकर जामुना जा रहा हूँ। भुईयाँ की जीप है, उसका ड्राइवर ले जायेगा फिर।"

"क्यों ?"

"इन्द्र ! मैं क्या करूँ उसके साथ घूमकर ? कहाँ से क्या करने आया है, किसे पता ? सदर में मुझे भी काम है।"

द्वैपायन बोला, "जीप नहीं चाहिए।"

"नहीं चाहिए ?"

"नहीं।"

"लौटिएगा कैसे ?"

"मुझे पैदल या बैलगाडी में चलने की आदत है।"

"ठीक है। चलिए, मिला दूँ।"

"कहाँ ? किससे ?"

"समिति के दफ़्तर में। बैरागी सरदार के घर पर ही दफ्तर है, वही मन्त्री है। पर बैरागी मिले तब न ? धान-रोपाई के वक्त वह आदमी गाँव में थोड़े ही रहता है।"

कच्चे मकान के एक ओर बैरागी का घर, बाड़े की दीवार की दूसरी ओर समिति का दफ्तर। उनके आने का समाचार पहले से आया हुआ था। तारीख़ नहीं दी गयी थी। बैरागी के लड़के ने समिति का घर खोल दिया तथा वहाँ बँधे बकरे को लेकर चला गया। फर्श पर चटाई। कोने में कागज-पत्तर रखने की जगह। इन्द्र और द्वैपायन ने चटाई पर अपना सामान रख दिया। बैरागी की जोरू सिर पर लकड़ी का बोझा लिये घर के भीतर आयी। आँगन में बोझ फेंका और उन्हें देखकर बोली, "घर पर

ं है। शायद कहीं गया है।"
इन्द्र ने कहा, "ठीक है, कोई बात नहीं।"
औरत बीमार-सी थी। पतली आवाज़ में बोली, "उधर कुआँ है, पानी है। आप लोग नहाइए। मैं भात चढ़ाती हूँ। चाय बनाऊँ?"
लोग-बाग आते होंगे। चाय के इंतज़ाम से ही पता चलता है। गुड़ की चाय, उसमें आदी का रस या दूध नहीं है। इन्द्र ने रसोई के लिए पानी खींच दिया। कुछ लकड़ियाँ चीर दीं। औरत ने बेहिचक मदद ली। बाद में बोली, "भात और पोस्ता। और कुछ नहीं है।"
"इतना ही बहुत है।"
"लोग कितना देना चाहते हैं, लेकिन वह कुछ नहीं लेता।"
बैरागी शाम को आ गया। द्वैपायन को देख वह घबरा गया। इन्द्र से कहने लगा, "पवन का कमरा है उधर। इसी साल नया खड़ा किया है। आप लोग वहाँ चलिए।"
"नहीं। यहीं ठीक है।

लिए पगार, हेले और टँमना या दाँड़ास साँप की सम्भावना। गाँव में घनिष्ठ परिचय से उसे या गाँव को मदद मिली हो, ऐसा नहीं लगा। इन्द्र खुश होता हुआ कहने लगा, "जीप अब नहीं आयेगी। कीचड़, कंकड़, मिट्टी में गिरते-पड़ते पैदल चलना पड़ेगा। अब वाकई गाँव से आपका परिचय होगा।"

उसके बाद इन्द्र ने कहा, "बोलिये तो किसलिए आये हैं आप ?"

"बताऊँगा, बताऊँगा।"

शाम को पवन के घर। पवन किसान। अपनी जाति के मुकाबले में धनी। पन्द्रह बीघे जमीन का मालिक। देखकर पता चलता है कि उसका असर-रसूख है। साफ चमकते आँगन में भुसरवाडा। गाय का थान। चबूतरे पर ब्लैक-बोर्ड, आले में पतली-पतली किताबें। ठीक शाम के लगभग पवन की जोरू, माँ, लड़की नहर से मछली पकड़कर लौटती है। पवन किसी राजनीतिक पार्टी में नहीं है।

इन्द्र का नाम सुनते ही पवन उसे पहचान गया। कहने लगा, "चूड़ामणि के साथ झगड़ा करोगे। वह भी खाली हाथ ? पुलिस और उसमें नक्सली आन्दोलन के समय से पति-पत्नी का रिश्ता बन गया है। उन लोगों ने एक बन्दूक छीन ली थी, अब उसकी तीन बन्दूकें हैं, दनादन चलाते हैं। यह बाबू कौन है ?"

"इन्हीं के लिए आया हूँ।"

"किताब लिखेंगे ?"

ईपायन ने कहा, "नहीं, नहीं।" फिर चारों ओर देखकर बोला, "तुम लिखाई-पढ़ाई सिखा रहे हो, लेकिन किन लोगों को ?"

"जो आता है, उसे ही।"

"कोई सरकारी प्रोग्राम है क्या ?"

"नहीं।"

"फिर ?"

"पढ़ना-लिखना सीखें, यही उद्देश्य है। किताबें पढ़कर बातें जानें। यह लोग कुछ नहीं जानते। इसी कारण मारे जाते हैं।"

"जान जाने पर ?"

"हम लोगों का हक़ क्या है, इतना ही जान जायें। सरकार जो दे रही है, यह तो इतना नहीं भी जानते। नक्सली आन्दोलन चला, फिर बसाई ने लड़ाई चलायी। क़ानूनगो को पकड़ कर परताप कूड़ा की बेनाम, खास ज़मीन निकाली। सभी को कुछ-न-कुछ मिला। मेरे घर पर तेरह लोग हैं, कुल मिला कर पन्द्रह बीघा ज़मीन है। दो साल तक किसी ने कुछ ध्यान नहीं दिया। ज़बरदस्ती परताप का आदमी ज़मीन छीन ले रहा है, मेरी ज़मीन ? नहीं। क़ानून भी जानता हूँ, लड़ाई लड़ना भी।"

"हक़ के लिए लड़ते हो ?"

"न लड़ें तो सारी छीन लें। ये सारी ज़मीन संथालों के जंगल से हासिल की गयी है। कहाँ गयी वह सारी ज़मीन ? लड़ाई न करने से ही तो गयी है। इसीलिए लड़ाई लड़ता हूँ। हक़ चाहिए।"

"तुम तो मजे में हो !"

"वह तो हूँ।"

"अपने समाज के और लोगों से बेहतर हो।"

"कहते जाओ, बाबू।"

"पिछले दस साल में तुम लोग किसी आन्दोलन में नहीं जुटे हो। ऐसा क्यों, बता सकते हो ? क्या लगता है तुम्हें ?"

"सारी बातों का जवाब दूंगा। और कुछ पूछना है वह भी पूछो।"

"तुम्हारे समाज के बहुत कम लोग ही आंदोलन में उतरे हैं। अधिक लोग नहीं उतरे। जिन्होंने पढ़ाई-लिखाई की, सीखा है वही लोग समाज से दूर हटते जा रहे हैं। वे कोई भी आंदोलन नहीं चाहते ? तो फिर किस रास्ते से तुम लोगों को हक़ मिलेगा, बताओ ?"

"क्या कहूँ ? कौन-सी बातें कहूँ ?"

"तुम्हें देखकर ही पता चल जाता है। यहाँ तक कि संथाल-नेता बसाई टुडु के आंदोलन का कोई असर तुम्हारे समाज पर नहीं पड़ा। यानी तुम लोगों के समाज पर। ठीक कह रहा हूँ न ?"

"जो नाम बार-बार ले रहे हो, वह नाम इतनी आसानी से नहीं मिटने का, जानते हो ? कौन हो तुम ? आँखों पर चश्मा। हाथ में मशीन। आकर तुम लोग फटाफट उसका नाम पूछते हो, क्यों ? नहीं, नहीं, कोई बात नहीं

बनाऊँगा। उस समय नक्सली आंदोलन चल रहा था। टुडू ने हम सभी को पुकारा था। उस समय भी एक बाबू आया था। भोली शकल बनाकर बातें पूछता था और पुलिस को राय देता था।"

"अरे, मैं पुलिस का आदमी नहीं हूँ।"

"नहीं, नहीं, नहीं।" पवन ने सिर हिलाया। कहने लगा, "अभी कह रहे थे कि मैं बाकी समाज से बेहतर हूँ! ऐसा क्यों कहा? मेरे साथ सभी को जमीन मिली थी। डर से और मार से सबने छोड़ दी। अपनी जमीन का कब्जा लूँगा। जब तक वह काम नहीं होता, धाँय गुर्दे में बची अपनी जमीन की फसल को धर्मगोला बनाकर रख रखा है। उस बाबू को पता है कि गोरेत फसल इसी तरह रखता है। हम लोग दूसरी तरह रखते हैं। पढ़ा-लिखा सयाना भी समाज की बात सोचता है। अवश्य सोचता है। लड़ाई में शामिल? कौन नहीं हुआ? किसने मार नहीं खायी? किस हिसाब से बातें कर रहे हो तुम?"

"मगर...?"

"मैं भी नौ दर्जे तक पढ़ा हूँ, तुम लोगों के स्कूल में। बहुत मार खायी है। अब सब-कुछ समझता हूँ।"

द्वैपायन लाचार होकर लौट आया था। उस रात ही अपमानित, अस्वीकृत द्वैपायन ने इन्द्र को अपनी शोध का विषय बनाया। और कोई समय होता तो शायद नहीं बनाता। मगर पहले माधव और बाद में पवन से अपमानित होने का अनुभव उसकी जिंदगी का पहला अनुभव था। बहुत दिन पहले वह विश्वविद्यालय के जमाने में संथालों के गुप्त जीवन पर शोध के सिलसिले में संथालों की एक शादी में गया था। जब काले इंसान नाच-गानों में डूब गये थे तभी एक बूढ़े ने कहा था, "जोतदार का सिर काटकर आया हूँ, इसलिए नाच-गाने में रौनक बढ़ी है।" यह सुनकर वह बहुत डर गया था, भीषण भय। आतंक उपजता है संथालों के बारे में सोचते हुए। इनका चेहरा देखकर कुछ समझ में नहीं आता। बहुत डर पैदा होता है।

यह डर, यह अविश्वास उसके भीतर घर कर गया है।

और द्वैपायन एक अरसे से लोगों के, आम लोगों के सम्पर्क में नहीं

आया। सामन्त, गोरा या इन्द्र —इनसे मिलकर भी उसे बेचैनी होती है। माधव, पवन, मतुआ लड़का—धरती की इन प्रत्यक्ष सन्तानों के साहचर्य में वह बहुत ज्यादा बेचैन हो जाता है।

द्वैपायन अपने ही जैसे नक़ली इंसानों के साथ मिलता है। वहाँ, जहाँ वह लम्बे अरसे से सुनता आ रहा है कि वह असामान्य विद्वान है, विशाल अध्ययन है उसका, उस दुनिया में उसे आदर और सम्मान मिला है, श्रद्धा, सम्मान, प्रशंसा पाने की उसकी आदत पड़ गयी है। इन्हीं बातों के कारण उसकी आस्था जग गयी है अपने-आप पर।

पहले माधव, उसके बाद पवन ने अपने गुस्सैल, काले पंजे से उसके आत्मविश्वास का नक़ली आवरण, असत्य की केंचुली उतार फेंकी है। ख़ारिज कर दिया उसे। और चूंकि द्वैपायन चूता हुआ घड़ा है, उसका सारा पांडित्य या व्यक्तित्व उधार लिया हुआ है, अपना कहने के नाम पर उसके पास कुछ नहीं है—इसीलिए वह बहुत ही कमजोर हो गया है। उसका आत्मविश्वास डिग गया है। अगर मन की ऐसी हालत होती तो वह इन्द्र से ये बातें नहीं कहता।

मन की यह हालत होने के बावजूद पहले वह यह बातें किसी से कह नहीं पाया। वैरागी के घर लौटकर धुंआती लालटेन की रोशनी में चटाई देख उसने साँस छोड़ी थी। उसके बाद कहा था, "थोड़ी ह्विस्की पीओगे?"

"नहीं।"

"मैं पीऊँगा।"

"पीजिये।"

"गिलास?"

"इन लोगों के गिलास पानी पीने के लिए होते हैं। अपने फ्लास्क के गिलास में पीजिये न?"

"उसी में पी लूँगा।"

"नीट पीजियेगा?"

"पानी मिलेगा?"

"यहाँ आकर क्या पानी नहीं मिला? आप भी एक चीज़ हैं! गाँव-

देहात में जाने का शौक क्यों चर्राया है आपको ?"

"मैं कुछ नहीं जाऊँगा।"

"उन्हें यह बात बता आऊँ।"

वैरागी को बहुत ताज्जुब नहीं हुआ। धीमी आवाज में उसने इन्द्र से कहा, "उनको दिक्कत हो रही है, क्या करूँ, बताओ तो ?"

"कुछ मत कीजिये।"

"कई सैंठा मछली मिली हैं।"

"हम लोग ही खायेंगे। जरा पानी चाहिए।"

"पानी पीओगे ?"

"नहीं, वे शराब पीयेंगे।"

"शराब...पानी ...।"

"आप परेशान मत होइये, वैरागी-दा। मैं जो हूँ।"

इन्द्र पानी ले गया। द्वैपायन ने अपना बिस्तर बिछा लिया। इन्द्र ने पानी दिया। उसका बदन गुस्से से खौलने लगा। फिर भी यह चाह रहा है कि वह शराब पीये। शराब पीने पर असली राज खुलेगा। यह पुलिसिया नहीं है। कोई फूट-परस्त दलाल है। असलियत का पता लगना चाहिए। उसके बाद व्यवस्था की जायेगी। सामन्त ने इस व्यक्ति को इन्द्र की गरदन पर क्यों लादा ? इसे लेकर इन्द्र घूम रहा है। यह यहाँ क्या करने आया है ? शायद सिंहासन ही किसी गुप्त काम पर है। क्या काम हो सकता है ?

द्वैपायन ने एक चपटी बोतल निकाली और खोली। सुदूर अतीत में दिल्ली के किसी शीशे ढँके निःशब्द कमरे में शानि वज्रपाणि ने बोतल देते हुए कहा था, "विद माइ विशेज।"

असहनीय, असहनीय है इस किसान कार्यकर्ता का गरीब कमरा, मलिन चटाई, बाड़े की दीवार पर बगला कैलेंडर। द्वैपायन कब शानि के शीत-ताप-नियन्त्रित मकान में जायेगा ? कब वह फिर से वेनजीट का बनाया हुआ क्रुद्ध बैलों की जोड़ी का चित्र देखेगा ? चमड़े के कुशनों पर बदन ढीला छोड़कर स्कॉच की चुस्की लगायेगा, बीच-बीच में उठा लेगा रोस्ट किये हुए चीकन के मांस के टुकड़े। शानि के घर में आदिवासी डिनर के वक्त शीशे की दीवार के उस पार हजारों वाट के बल्बों की रोशनी में

नई दिल्ली कौतुक से हँसती है। घर पर द्वैपायन परिवार वाइसन के सींग के खोल में छाड़ भरकर पीते हैं। बाँस की चोंग में जंगली सुअर का मांस भरकर, चोंड पर मिट्टी पोतकर, लकड़ी के कोयले के चूल्हे में रखकर उसे पकाया गया था। एक बार कच्चे शाल की खाल में भरकर मांस रोस्ट किया गया था। सानि के घर पर 'आदिवासी शाम को आयें' का निमंत्रण एक असामान्य घटना होती है। वहाँ द्वैपायन कब जायेगा?

ह्विस्की पीने के बाद ही कहीं द्वैपायन इन्द्र से बोल सका, "मैं प्रमाणित कर दूँगा कि संथाल लोग क़तई लड़ाकू नहीं हैं। रामझे छोकरे, संथालों को बहुत आसानी से लालच देकर फुसलाया जा सकता है, बदला जा सकता है। उसके लिए...।"

इन्द्र चुपचाप सुनता रहा। सुनते-सुनते सारी बातें जैसे साफ़ होने लगीं। उसने सिर्फ़ एक बार धीरे से कहा, "सामन्त-दा ने यह बातें सुनी थीं?"

"बेशक।"

"फिर से कहिये!"

"सामन्त को सब-कुछ पता था। जान-बूझकर ही उसने इन्द्र को भेजा था।" बहुत देर बाद इन्द्र ने कहा, "चरसा जाऊँगा।"

"क्यों?"

"एक ज़माने में बहुत लड़ा था।"

"हाँ। ठीक कह रहे हो।"

"संथालों को आपने ठीक ही पहचाना है?"

"तुम समझ नहीं पा रहे हो। आदिवासी समाज की आदिम एकता है ही बहुत खतरनाक। वे बँटे रहें तो हम बने रहेंगे। वे एकजुट होंगे तो हमारा खात्मा हो जायेगा।"

इन्द्र दूसरे दिन द्वैपायन को चरसा ले गया—हाट जाने वाली बैलगाड़ी में, ईंटों वाली लॉरी में, फिर पैदल। सोरेन का घर। दुमंजिले वाले कमरे में थके-हारे द्वैपायन लुढ़क गये।

इन्द्र सोरेन के साथ निकल गया। बहुत, बहुत देर तक उन लोगों की बातचीत होती रही। उसके बाद सोरेन ने कहा, "मेरे हाथों में छोड़ दो।"

"उसके बाद ?"

"तुम्हें क्या लग रहा है ?"

"मैं जागुला जाऊँगा।"

"क्यों ?"

"सामन्त को जवाब देना पड़ेगा। उसे पता था कि यह आदमी यहाँ किस लिए आया है, क्या प्रमाणित करना चाहता है वह ? बगला अखबार में इस पर लेख निकल सकता है। दो और दो मिलकर चार होते हैं। यही तुम लोगों के मन में है। मुझे भी बेईमान समझते हैं।"

"उसके बाद ?"

"एक दिन तुमने जो कहा था, वही करूँगा।"

"क्या ?"

"तुम्हारा रास्ता अलग, मेरा रास्ता अलग। कहाँ से अलग है, वह तो मैं जानता हूँ और तुम भी। फिर यह बात इतने दिनों से सुन रहा हूँ। शायद यह मामला जबरदस्ती अलग किया गया है। अब हम लोगों को देखना पड़ेगा, खोजना होगा कि हम लोग कहाँ-कहाँ एक हो सकते हैं, और कहाँ-कहाँ एक है ? शायद हम एक हैं, खुद नहीं जानते। जानना पड़ेगा, सोरेन, जानना पड़ेगा।"

"तो चले जाना फिर !"

"काम करना होगा। कुछ भी नहीं किया गया है।"

"नहीं।"

"सारा काम बाकी है ?"

"हाँ, इन्द्र। मगर...तुम्हारी पार्टी ?"

"सब-कुछ नये सिरे से सोचना पड़ेगा।"

"हाँ।"

बात करते-करते वे लोग नदी के किनारे आ खड़े हुए। इन्द्र ने कहा, "शोषण के सारे पुराने ढाँचे बरकरार रखकर, बाहर से पलस्तर मारने से काम नहीं चलता।"

"तुम समझो और देखो।"

"समझ रहा हूँ, देखूँगा भी।"

"उस बात के बारे में क्या कहोगे ?"

इन्द्र की आँखें धूसर हो गयीं। इन्द्र हलकी हँसी हँसकर बोला, "मैं कहूँगा कि वे जाने कहाँ चले गये हैं, मुझे पता नहीं है। उसके बाद लौटे तो ठीक, नहीं लौटे तो भी ठीक, मेरा क्या जाता है ?"

"नहीं, तुम्हारे-मेरे कुछ करने का नहीं है।"

"चलूं। ऊपर वाला कमरा मुझे भी पसन्द है।"

इन्द्र चला गया, पीछे देखे बग़ैर। निर्णय पर पहुँचने में जो देरी होती है...निर्णय में पहुँचने पर...?

सोरेन लौट आया।

द्वैपायन की नींद शाम को खुली। उसके बाद चाय पीकर वह सोरेन और उद्धव के साथ बाहर निकला। नदी पार करके वन-भूमि। सोरेन उसे बसाई टुडु का पाँचवाँ आश्रय, बरगद की गुफ़ा दिखायेगा। सोरेन ने उसकी सारी बातें चुपचाप सुनी हैं। उसके मन में खुशी है।

सोरेन उसे लेकर वन के अन्दर घुसा। बहुत देर चलने के बाद वे लोग एक विशाल बरगद के पास पहुंचे। बरगद की जटाएं ज़मीन पर फैलकर गुफ़ा-सी बन गयी थीं।

"उस ओर क्या है ?"

"नदी का सोता था। अब खड्ड बन गया है।"

"खड्ड ?"

"हाँ, कुएँ जितना गहरा।"

"यहीं क्या वह...?"

"चुप !"

सोरेन ने कान लगाकर जाने क्या सुना। उसके बाद कहा, "उद्धव ! खदान में एक ढेला फेंको।"

उद्धव ने ढेला फेंका।

"बहुत गहरा है।"

"हाँ। चलो !"

"ज़रा बैठो। बहुत पैदल चले हो। इस जगह को देखो। काली बाबू

को यहीं मारा गया था। लाश फेंक दी गयी थी वहीं। उद्धव का दास बेपुर काउरा उसकी हड्डियाँ चद्दर में बाँध रहा था...उसे भी मार दिया।"

"हाँ, उस समय...यानी...।"

मोरेन ने धीरे-धीरे कहा, 'संथाल डरपोक हैं! संथाल कायर हैं! संथालों को आसानी से खरीदा जा सकता है, क्या कहते हो...हाँ?"

"मैं...।"

"बहुत बातें सुनी हैं। बाबा तिलका माझी का नाम सुना है? सिधु-कानु के हूल का पता है? संथालों ने लड़ दिया है। तेभागा आन्दोलन हुआ। संथालों ने सबके साथ लड़ दिया। नक्सली गाँव छोड़कर शहर नहीं गये। पुलिस और मिलिट्री ने संथाल गाँव को जलाकर नष्ट कर दिया। बसाई टुडू ने संथालों को लेकर लड़ाई चलायी थी, वह भी कह गया। अब लिखित प्रमाण रख जाओ कि संथाल लोग हर तरह से डरपोक हैं। अच्छी बात है! मगर क्यों?"

"यही तुम समझने में गलती कर रहे हो...।"

"बाबू! पुलिस-मिलिट्री पहचानी जाती है। वे लोग बन्दूक लेकर आते हैं। मगर आदिवासियों के दोस्त बनकर आये तुम लोग कौन हो? लिखित संथाल और नगे फकीर संथाल में फूट चाहते हो! फूट चाहते हो संथाल और दूसरे आदिवासियों में! इसे प्रमाणित करो डरपोक, इसे प्रमाणित करो वीर! आदिवासियों का और तो सब-कुछ छीन लिया है, अब इस फूट की भी जरूरत पड़ गयी है?"

"नहीं, नहीं, नहीं ..वह नहीं...।"

"बसाई टुडू सिर भेज रहा है, पता है?"

"नहीं, यह क्या कह रहे हो, वह मर गया है।"

"वह कभी नहीं मरता, यह नहीं जानते? आदिवासियों के गले में जब तुम लोगों का फन्दा कसकर बैठता है तो नगे बसाई के, डोम काउरा के गले में से सिर चला जाता है। हाँ! सिर भेजकर वह फिर सबूत देता है, नहीं जानते? नहीं बाबू, उठकर कहाँ जाओगे? चलो, पीछे चलो, चलो! पीछे चलो, मुझे अच्छी तरह देखो! रो क्यों रहे हो? देखो, आँखें खोलकर देखो! बसाई टुडू आ गया है मेरे अन्दर, देखो! कहो!"

और सोरेन चिल्ला उठा सुअर भगाने जैसे भीषण हर्रऽऽऽ गर्जन के साथ और द्वैपायन ने डरकर वहाँ से भागने की कोशिश की। अचानक सब-कुछ धुँधला। चश्मा उतार लिया सोरेन ने। सीने पर हलका-सा धक्का। 'नाऽआँऽआँ' चीत्कार के साथ खदान में लुढ़कते हुए गिरना...नीचे और नीचे...। खदान में सीधे गहरे...अचानक झटके से वह पलट गया है। गिरने पर उठना असंभव है। नीचे पत्थर। कहीं अतल में भारी चीज़ गिरने की आवाज़। दोनों हाथ फैलाकर सोरेन पत्थर की तरह खड़ा रहा, खड़ा रहा। 'यह मैंने क्या किया? क्या किया?' भीतर से जैसे काँप रहा हो। अब वह सम्पूर्ण दूसरा आदमी लग रहा है। दूसरी भूमिका है अब उसकी। दूसरा उत्तरदायित्व है उस भूमिका का। बसाई टुडु का संग्राम जिस प्रतिपक्ष से था, उस दुश्मन को पहचानना आसान था। वह प्रतिपक्ष आज भी है। अब और नये-नये प्रतिपक्ष उभरे हैं, अनेक मोर्चों पर एक साथ संग्राम। संग्राम जारी रखना पड़ता है। संग्राम कभी खत्म नहीं होता। बसाई टुडु की गिरा? पत्तों की मर्मर ध्वनि वही बात ही कहने लगी।

सोरेन ने हाथ नीचे किया। चश्मा खदान में फेंक दिया। उद्धव से कहा, "सामान कल फेंक जाऊँगा।"

"यहाँ नहीं, वहीं उधर।"

वे वन से लौटने लगे। द्वैपायन के लापता होने पर झमेला हो सकता है। उससे बचाव करना है। इन्द्र के लौट आने पर काम का प्रोग्राम बनाना पड़ेगा। अपने लोगों को संगठित करना होगा। सिधु-कानु के हूल का गाना अभी मन के मुताबिक़ नहीं बना है। वे लोग नदी के चर पर उतरे। बालू के बीच से चलते हुए सोरेन ने कहा, "साला खोचर का काम करने आया था!"

बालू के बाद पानी। चेहरा उठाते ही आसमान से सटा चरसा गाँव तैर आया। चलते-चलते सोरेन ने कहा, "तुझे पता नहीं है उद्धव, कि हूल के समय सिधु-कानु के साथ सारे डोम बाउरी छोटी जात के लोग शामिल थे।"